f}rh; v/;k;

^^Mk- d".kejkjh ’kekZ & 0;fäRo

,oa —frRo**

f}rh; v/;k;

^^Mk- d".kejkjh 'kekZ & O;fDrRo ,oa —frRo**

¼v½ O;fäRo %

किसी भी साहित्यकार के कृतित्व का सम्यक् अनुशीलन करने से पहले संबंधित साहित्यकार के व्यक्तित्व की सामान्य जानकारी अत्यन्त आवश्यक होती है। संबंध साहित्यकार का जन्म कहाँ हुआ है, उसका सामाजिक परिवेश, धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, पृष्ठभूमि जाने बिना हम साहित्यकार की मान्यताओं – अवधारणाओं को भली प्रकार से जान नहीं पाते। इसी दृष्टि से डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा के व्यक्तित्व का संक्षिप्त परिचय यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है –

tUe rFkk tUe LFkku

श्री कृष्णमुरारी शर्मा का जन्म मध्यप्रदेश की उत्तरीय सीमा पर स्थित मुरैना नगर में दिनांक 15 नवम्बर सन् 1936 को हुआ था। आपके पिताश्री का नाम था पंडित रामलाल शर्मा। पंडित जी के ज्येष्ठ पुत्र कृष्णमुरारी शर्मा अपने भाई–बहिनों में सबसे बड़े है। आपसे छोटे चार भाई और दो छोटी बहनें हैं। पंडित रामलाल शर्मा का भरा पूरा परिवार मध्यम आय वर्ग का ही कहा जा सकता है। सनाढ्य ब्राह्मण परिवार पूर्णतः धार्मिक, सांस्कृतिक, मान्यताओं का है यद्वपि पंडित रामलाल पूर्णतः आर्य समाजी थे, तथापि आपका यह परिवार पूर्णतः सनातन धर्म में मान्यता रखने वाला है। पंडित जी आर्य समाजी होते हुए भी परिवार की किसी धार्मिक पूजा अनुष्ठान में कभी अपनी ओर से कोई व्यवधान नहीं होने देते थे, किन्तु वे स्वयं उस पूजा–पाठ के विधि–विधानों में कभी भाग नहीं लेते थे। संबंधित पूजा आदि की वे सारी व्यवस्थाएँ स्वयं ही किया करते थे।

श्री कृष्णमुरारी शर्मा के पिताजी मूलतः उत्तर प्रदेश के निवासी थे। जिला एटा की कासगंज तहसील के ग्राम गढ़ी (हाथी शाह) में उनका जन्म हुआ था, उनके पिता श्री पंडित मुरलीधर तथा दो बड़े भ्राताओं का एक ही दिन में निधन हुआ था, उस महामारी में गाँव के बहुत से लोग काल कवलित हुए थे।

इस महाविपत्ति में बचे आपके एक बड़े भाई मुन्शीराम शर्मा और बहन चम्पादेवी आपके माताजी के संरक्षण में गाँव में ही पले–बढ़े। गाँव में पाँचवी कक्षा तक की स्कूली व्यवस्था थी। आपके अग्रज ने तो पाँचवी उत्तीर्ण करके कासगंज, जो गाँव से लगभग 4 कोश की दूरी पर था, नित्य पढ़ने के लिये आ–जा कर मिडिल तक की पढ़ाई पूरी कर ली किन्तु पंडित रामलाल पाँचवी कक्षा के आगे अपनी पढ़ाई जारी नहीं रख पाए। खेती तथा माँ की देख–रेख आपके ही जिम्मे थी, श्री मुन्शीराम अपने एक निकट संबंधी के पास नौकरी खोजने की दृष्टि से मुरैना पहुँचे उन दिनों मुरैना, ग्वालियर रियासत का एक जिला था वहाँ जिले के सूवा (कलेक्टर) तथा तहसीलदार इत्यादि अधिकारियों के कार्यालय थे, श्री मुन्शीराम को रियासती क्लेरिकल परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद शासकीय नौकरी मिल गयी और वे मुरैना में ही व्यवस्थित ढंग से रहने लगे। अपनी एकमात्र बहन का विवाह इस बीच अपने गाँव के निकटवर्ती एक गाँव में संपन्न कर दिया था, इधर भाई के मुरैना में रहने के कारण श्री रामलाल पहलवानी करते–करते कासगंज के कुछ उग्रवादी युवकों से जुड़ गये उनके वे सभी किशोर युवा साथी क्रान्तिकारी विचारों के थे और देश की पराधीनता से दुःखी थे इसी प्रयोजन से ये सारे युवा साथी आस–पास के क्षेत्र में क्रान्ति की अलख जगाने में संलग्न हो गये। बम बनाना सीखने लगे और एक दिन उसका

अचानक विस्फोट हो जाने पर ये सभी लोग पुलिस की नजर में आ गये जब पुलिस रामलाल के पीछे पढ़ी तब ये छिपते–छिपते कैसे भी अपने बड़े भाई के पास मुरैना पहुँच गये बाद में इनकी माताजी भी इनके पास मुरैना में ही रहने लगी थीं गाँव की खेती–बाड़ी की देख–रेख का जिम्मा अपने कुटुम्बी भाईयों को सौंपकर यह परिवार मुरैना का हो गया।

ikfjokfjd i"BHkfe

उन दिनों मुरैना एक छोटा सा ही नगर था। जिसकी जनसंख्या लगभग 30–35 हजार रही होगी, यह नगर ब्रज अँचल में ही गिना जाता था। इसका प्राचीन नाम मयूरवन था, कपास की धुनाई–बुनाई की मशीनें लग गयीं और यह नगर पेचमुरैना के नाम से जाना जाने लगा। इसी नगर में श्री मुन्शीराम एक किराये के मकान में अपनी माता तथा अपने अनुज के साथ रह रहे थे यहीं पर श्री मुन्शीराम तथा आपके अनुज रामलाल का विवाह संपन्न हुआ। मुरैना के निकटवर्ती ग्राम खेरा (फिरोजपुर) के एक कृषक परिवार में दोनों भाईयों की ससुराल थी यह ग्राम लालोर गाँव का ही एक पुरा है, श्री कृष्णमुरारी की माताजी का नाम कमलादेवी था भाई, बहनों में सबसे छोटी होने के कारण उनके लाड–दुलार से घर के लोग उनको ओछीबाई कहते थे, गाँव में उन दिनों कोई पाठशाला नहीं थी, निकट के गाँव लालोर में एक शासकीय प्राथमिक शाला थी, लड़की होने के कारण घर से उन्हें पढ़ने के लिये दूसरे गाँव के स्कूल में पढ़ने नहीं भेजा गया। इसलिये वे अनपढ़ ही रह गयीं, उनमें बचपन से ही कुछ नया सीखने की प्रवृत्ति थी, इसलिये उन्होंने अपने परिवार के कुछ पढ़े–लिखे लोगों से अक्षर ज्ञान और गिनती–पहाड़े सीख लिये थे, शिक्षा के नाम पर उनकी यही

पूँजी थी। इधर श्री रामलाल पारिवारिक दायित्वों की परवाह न करते हुए भी मुरैना में भी छिप–छिप कर क्रान्तिकारी गतिविधियों में व्यस्त रहने लगे मुरैना में अपनी विचारधारा के कुछ युवाओं से श्री रामलाल का जुड़ाव हो गया आपके ऐसे साथियों में श्री मोतीलाल शर्मा, श्री हरिदास राठी, श्री हरिश्चन्द्र चौधरी, श्री प्रयाग नारायण, श्री जोरावर सिंह, इत्यादि के नाम प्रमुख रूप से स्मरणीय हैं।

मुरैना में महादेव नाके पर जिस किराये के मकान में यह परिवार रहता था वहीं एक बार बनाते समय बम फट गया, ईश्वर की कृ पा से कोई जनहानि तो नहीं हुई, किन्तु श्री रामलाल का नाम एक क्रान्तिकारी के रूप में उजागर हो गया। बाद में उन्हें पुलिस द्वारा पकड़ लिया गया, पुलिस द्वारा पकड़े जाने पर इनकी ठुकाई–पिटाई हुई, किन्तु बड़े भाई मुन्शीराम शर्मा के प्रभाव के कारण कोई मुकद्मा कायम नहीं हो सका और इस तरह ये कारागार यातना से बच गये, इनके अग्रज श्री मुन्शीराम कठिन परिश्रम और योग्यता के बल पर मुरैना सूवात में (कलेक्टोरेट) में दफ्तरदार (कार्यालय अधीक्षक) बन चुके थे, श्री रामलाल पुलिस द्वारा कई बार पकड़े तो गये, किन्तु बड़े भाई के सूवा साहब के निकट होने के कारण हर बार जेल जाने से बचते रहे। पंडित जी जालन्धर (पंजाब) के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी श्री मुनिराज ढंढा के गुट में रहकर मुरैना तथा भिण्ड आदि निकटवर्ती क्षेत्रों में गुप्त रूप से क्रान्तिकारी गतिविधियों का संचालन कर रहे थे। उन दिनों संचार के सीमित साधन थे और आवागमन की भी अधिक सुविधाएँ नहीं थीं, इसलिये अलग–अलग क्षेत्रों में अलग–अलग क्रान्तिकारी कार्य कर रहे थे, ऐसे विश्वसनीय कार्यकर्ताओं में इस अंचल में पंडित रामलाल तथा छोटेलाल माथुर प्रमुख थे। पंडित जी अपने दल के लिये धन संग्रह भी

करते थे तथा अपने शीर्ष नेताओं तक उसे गुप्त रूप से पहुँचाने का कार्य भी करते थे। इस बीच इनके एक सहयोगी मुन्शी महादेव प्रसाद पकड़ लिये गये तब उन्होंने पुलिस के दवाब में पंडित जी की सारी गतिविधियों का खुलाशा कर दिया।

पुलिस के पीछे पड़ने पर ये उन दिनों के दुरदान्त दस्यु सरगना डोंगर सिंह तथा बटुरी सिंह के पास कुछ दिनों छिपे रहे उधर मुनिराज ढंढा भी पुलिस द्वारा पकड़ लिये गये, उनके पास उनकी डायरी में पंडित रामलाल का नाम पाया गया। उसी आधार पर दिल्ली पुलिस ने मुरैना में आकर बन्दी बना लिया। इनके साथी छोटेलाल माथुर भी पकड़ लिये गये और उन्हें तत्कालीन एस.पी. अजीजुरहमान तथा सी. आई.डी. के एरिया प्रमुख इनायत अली के सम्मुख प्रस्तुत किया गया। ये अधिकारी इन्हें दिल्ली भेजना चाहते थे, लेकिन मुरैना जिले के तत्कालीन सूवा स्व. सरदार नारोजीराव सीथोले की अनुशंशा पर इन्हें छोड़ दिया गया। पंडित जी के क्रान्तिकारी जीवन से संबंधित उनसे लिया गया एक साक्षात्कार मुरैना क्षेत्र की क्रान्तिकारी गतिविधियों का एक अप्रकाशित पृष्ठ शीर्षक ग्वालियर से प्रकाशित दैनिक भास्कर में आपने दिनांक 13 अप्रैल 1992 के एक अंक में यह संक्षिप्त साक्षात्कार प्रमुखता से प्रकाशित किया है।''[1]

इधर पंडित जी पर पारिवारिक दवाब बढ़ने लगा और उन्हें बार–बार परिवार के बड़ों ने ऐसी गतिविधियों से दूर रहने की सलाह दी, लेकिन पंडित जी के मन में भारत माता को पराधीनता की बेड़ियों से मुक्त देखने की अदम्य लालसा थी। इसलिये वे अपने मिशन से भारत की आजादी का जश्न बनाने तक जुड़े रहे। पारिवारिक दायित्वों

[1] दैनिक भास्कर, ग्वालियर, दिनांक 13 अप्रैल, 1992

के बोझ से वे थोड़ा ढीले तो हो गये पर मार्ग से हटे नहीं। अखबार बेचने का कार्य करने लगे। छोटी–मोटी ठेकेदारी भी शुरु की और इस तरह परिवार के लिये थोड़ा बहुत धनोपार्जन करने लगे, उनके बड़े पुत्र कृष्णमुरारी तथा उनसे छोटे भानु प्रकाश का दायित्व भी परिवार वहन कर रहा था।

ikjfHkd thou ,oa mPp f'k{kk

एक क्रान्तिकारी परिवार में जन्मे कृष्णमुरारी शर्मा का प्रारंभिक जीवन मुरैना में ही बीता। कृष्णमुरारी शर्मा के चार छोटे भाई थे– भानुप्रताप, मदन मोहन, हृदय मोहन तथा सुरेन्द्र कुमार, दो छोटी बहनें सुशीला कुमारी तथा पूर्णिमा भी। भरे–पूरे परिवार का अभिन्न अंग हैं। इन सभी भाई–बहनों की प्रारंभिक शिक्षा मुरैना में ही संपन्न हुई। उन दिनों मुरैना में बहुत सीमित संख्या में ही शासकीय स्कूल थे। प्राइवेट स्कूल शायद थे ही नहीं। मुरैना के गणेशपुरा मौहल्ले में जो शाकसीय प्राथमिक विद्यालय में कृष्णमुरारी शर्मा ने चौथी कक्षा तक प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त की उसके पश्चात् शासकीय हाई स्कूल, मुरैना में अध्ययनरत रहकर आपने सन् 1954 में द्वितीय श्रेणी में हाईस्कूल परीक्षा उत्तीर्ण की। कृष्णमुरारी शर्मा हिंदी, नागरिक शास्त्र, इतिहास, भूगोल इत्यादि विषयों में तो प्रवीण थे, किन्तु गणित में आपकी रुचि बिल्कुल नहीं थी। गणित से आपको पता नहीं क्यों बहुत डर लगता था। गणित की पढ़ाई के लिये आपके ताऊ श्री मुन्शीराम इन्हें पढ़ाते थे। शाला के अन्य शिक्षक भी इन्हें गणित अलग से पढ़ाया करते थे, किन्तु कोई भी शिक्षक गणित के प्रति इनके मन में अभिरुचि जागृत न कर सका। संयोग से नागरिक शास्त्र तथा गणित के सम्मिलित अंकों की कृपा से इन्होंने हाईस्कूल उत्तीर्ण कर लिया।

यदि गणित के अंकों में नागरिक शास्त्र के अंकों को जोड़ा न गया होता तो यह हाई स्कूल भी कदाचित उत्तीर्ण न कर पाते। सन् 1952 में ही मुरैना में सेठ गिरवरलाल–प्यारेलाल ने उच्च शिक्षा के लिये अपनी धर्मशाला एक ट्रस्ट को दान में दे दी। यही इसी धर्मशाला के प्राईवेट इन्टर कॉलेज, जी.पी. कॉलेज, मुरैना खुल गया। हाईस्कूल की शिक्षा के बाद इसी कॉलेज में आपने इण्टर मीडिएट के प्रथम वर्ष में प्रवेश लिया, संबंधित ट्रस्ट के प्रयासों से इस कॉलेज को डिग्री कॉलेज के रूप में समुन्नत कर दिया गया। अतः सन् 1956 में द्वितीय श्रेणी में इण्टरमीडिएट उत्तीर्ण करने के बाद बी.ए. प्रथम वर्ष में आपने प्रवेश लिया। उन दिनों ग्वालियर और मुरैना के सभी कॉलेजों की परीक्षाएँ आगरा विश्वविद्यालय से संचालित होती थीं। बी.ए. का प्रथम वर्ष 1957 में आपने हिंदी साहित्य, अंग्रेजी साहित्य तथा राजनीति शास्त्र विषयों में उत्तीर्ण किया इसी वर्ष विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, की स्थापना हो गयी। अतः बी.ए. फाइनल की उपाधि आपको सन् 1958 में विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन से प्राप्त हुई, कॉलेज–जीवन में कृष्णमुरारी शर्मा की खेलों के अतिरिक्त कॉलेज की अन्य साहित्यिक–सांस्कृतिक गतिविधियों में भी विशेष भागीदारी रहती थी। हॉकी तथा फुटबॉल जैसे खेलों में आपकी विशेष रुचि थी। सन् 1956 में जी.पी. महाविद्यालय, मुरैना में आप हॉकी के कप्तान थे। हॉकी तथा फुटबॉल के खेलों में जिले से बाहर भी। आपने अपने कॉलेज का प्रतिनिधित्व किया और अनेक बार पुरस्कृत भी हुये, इसी प्रकार वाद–विवाद तथा काव्य प्रतियोगिताओं में भी आप अनेक प्रकार पुरस्कृत हुये।

अपने भाई–बहिनों में सबसे बड़े होने के कारण आपके परिजनों ने चाहा की बी.ए. करने के बाद नियमित पढ़ाई जारी न रखने

का आपसे आग्रह किया परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण आपको जीविकोपार्जन के प्रयासों में यहीं से जुट जाना पड़ा। कुछ वर्षों तक शासकीय माध्यमिक मुरैना में सहायक शिक्षक के रूप में आपने सेवाएँ दी तभी सन् 1961 में लोकसेवा आयोग मध्यप्रदेश से मध्यप्रदेश के तत्कालीन सूचना तथा प्रकाशन विभाग में सहायक प्रकाशन अधिकारी के पद पर आपका चयन हो गया, इस पद पर आपकी प्रथम नियुक्ति जिला प्रकाशन कार्यालय, दुर्ग में हुई। अतः शिक्षक पद से त्याग–पत्र देकर आपने मई 1961 में दुर्ग में पदभार गृहण किया वहाँ से सागर, दमोह, रायपुर, इत्यादि कार्यालयों में सेवाएँ देने के बाद भी आपका स्थानान्तरण जबलपुर के क्षेत्रीय कार्यालय में हो गया। जहाँ पहुँच कर आपने मध्यप्रदेश शासन से नियमित विद्यार्थी के रूप में एम.ए. में अध्ययन करने की अनुमति प्राप्ति की शासकीय अनुमति मिलने के बाद भी कृष्णमुरारी शर्मा ने जबलपुर के सुप्रसिद्ध हितकारी महाविद्यालय में सन् 1963–64 के सत्र में एम.ए. हिंदी के प्रथम वर्ष में नियमित छात्र के रूप में प्रवेश लिया। हितकारिणी कॉलेज में एम.ए. की कक्षाएँ प्रातः कालीन थी, अतः प्रातः कॉलेज में अध्ययन करने के बाद अपने कार्यालय में अपने कर्तव्य का निष्पादन करते थे, कार्यालयीन उत्तरदायित्वों का निर्वाह करते हुए श्री कृष्णमुरारी शर्मा ने सन् 1965 में जबलपुर विश्वविद्यालय, जबलपुर से मैरिट में स्थान प्राप्त कर प्रथम श्रेणी में सन् 1965 में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। उन दिनों मेरिट के आधार पर ही छात्र संघ के पदाधिकारी कक्षा प्रतिनिधियों में से मनोनीत किये जाते थे। आप एम.ए. फाइनल के कक्षा प्रतिनिधि होने के नाते छात्र संघ के उपाध्यक्ष इसी वर्ष मनोनीत हुये। यहाँ कॉलेज तथा

विश्वविद्यालय की साहित्यिक सांस्कृतिक गतिविधियों में आपने भाग लेकर अनेक पुरस्कार प्राप्त किये।

श्री कृष्णमुरारी शर्मा जब शासकीय महाविद्यालय, (एम.जे.एस. कॉलेज) भिण्ड के हिंदी विभाग में सेवाएँ दे रहे थे, तभी आपने आगरा, विश्वविद्यालय, आगरा से पी–एच.डी. की उपाधि प्राप्त की थी, शोध कार्य में मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिये आपने डॉ. रामविलास शर्मा, डॉ. टीकम सिंह तोमर, डॉ. किरण कुमारी गुप्त, पं. बनारसी दास चतुर्वेदी, डा. दयाशंकर शर्मा, प्रभृति विद्वानों से मार्गदर्शन प्राप्त किया था। ''डॉ. हरिशंकर शर्मा– व्यक्तित्व एवं कृतित्व का समीक्षात्मक अध्ययन'', विषय पर प्रस्तुत आपके शोध प्रबन्ध की आपके परीक्षकों द्वारा बहुत प्रशंसा की गयी थी। सागर विश्वविद्यालय सागर के तत्कालीन हिंदी विभागाध्यक्ष सुप्रसिद्ध विद्वान ने आपको मौखिक परीक्षा के समय ही डॉ. बन जाने की बधाई दे दी थी।

fo|kFkhZ thou dh fe= ,oa x#tu

विद्यार्थी जीवन में श्री कृष्णमुरारी शर्मा, अपने समय के छात्र नेता थे, खिलाड़ी थे, नाटकों में अभिनय करते थे व कृतत्व एवं वाद–विवाद आदि में भाग लिया करते थे। इसलिये आपके छात्र मित्र भी बहुत थे। मुरैना में आपके बाल सखाओं की संख्या बहुत अधिक थी। उनमें से उन सभी के नाम दिये जाना उपयुक्त नहीं लगता। यहाँ आपके गुरुजनों में पंडित भद्रमुकुंद चक्रवर्ती हिंदी के विद्वान प्राध्यापक थे, प्रो. एस.के. वाग्ची कॉलेज के प्रिन्सिपल भी थे और अंग्रेजी के प्रोफेसर भी थे, प्रो. एम.एम. मेहता राजनीति विज्ञान के प्रोफेसर थे, प्रो. एम.पी. सक्सेना, प्रो. के.व्ही.एल. सक्सेना, इत्यादि सभी प्रोफेसरों का

आपका स्नेह एवं मार्ग दर्शन प्राप्त था। इन सभी ने आपको किसी न किसी रूप में प्रभावित किया। हाईस्कूल के गुरुजनों में कृपाशंकर शर्मा, कृपाचार्य, श्री विनयराम शर्मा, श्री बद्री सिंह इत्यादि शिक्षकों के आप बहुत प्रिय थे आपकी प्रारंभिक कविताओं का पंडित कृपाशंकर शर्मा कृपाचार्य ने अनेक बार संशोधन किया आपसे श्री कृष्णमुरारी शर्मा को बहुत प्रोत्साहन मिला।

श्री कृष्णमुरारी शर्मा हितकारिणी महाविद्यालय, जबलपुर में जब एम.ए. (हिंदी) के नियमित छात्र. थे, तब वहाँ के हिंदी विभागाध्यक्ष, प्राचार्य पंडित बी.पी. वाजपेई, आचार्य हरदोल दुबे, डॉ. पी.सी. श्रीवास्तव, डॉ. विजय शुक्ल आदि आपके गुरुजन थे।

इनके अतिरिक्त विख्यात भाषा शास्त्री डॉ. उदय नारायण तिवारी, धीरेन्द्र वर्मा, डॉ. एम.पी. अग्रवाल जैसे ख्यतिलब्ध विद्वानों के भी आप विशेष रूप से कृपापात्र थे। 'बहुत कुछ सीखा है इनसे' शीर्षक एक संस्मरणात्मक लेख में श्री कृष्णमुरारी शर्मा ने इन सभी का उल्लेख किया है। यह लेख साहित्य अकादमी, भोपाल की मासिक पत्रिका 'साक्षात्कार', मई 2014 तथा भोपाल की ही मासिक पत्रिका 'संकल्प रथ' अगस्त 2014 में प्रकाशित हुआ है।

x'gLFkh thou ,o thfodkiktu&

डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा ने जब इन्टरमीडिएट के छात्र थे तभी आपका विवाह संबंध तय हो गया तथा परीक्षा समाप्त होते हे अप्रैल, सन् 1956 में आपका विवाह संपन्न हुआ, श्री कृष्णमुरारी शर्मा ने परिवारजनों के प्रस्ताव को अस्वीकार तो किया था, किन्तु माता जी के स्वास्थ्य खराब होने के कारण उनकी सहायता के लिये गृहणी की

आवश्यकता बतलाकर आपके माता–पिता ने उन्हें अंततः वैवाहिक जीवन में बाँध ही दिया। विवाहोपरान्त आपकी शिक्षा नियमित जारी रही और आपने 1958 में बी.ए. भी उत्तीर्ण कर लिया।

1959 में एल.एल.बी. का पढ़ाई अधूरी छोड़कर आपने स्नातक स्केल में शासकीय माध्यमिक विद्यालय भटनावर (शिवपुरी) में जुलाई 1959 में सहायक शिक्षक का पदभार ग्रहण कर लिया। भाई–बहिनों की पढ़ाई तथा अन्य पारिवारिक समस्याओं के देखते हुए नियमित, पढ़ाई जारी रख सकना आपके लिये संभव नहीं था। इसलिये आपको बीच में ही अध्ययन छोड़कर नौकरी करनी पड़ी वैसे भी श्री कृष्णमुरारी शर्मा ने हाईस्कूल के बाद तथा इन्टर मीडिएट के बाद ग्रीष्मावकाश में स्थानापन्न क्लर्क के रूप में एक–एक माह क्लर्क के रूप में काम किया। ऐसे काम करने पर जो उन्हें अल्प वेतन मिलता था, वो भी उन्होंने पारिवारिक यथार्थ ही खर्च किया। सन् 1961 में मध्यप्रदेश के लोक–सेवा आयोग द्वारा आपका चयन प्रदेश के सूचना तथा प्रकाशन विभाग में सहायक क्षेत्र प्रकाशन अधिकारी के पद पर जब हो गया, तब आपने शिक्षक पद से त्याग–पत्र देकर दो मई, सन् 1961, को जिला प्रकाशन कार्यालय, दुर्ग में पदभार ग्रहण किया, लगभग दस माह बाद आपका स्थानान्तरण सागर में इसी पद पर हुआ और वहाँ से लगभग एक वर्ष बाद आपको संभागीय कार्यालय जबलपुर में पदस्थ किया गया वहाँ शासकीय अनुमति से जब भी शर्मा ने नियमित अध्ययन करते हुए प्रथम श्रेणी में एम.ए. उत्तीर्ण कर लिया तभी 1965 में मध्यप्रदेश के लोकसेवा आयोग द्वारा प्रदेश के उच्च शिक्षा विभाग में हिंदी व्याख्याता के रूप में सेवाएँ देने के लिये चयनित कर लिया गया, दिनांक 06 अक्टूबर 1966 को आपने सूचना प्रकाशन विभाग की सेवा से मुक्ति

पाकर शासकीय महाविद्यालय, जगदलपुर (बस्तर) में हिंदी व्याख्याता का पदभार ग्रहण किया।

लगभग एक सत्र जगदलपुर में सेवाएँ देने के बाद आप शासकीय एम.जे.एस. महाविद्यालय, भिण्ड में स्थानान्तरित हुये, इस महाविद्यालय में लगभग दस वर्षों तक हिंदी के प्राध्यापक रहे। जून 1976 में आपका स्थानान्तर, शासकीय बालक महाविद्यालय, मुरार (ग्वालियर) हो गया। जहाँ आप लगभग पन्द्रह वर्ष तक रहे। मुरार के सेवाकाल के बाद लगभग एक सत्र आप नवीन कन्या महाविद्यालय, ग्वालियर में भी पदस्थ रहे। उसके बाद शासकीय महाविद्यालय, आरोन (गुना) में लगभग चार माह रहने के पश्चात् आपका 1989 में शासकीय पी.जी. कॉलेज मुरैना में स्थानान्तर हुआा। जहाँ हिंदी प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष लगभग पाँच वर्षों तक सेवाएँ देने के पश्चात् आपका स्थानान्तर शासकीय आदर्श विज्ञान महाविद्यालय हो गया। इसी महाविद्याल से डॉ. शर्मा पन्द्रह नवम्बर सन् 1996 को हिंदी प्रोफेसर पद से सेवा निवृत्त हुए बीच में शासन ने प्राचार्य पद पर पदोन्नति के लिये आपसे सहमति चाही थी, किन्तु आपने उसे मान्य नहीं किया।

i=dkfjrk&

श्री कृष्णमुरारी शर्मा की छात्र जीवन से ही पत्रकारिता में विशेष अभिरुचि रही। पत्रकारिता को आपने जनसेवा का एक सशक्त माध्यम माना इसी सेवा भाव से जब आप इन्टरमीडिएट के छात्र थे, तभी मुरैना से प्रकाशित साप्ताहिक वीर मजदूर, तथा 'अमर सैनिक' से आप जुड़ गये, ये दोनों साप्ताहिक पत्र मुरैना के वरिष्ठ पत्रकार, मास्टर वृन्दावन आजाद के थे तथा वे ही इन पत्रों के प्रधान संपादक थे। इन

साप्ताहिक पत्रों के अतिरिक्त ग्वालियर से प्रकाशित 'दैनिक हमारी आवाज' के भी सन् 1956 से सन् 1958 तक श्री कृष्णमुरारी शर्मा अवैतनिक संवाददाता रहे। इसी अवधि में आगरा के दैनिक 'सैनिक' से भी आप जुड़े रहे और इस प्रतिष्ठित दैनिक के लिये आप संवाद प्रेषित करते रहे। इन अखबारों से आपको केवल डाक खर्च ही प्राप्त होता था। बाद में श्री कृष्णमुरारी शर्मा यह सब छोड़कर शासकीय सेवा, में चले गये, सूचना प्रकाशन विभाग की सेवा में पत्रकारिता का आपका यह अनुभव काम आया।

शासकीय सेवा से निवृत्त होने के बाद डॉ. शर्मा के एक शिष्य ने अपने एक 'सांध्य दैनिक' के संपादन के लिये आपसे आग्रह किया। उसका अनुरोध स्वीकार कर आपने अगस्त 1998 से अगस्त 2001 तक हिंदी सांध्य दैनिक 'टुडे न्यूज' का निःशुल्क संपादक पद स्वीकार किया। बाद में भी वह आपसे सहयोग की आकांक्षा करता रहा, किन्तु व्यक्तिगत कारणों से आपने उसे अमान्य कर दिया।

lkfgR; lk/kuk ,oa lLFkkvksa ls lEc/k

श्री कृष्णमुरारी शर्मा दसवीं कक्षा के जब छात्र थे, तब आपकी प्रथम कविता 'श्रमी कृषक' को एक साहित्यिक प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ, यह प्रथम रचना आपके गरुजनों तथा मुरैना के वरिष्ठ साहित्यकारों को बहुत अच्छी लगी। वरिष्ठों से प्रोत्साहन पाकर, आपका उत्साहवर्द्धन हुआ, तब से ही आपने कविताएँ लिखना आरम्भ कर दिया। आपका प्रथम गीत 'संभल–संभल कर चलना जी, मझधार पड़ी नैया तेरी' जी.पी. कॉलेज, मुरैना की 1955–56 की वार्षिक पत्रिका में प्रकाशित हुआ था। इसके बाद ग्वालियर से प्रकाशित दैनिक नव प्रभात,

'दैनिक हमारी आवाज' तथा मुरैना से प्रकाशित 'वीर मजदूर', 'पाक्षिक' 'जाग्रति', आदि पत्रों में समय–समय पर आपकी कविताएँ छपने लगीं। जब श्री कृष्णमुरारी शर्मा सूचना प्रकाशन की सेवा में दुर्ग में पदस्थ थे, तब वहाँ के साप्ताहिक पत्र 'ज्वालामुखी' में प्रायः आपकी कविताएँ छपती थीं। वहाँ से स्थानान्तरित होकर जब आप सागर पहुँचते तब वहाँ के दैनिक 'लोकपथ' में प्रायः प्रकाशित होती थीं। सन् 1962 में 1965 के बीच श्री कृष्णमुरारी शर्मा जबलपुर में पदस्थ रहे, तब श्री कृष्णमुरारी शर्मा की रचनायें अनेक शासकीय तथा अशासकीय पत्र–पत्रिकाओं में नियमित रूप से छपती रहती थीं।

जहाँ तक साहित्यिक संस्थानों का प्रश्न है, श्री कृष्णमुरारी शर्मा प्रारम्भ से ही ऐसी संस्थाओं से जुड़े रहे, मुरैना में रहते हुए मुरैना की उस समय की एकमात्र पत्रिका 'मयूर वन' साहित्यक समिति के संचालन/ मंत्री कई वर्षों तक रहे। जबलपुर पहुँचने के बाद, महाकौशल, कलाकेन्द्र जबलपुर के आप तीन वर्षों तक सितम्बर सन् 1996 तक अध्यक्ष रहे, इन संस्थाओं के अतिरिक्त, जबलपुर की 'मिलन' संस्था के भी आप वर्षों सक्रिय सदस्य रहे। इधर जब भिण्ड स्थानान्तरित होकर आप पहुँचे तब वहाँ 'लोकायन' साहित्यिक संस्था बहुत सक्रिय थी, उससे भी आप लगभग दस वर्षों तक सक्रिय रूप से जुड़े रहे। सन् 1976 में ग्वालियर के उपनगर मुरार में स्थानान्तरित होकर पहुँचने के बाद प्रायः सभी साहित्यिक संस्थाओं से जुड़ गये। सन् 1976 से 1982 तक मुरार की 'तरुणोदय' संस्था के आप अध्यक्ष रहे। इसी संस्था के माध्यम से आपने सहज कविता का एक आन्दोलन भी चलाया। 'तरुणोदय' संस्था की ओर से सहज कविता– एक, सहज कविता– दो, तथा सहज कविता– तीन शीर्षक से 1976 से 1980 के

बीच सामूहिक काव्य संग्रह आपके ही संपादन में प्रकाशित हुए जो हिंदी जगत में बहुत चर्चित हुये। सन् 2008 से सन् 2010 तक डॉ. शर्मा मध्य भारत हिंदी महासभा, ग्वालियर के अध्यक्ष रहे। सन् 2007 से आप एक अन्य साहित्यिक संस्था 'साहित्य साधना संसद' के भी अध्यक्ष हैं।

शिक्षक– नेतृत्व डॉ. शर्मा अपने समय के महाविद्यालयीन शिक्षकों के एक कर्मठ नेता भी रहे हैं। विश्वविद्यालय से संबद्ध तथा शासन संबंधी विविध समस्याओं के समाधान के लिये जबसे शासकीय महाविद्यालय शिक्षक संघ का गठन हुआ, तब से लेकर सेवानिवृत्त होने तक डॉ. शर्मा इस संगठन से सक्रिय रूप से जुड़े रहे। सन् 1970 में भिण्ड इकाई के सचिव रहे तथा बाद में ग्वालियर स्थानान्तरित होने पर शासकीय महाविद्यालय, मुरार इकाई के अध्यक्ष रहे और उसके पश्चात् जीवाजी विश्वविद्यालय, संभागीय इकाई के मंत्री तथा अनेक वर्षों तक उसके अध्यक्ष भी रहे।

iqjLdkj] lEeku ,oa mikf/k;k

श्री कृष्णमुरारी शर्मा को उनकी सुदीर्घ हिंदी सेवा एवं साहित्यिक उपलब्धियों के लिये देशभर की अनेक साहित्यिक संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत तथा समय–समय पर सम्मानित किया गया है। इस संबंध में आपकी कुछ प्रमुख उपलब्धियों का विवरण यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है–

Ø-	lLFkk	o"kZ	lEeku
1–	मध्यप्रदेश राष्ट्र भाषा प्रचार समिति, ग्वालियर–चम्बल संभाग	1991	हिंदी सेवी सम्मान
2–	मध्य भारतीय हिंदी साहित्य सभा, ग्वालियर	2001	हिंदी सेवी सम्मान

Ø-	lLFkk	o"kZ	lEeku
3—	मध्यप्रदेश तुलसी साहित्यिक अकादमी, भोपाल	2004	तुलसी सम्मान
4—	कादम्बरी, जबलपुर	2004	डॉ सेठ गोविन्द दास अखिल भारतीय सम्मान पुरस्कार
5—	साहित्यिक सांस्कृतिक कला अकादमी परियांवा (प्रतापगढ़)	2005	हिंदी गरिमा सम्मान
6—	हिंदी साहित्य अकादमी, प्रयाग	2005	निराला सम्मान
7—	अखिल भारतीय साहित्य परिषद, कोटा इकाई	2005	हरिबल्लभ हरि सम्मान
8—	डी.एल.एस. क्लब, ग्वालियर	2005	माधुरी शुक्ल सम्मान
9—	शिव संकल्प साहित्य अकादमी, होशंगाबाद	2006	काव्य श्री सम्मान
10—	विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, प्रयाग	2008	डॉ. रामकुमार वर्मा सम्मान
11—	जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (हिंदी भाषा अध्ययन मण्डल)	2010	हिंदी सेवी सम्मान
12—	सृजन साहित्य समिति, कोरवा (छछमीसगढ़)	2013	गौर गौरव सम्मान
13—	राष्ट्रीय एकता साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, हल्दीघाटी	2013	महाराणा प्रताप राष्ट्रीय एकता सम्मान
14—	विक्रम शिला हिंदी विद्यापीठ भागलपुर, (बिहार)	2013	विद्यासागर

Ø-	lLFkk	o"k	lEeku
15–	साहित्य अकादमी, म.प्र., भोपाल	2015	सुदीर्घ साहित्य सेवा सम्मान (लाइफ टाइम अचीवमेन्ट अवार्ड)
16–	साहित्य मण्डल नाथद्वारा (राजस्थान)	2017	साहित्य सुधाकर

उपर्युक्त सम्मानों के अतिरिक्त डॉ. शर्मा अन्यानेक व्यक्तियों, संस्थाओं, संस्थानों द्वारा भी हिंदी दिवस एवं हिंदी आदि कार्यक्रमों के अन्तर्गत विगत वर्षों में अनेक बार सम्मानित किये जा चुके हैं।

¼c½ —frRo %

¼1½ dk0 ; %

fdj.k] 1960 ¼iFke dfork lxg½

श्री कृष्णमुरारी शर्मा जब मुरैना में 'मयूरवन साहित्य समिति' के संचालक/ मंत्री थे। तभी उनकी मात्र पन्द्रह कविताओं का प्रथम काव्य संग्रह प्रकाशित हुआ था। इस छोटे से संकलन के प्रकाशक साप्ताहिक 'वीर मजदूर' मुरैना मास्टर वृन्दावन आजाद ने अपने 'नवजीवन' प्रेस से इसे सन् 1960 में मुद्रित– प्रकाशित किया था। इस संग्रह की 'विनय' शीर्षक प्रथम कविता में कवि श्री कृष्णमुरारी शर्मा ने, माँ सरस्वति से विनय करते हुए अपने लिये कुछ वरदानों की याचना की है।कविता के प्रथम छन्द में सरस्वती माता से प्रार्थना करते हुए कवि कहता है कि सूर, तुलसी, देव, बिहारी, पन्त, निराला, आपकी ही कृपा से अमर कवि हुए हैं। मुझ शिशु पर भी कृपा करें, वह कहता है–

मैं गीत लिखूँ जगत सुने,
साध कभी हो जाये न भंग।

इस कविता में वह कहता है कि मुझे प्रसन्नता की अनुभूति तभी हो जब इस संसार के लोगों को भी आनन्द की अनुभूति हो रही हों। वह शारदे माँ से वर की याचना करते हुए लिखता है।

सारा जग हो जब पीड़ित,
होवे अधीर, वह मन दे।
मेरे गीतों को नव लय,
स्वर को अपना स्वर दे।
मेरी केवल विनय यही,
हे मातु, शारदे! वर दे।।[1]

संग्रह का दूसरी कविता 'पावस गीत' हैं –

चली पुरविया ब्यार कि मनवा लहराये।
घिरे मेघवा कारे कि जियरा हुलसाये।।

इस गीत की कुछ पंक्तियाँ और देखें –

कलिका नव बाला सी मुस्काती,
इठलाती–बल खाती–मदमाती।
लुब्धक अलि आया कलि से मिलने,
पा मेघदूत से कलि की पाती।
झूलें घनवा पवन हिण्डोलों में,
हरी हरी यह अवनी सरसाये।।[2]

---

[1] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा, किरण, पृ. 4
[2] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा, किरण, पृ. 5

उन्हीं दिनों पड़ौसी चीन में भारत–भू के कुछ भाग पर अधिकार जमाने का कुप्रयास किया था। तब युवा कवि ने चीन के नाम एक पाती लिखी थी, जो प्रस्तुत संग्रह की तीसरी ओजस्वी रचना है। कवि ने चीन को चेताते हुए लिखा है–

अब जाग जरा चेत जरा पगले,
तैने बीज कलह के बोए हैं।
ऐ चीन! अब सम्हल, हो सावधान,
तू यह मत समझ कि हम सोये हैं।।[1]

प्रियतम के नाम पाती– तरुण कवि कि श्रृंगार परक रचना है। इस संकलन की 'शिशु' शीर्षक रचना भी मर्मस्पर्शी है। कवि के अनुसार शिशु माता–पिता की कल्पना का एक साकार स्वरूप है। वह लिखता है–

तुम अशेष हों शेष कदापि नहीं,
तुम ज्योतिर्मय प्रकाश हो अन्ध नहीं।
मधुर सुगन्ध तुम नव सुमनों की,
भावों में किन्चित भी दुर्गन्ध नहीं।।[2]

'मधुगीत' में कवि बसन्त ऋतु के स्वागत में आनन्दित होकर लिखता है–

मनुज–विहग हर्ष किलोलें करते,
हसते–गाते वे पुलक पुलक कर।
जीवन–पथ के प्रबल झकोरों को,
भूल गये वे रस विभोर होकर।[1]

---

[1] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा, किरण, पृ. 8
[2] वही, पृ. 11

'मानव के प्रति' शीर्षक कविता में कवि ने मनुष्य से मनुष्य बनने का आग्रह किया है। वह मनुष्य को चेताते हुए लिखते हैं, कि ये तेरा सारा माया जाल और तेरे समस्त माया महल यही नष्ट हो जावेंगे। इसलिये हे मद–मत्त मानव, तू समय रहते सम्हल जा। एक अन्य गीत में आपने अतृप्त प्रेम पिपासा और उससे संबंधित भावनाओं को बड़े भावुक मन से व्यक्त किया है, वह लिखता है–

प्रणय मेरा स्वप्न बन गया,
ये अश्रु बन गये गीत मेरे।[2]

'होली गीत' में कवि ने समरसता की भावना के रंगों की वर्षा की है। श्री कृष्णमुरारी शर्मा का एक अन्य गीत 'सम्हल–सम्हल कर चल मांझी' जी.पी. कॉलेज, मुरैना की सन् 1956 की वार्षिक पत्रिका में छपा था, छात्र जीवन में लिखित यह गीत निरासा–हताशा की झंझाओं को चीर कर सावधानी पूर्वक इस संसार सागर से, अपनी नौका को पार लगाने का सभी से आग्रह करता है–

घबड़ा कर पथ भूल न जाना,
पवन झकोरों से लड़, जाना।
साहस और सबलता से फिर–
नैया को तट तक पहुँचाना।
तूफानों की डगर–मगर में,
साहस से ही काम चलेगा।
धीरज के संग तू बढ़ता चल,
छाई चहुँ दिशि घोर अंधेरी।।[1]

---

[1] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा, किरण, पृ. 13
[2] वही, पृ. 17

प्रस्तुत संकलन की 'ताज' शीर्षक एक कविता 'ताजमहल' के अनेक स्वरम्य चित्र प्रस्तुत करती है। प्रस्तुत कविता में यमुना तट पर स्थित ताजमहल को कहीं योगी के रूप में देखा है तो कहीं ध्यानस्थ तपस्वी के रूप में उसकी कल्पना की है। कहीं उसे शुभ्रहंस के रूप में देखा है तो कहीं जगत के रचयिता के रूप में उसकी कल्पना की है। ताज को संबोधित करते हुए वह कहता है–

हो कि तुम कोई एक कसौटी ऐसी,
जिस पर चन्द्रकला परखी जाती है ?
या तुमसे टकरा कर ही विमल चंदनियाँ,
बिखर–बिखर कर भू पर छा जाती है।[2]

ऐसी ही एक अन्य स्वरम्य कल्पना देखें–

अथवा तुम हो कोई थके, बटोही,
सरिता के तट पर विश्राम कर रहे।
या तो तुम कोई निर्वासित राजा,
बैठे बीता वैभव याद कर रहे।।[3]

प्रस्तुत संग्रह में राष्ट्रीयता से ओतप्रोत कुछ गीत, तथा 'आव्हान' शीर्षक एक रचना के अतिरिक्त 'ध्वंस नहीं' नव निर्माण चाहिए' शीर्षक अन्य रचनायँ भी संकलित हैं।

प्रस्तुत संग्रह को कवि ने अपने छोटे भाई सुरेश की पुण्य स्मृति को समर्पित किया है जो अल्पवय में ही अकालकाल का ग्रास बन गया था।

---

[1] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा, किरण, पृ. 21
[2] वही, पृ. 23
[3] वही, पृ. 23

^Hk vkj [k d chp lc* ¼nkgk lrlbl lu 2003½ &

खड़ी बोली दोहे की प्रस्तुत सतसई में कुल 701 दोहे प्रकाशित हैं, संकलन के सभी दोहों को प्रकाश की ओर, मातृभूमि ही स्वर्ग है, मत हारे मन मीत, धधक जले जो पेट में, वाणी बाण अचूक, माँ/पत्नी/नारी, ऋतुरंग/प्रकृति, शिक्षक, शिक्षार्थी, श्रम/श्रमपूत, छद्म विनय, चाटुकारी इत्यादि इक्कीस शीर्षकों के अन्तर्गत ये दोहे संकलित हैं। प्रस्तुत दोहों में जीवन के सभी पक्षों–पहलुओं को अत्यन्त प्रौढ़ दृष्टि से देखकर एक रचनात्मक–सकर्मक, निष्कर्ष तथा सशक्त आधार प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत संग्रह के अनेक दोहों में हमारे जीवन में रची–बसी, अनेक सूक्तियों को अत्यन्त सहज काव्यात्मक रूप प्रदान किये जाने से मन की गहराईयों तक उनके पेठ सकने की सामर्थ्य में और भी वृद्धि हो सकी है। आज की दूषित राजनीति के संबंध में प्रस्तुत दोहों में, डॉ. शर्मा ने अनेक स्थलों पर तीक्ष्ण प्रहार किये हैं। प्रस्तुत संग्रह दोहों के संबंध में डॉ. बृजेश माधव ने लिखा है– 'समाज में उच्च और शाश्वत मूल्यों की पुनर्स्थापना तथा नैतिक सांस्कृतिक प्रदूषण को समाप्त करने के लिये 'भू और ख के बीच सब' दोहे दिशा बोधक सिद्ध हो सकते हैं। शैली और विद्या पराम्परागत होते हुए भी उनमें वर्तमान की प्रेरणा है।

संग्रह के अनेक दोहे ऐसे हैं, जिन्हें सूक्तियों की भांति बड़ी सरलता से याद रखा जा सकता हैं भाव सरल, तरल और प्रभामयी हैं। जहाँ तक उसमें व्यंजनाएँ हैं लक्षणाएँ हैं और प्रसाद का प्रसाद भी भरपूर है।[1]

---

[1] भू और ख के बीच सब– प्रथम फ्लेप

वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. बृजभूषण सिंह 'आदर्श' ने 'रैन बसेरा' नामक मासिक पत्रिका में जनवरी 2017 में 'डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा के 'विलक्षण दोहे' शीर्षक एक लेख में इन दोहों की समीक्षा करते हुए ,आपके वर्तमान राजनीति मे विकृतियों को लेकर लिखे गये दोहों पर टिप्पणी करते हुए लिखा है–

''जिस जमाने में हम रह रहे हैं, वह राजनीतिमय बन गया है, इसने मानव जीवन को चरमरा दिया है। जीवन का हर पक्ष आज की प्रदूषित राजनीति से विकृत हो रहा है। जहाँ देखो वहाँ व्याप्त भ्रष्टाचार, कर्तव्य विमुखता, चारित्रिक पतन, रिश्वतखोरी, स्वार्थ में सत साहित्य ही हमारा संबल ही हो सकता है। मैं प्रसन्न हूँ कि शर्मा जी ने एक संबल कदम, इस ओर उठाया है। उनके दोहे दिशा बोधक हैं।

''शासकीय सेवा में रहते हुए राजनीति के छल प्रपंच को देखते हुये, अनुभव करते हुये, संभवतः वे जो कहना चाहते थे दोहा वली में सहज रूप से व्यक्त कर सकें। राजनीति धन्धा बनी के अन्तर्गत उनके पचासों दोहे उनकी भावना को अभिव्यक्त करते हैं।''[1]

राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत निम्नलिखित दोहे, देखें–

मातृभूमि ही स्वर्ग है, उसके वही समान।
आशा है विश्वास वह, प्रगति वही उत्थान।।[2]

जाति, धर्म तथा भाषा इत्यादि को आधार बनाकर आज देश के लोगों में जहाँ–तहाँ फूट भी देखने को मिल रही है। प्रस्तुत दोहे में दुःखी मन से कवि कहता है–

---

[1] रेन बसेरा, मासिक – डॉ. बृजभूषण सिंह आदर्श, पृ.15
[2] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा, भू और ख के बीच सब, पृ. 15

प्रजातंत्र के भवन में धुस बैठी है फूट।
जाति धर्म भाषा, लड़े कैसे रहे अटूट।।[1]

हमारे मन की गहराईयों में प्रवेश कर कवि ने एक मनोवैज्ञानिक सत्य का उद्‌घाटन करते हुए प्रस्तुत दोहों में लिखा है–

मन को सुख मिलता तभी, हो मनचाही बात।
अनचाही यदि हो गयी, तो दिन रुचे न रात।।[2]

एक अन्य दोहे में भी ऐसे ही एक सत्य का प्रस्तुतिकरण है–

मन में तेरे जो छिपा, मुख पर उसकी छाप।
उसे न छिपा सके अधिक, प्रकट आप से आप।।[3]

अंचल बने तो कुछ नहीं शीर्षक के अन्तर्गत दिये गये कुछ अन्य दोहे, यहाँ अवलोकनीय हैं –

धूप पचाकर जो जिये, वह न कभी मुरझाय।
कच्चा मटका आँच तप, घट पक्का बन जाये।।[4]

दुरभिमानी का अवश्य, झुके एक दिन शीष
रावण को न बचा सके, शंकर के आशीष।।[5]

आचरण से जुड़े बिना अर्थहीन उपदेश।
गाल बजाने से नहीं, बदलेगा परिवेश।।[6]

---

[1] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा, भू और ख के बीच सब, पृ. 15
[2] वही, पृ. 16
[3] वही पृ. 19
[4] वही, पृ. 22, 23
[5] वही, पृ. 22, 23
[6] वही, पृ. 22, 23

जिस पथ पर चलना नहीं, उसके गिनों न मील।
जहाँ सुई से काम चले, ठोको वहाँ न कील।।[1]

प्रस्तुत दोहावली में ऐसे अनेक दोहे हैं जो पाठक के मन को प्रभावित करते हैं।

'भू और ख के बीच सब' लिखित 'निवेदन' प्रस्तुत सतसई शीर्षक के संबंध में डॉ. शर्मा लिखते हैं– ''प्रस्तुत संग्रह के कुछ दोहे सीधे–सीधे भूख–पेट की भूख का रूपान्तराण करते हैं, शेष अन्य दोहे भी किसी न किसी रूप में भू और ख की ही अनुगूँज हैं। इस दृष्टि से प्रस्तुत संग्रह 'भू और ख के बीच सब' नामकरण कदाचित आपको उपयुक्त प्रतीत होगा।''

अन्त में प्रो. अक्षय कुमार जैन, अध्यक्ष म.प्र. हिंदी साहित्य सम्मेलन, भोपाल का अग्रलिखित कथन समीक्ष्य कृति के संबंध में निष्कर्ष के रूप में यहाँ प्रस्तुत है–

'समर्थ कवि डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा का 'सतसई' काव्य संग्रह 'भू और ख के बीच सब' इसी वर्ष 2003 में प्रकाशित हुआ है। डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा हिंदी जगत के मान्य कवि हैं। 'भू और ख के बीच सब' में सात सौ एक दोहे संग्रहीत हैं। इन सात सौ एक दोहों में डॉ. कृष्णमुरारी ने पृथ्वी और आकाश के बीच के प्रायः सभी उन विषयों को दोहा में छन्दबद्ध किया है, जो मनुष्य समाज की हलचल, विचार–विमर्श और राग–द्वेष के कारण बनते रहे हैं। यूँ कहिए कि वे विषय मनुष्य के मन मस्तिष्क में रूढ़ हो गये हैं। नीति–सदाचार, लोक व्यवहार, धर्म, भाईचारा, मित्रता, परोपकार, सतसंग, करुणा, सेवा जैसे

[1] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा, भू और ख के बीच सब, पृ. 22, 23

विषयों को आपने अपने काव्य में समाहित किया है। शाश्वत जीवन मूल्यों का सामाजिक अपकर्ष कवि को असहनीय है। अतः उसने दुराचार तुष्णा, दंभ, अहंकार के साथ ही आडम्बरों पर प्रहार किये हैं।. .... भाषा में संप्रेषण क्षमता भरपूर है। जनभाषा के मुहावरे भी भाषा सोष्ठभ की वृद्धि करते हैं।[1]

f=xU/kk ¼eäd lxg] lu 2004½ &

प्रस्तुत काव्य संकलन डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा के मुक्तकों का संग्रह है। इसमें उनके तीन शैलियों में लिखित मुक्तक प्रकाशक हैं, प्रथम खण्ड में आपके 145 वे मुक्तक प्रकाशित हैं, जिन्हें आपने चतुष्पदियाँ कहा है। इनके अतिरिक्त आपकी 70 मुक्तिकाएँ भी प्रस्तुत संग्रह का द्वितीय खण्ड हैं और तृतीय खण्ड में आपके 237 दोहे, प्रकाशित हैं, ये सभी मुक्तक विविध विषयों पर आपके सोच, विचारों और भावों की अभिव्यक्तियाँ हैं। प्रसिद्ध समीक्षक तथा कवि डॉ. श्याम निर्मम ने लिखा है– "डॉ. शर्मा ने इन मुक्तकों को 'चतुष्पदियाँ' कहा है, जिन्हें देश के उत्थान, पतन, जीवन के सच–झूठ, आदमी के सुख–दुःख, आँखों में सपने और उनकी टूटन, मन की उड़ान के साथ विवशता, हृदय में पनप रहे प्रेम और विकार, दुर्बल और सबल में बढ़ता आपसी द्वन्द्व, बचपन, वृद्धता में बंधती टूटती उम्मीदें, पेट और पीठ की लड़ाई, मौन और मुखरता के बीच सामंजस्य, सफर और समर के धरातल को खोजती आँखें, स्वार्थ–परमार्थ के दो मुँहे चेहरे, जाति–मजहब की बदहाल शकलें, अपने–पराये में भेद–भाव और ऊँच–नीच, हास्य, रुदन के तैरते अक्श, धर्म–ईमान पर उठती उंगलियाँ, गाँव–शहर की संस्कृति में पड़ती दरारें, शान्ति– अहिंसा की अनेकानेक मुद्राएँ, आदमी से आदमी की बड़ती दूरी, धरती–आसमान के बीच पनपती

[1] म.प्र. विवरणिका, म.प्र. हिन्दी साहित्य सम्मेलन, भोपाल फरवरी 2004

गहरी खाई, समाज में फैली विसंगतियों के साथ व्यवस्था–दुर्व्यवस्था के चित्र, सब साफ–साफ देखे और समझे जा सकते हैं। फूल, बच्चे, तितली, गंध, बाती, दीपक, काँच, मोती, सूरज, अन्धेरा, हवा, पानी, बादल, पहाड़, झरना, धूप–छाँव, चाँदनी यानि पूरी प्रकृति से सरोकार रखते हुए ये मुक्तक मानस पटल पर अपनी गहरी छाप छोड़कर अपनी बात साफ–साफ सीधे–सीधे पहुँचाते हैं।''[1]

मुक्तक चार चरणों की एक ऐसी रचना का नाम है, जिसमें कवि अपने किसी एक या कुछ विचारों को पूर्णता के साथ अभिव्यक्त करता है। ये छोटी रचना मन पर बड़ा गहरा प्रभाव छोड़ती है, डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा के ऐसे मुक्तक विद्वानों द्वारा बहुत सराहे गये हैं। राष्ट्र प्रेम के पावन भावों को प्रकट करते निम्नलिखित दो मुक्तक देखें–

सबके लिये जिये जो, वह जीवन है,
सबके लिये मरे जो, वह जीवन है,
साँस–साँस अर्पित जिसकी देश को,
भले जिये पल–दो पल, वह जीवन है।[2]

तथा–

स्वदेश से बड़ा कुछ भी नहीं है,
ईमान से खरा कुछ भी नहीं है,
इंसान में यदि नहीं है इंसानियत,
अरे! उससे बुरा कुछ भी नहीं है।[3]

कवि ने अपना स्वयं का परिचय अग्रलिखित मुक्तक में इस प्रकार दिया है–

---

[1] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा, त्रिगन्धा – डॉ. श्याम निर्मम – प्रथम फ्लेप
[2] वही, पृ. 17
[3] वही, पृ. 17

सत–शिव का परिणय हूँ, विदाई नहीं हूँ,
पथ– सृष्टा हूँ कोरी सफाई नहीं हूँ,
जैसा भोगता या देखता, कह देता,
कविता–विक्रेता व्यवसायी नहीं हूँ।[1]

एक अन्य मुक्तक में श्री कृष्णमुरारी शर्मा ने इस तथ्य को उजागर किया है, कि मनुष्य को अपना परिचय प्रस्तुत करने के लिये कुछ विशेष नहीं करना पड़ता, उसकी जो अपनी विशिष्ट छवि है, वह स्वतः ही अपना परिचय दे देती है। डॉ. शर्मा लिखते हैं –

''रवि का परिचय उसका प्रकाश देता है,
गति का परिचय उसका विकास देता है,
फूल की सुगन्ध जैसे महमहा जाती है,
आदमी अपना परिचय आप देता है।''[2]

डॉ. शर्मा ने मनुष्य के आत्म केन्द्रित जीवन को सफल नहीं माना है। बड़ी से बड़ी उपलब्धियाँ अर्जित कर लेने के बाद भी ऐसे जीवन का कोई महत्व नहीं है, परमार्थ के लिये समर्पित ही जीवन को सम्माननीय और सफल माना है।

''स्व में सिमटकर जीवन सफल नहीं होता,
नभ को छूकर भी मेघ अचल नहीं होता,
आँधियों में भी रमा दे जो सुगन्ध अपनी,
फूल–सा जीवन कभी निष्फल नहीं होता।''[3]

---

[1] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा, त्रिगन्धा, पृ. 18
[2] वही, पृ. 19
[3] वही, पृ. 19

डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा ने त्रिगन्धा में अपने निवेदन में इन मुक्तकों के संबंध में लिखा है– ''मैंने अपने मुक्तकों में कोई नई बात नहीं कही है। अपने आस–पास मैंने जो देखा है, आपसे, उनसे जो कुछ सुना है, समझ–बूझा है, अपने जीवन में जैसा कुछ भोगा है– अनुभव किया है, वही सब मेरे प्रस्तुत मुक्तकों में जब–तब प्रकट होता रहता है। यहाँ मैं किसी उच्च कलात्मक अभिव्यक्ति का भी दावा नहीं करता। बस यही कह सकता हूँ कि मैंने अपनी बात सीधे, सरल, सहज ढंग से प्रस्तुतभर कर दी है। मेरी 'कहन' मेरी अपनी हैं– अत्यन्त विनम्रता के साथ यही मेरा आत्म कथ्य है।''

डॉ. शर्मा के ऐसे हृदयस्पर्शी मुक्तकों की विश्व प्रसिद्ध संत, कवि, विचारक, प्रवचनकार, 'पद्मभूषण' स्वामी सत्यमित्रानन्द जी गिरि द्वारा भी सराहा गया है, पूज्य स्वामी जी डॉ. शर्मा को आशीर्वाद देते हुए लिखते है। ''डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा का सात्विक, सरल, निर्दम्य जीवन आज के साहित्यिक कवियों के लिये आदर्श रूप हैं। उनके 'मुक्तकों' ने मुझे प्रभावित किया है। कभी–कभी मैं अपने प्रवचनों में उन्हें उद्धृत भी करता हूँ।''[1] महाराष्ट्र के बीड़ नगर से प्रकाशित मासिक 'लोकयज्ञ' के मार्च 2005 के अंक में प्रकाशित समीक्षा– ''भाव पुष्पो का बहुगन्धी गुलदस्ता त्रिगन्धा' में डॉ. कल्पना शर्मा ने इन मुक्तकों में सहजता, सरलता, बोधगम्यता, प्रसादत्व के साथ भी लक्ष्णा व्यंजना की चमक भी यत्र–तत्र विद्यमान हैं। यही डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा के सार्थक लेखन की प्रमुख विशेषता हैं ..... सुदीर्घ जीवनानुभव त्रिगन्धा के मुक्तकों में अभिव्यंजित हुए हैं, जिनमें कला की कृत्रिम चकाचोंद नहीं है, क्लिष्टत्व

[1] पीयूषिका – 'आशीर्वचन', से

भी नहीं हैं। सीधी बात को सीधे ढंग पर कहने पर ही उसके काव्यात्मक मिठास सर्वत्र विद्यमान है।[1]

त्रिगन्धा में मुक्तकों के अतिरिक्त 70 मुक्तिकाएँ भी प्रकाशित हैं। कुछ साहित्यिकारों ने छन्दयुक्त, छोटी रचनाओं को क्षणिका, मिनी कविता, कटपीस, कविता आदि नाम दिये हैं। किन्तु डॉ. शर्मा ने ऐसी कविताओं को 'मुक्तिका' नाम दिया है, जो सर्वथा समीचीन हैं। डॉ. शर्मा का मानना है कि ये कविताएँ छोटी होने के साथ ही अर्थ की दृष्टि से अपने आप में पूर्ण होती है। त्रिगन्धा के निवेदन में आपने लिखा है– 'वस्तुतः ये भी मुक्तक हैं, क्योंकि इनमें भी एक विचार या भाव को अति अल्प शब्दों में पूरी तन्मयता के साथ व्यक्त किया जाता हैं मैंने ऐसे मुक्तकों या रचनाओं के लिये मुक्तिका नाम अधिक उपयुक्त माना है।''[2] त्रिगन्धा में प्रकाशित मुक्तिकाओं में चुटीले व्यंग्य है, प्रेरणाएँ हैं, जीवन के सुख–दुःख से जुड़े प्रसंग हैं और ऐसे ही अनेक अर्थवान मुहावरे हैं। 'तब/अब' शीर्षक अधोलिखित मुक्तिका देखें–

''तब व्यवसाय में भी
थी सेवा
अब सेवा ही
बन गयी है, व्यवसाय''

एक अन्य मुक्तिका में भृष्टाचार पर किया गया तीक्ष्ण प्रहार अवलोकनीय है–

[1] मासिक लोकयज्ञ, मार्च 2005, पृ. 19
[2] त्रिगन्ध – निवेदन से

जब कोई पुल
या शासकीय भवन
असमय ही ढह जाये
तब साफ समझ में आता है कि–
संबंधित ठेकेदार ने
सभी को सभी के हिस्से–
दिये हैं पूरी ईमानदारी से।''[1]

डॉ. श्याम निर्मम ने इन मुक्तिकाओं के सन्दर्भ में लिखा है– ''मुक्तिकाओं में भी यही सब समाया है, लेकिन कहन के फर्क ने जैसे अपनी पहचान अपने आप निर्धारित कर दी है और यही इन मुक्तिकाओं की विशिष्टता भी है। विषयों की विविधता और छोटे–छोटे भाव विचार को कुछ चुने शब्दों में बाँधकर डॉ. शर्मा ने अपने लेखन की कुशलता को उजागर किया है।''[2] डॉ. कल्पना शर्मा ने इन मुक्तिकाओं के संबंध में लिखा है– ''डॉ. शर्मा ने मुक्त छन्द में रचित छोटी कविताओं को क्षणिका का ऐसा ही कोई अन्य नाम न देकर मुक्तिका कहा है, जो हर दृष्टि से संगत है। डॉ. शर्मा की ऐसी मुक्तिकाओं में सहजता, सार्थकता तथा व्यंजकता दर्शनीय है 'नग्नता' शीर्षक एक मुक्तिका दृष्टव्य है–

वहाँ वे
शौकिया / मौज मस्ती में नग्न हैं,
और सभ्य हैं
यहाँ ये / मजबूरी में अधनंग हैं।
इसलिये असभ्य हैं।[3]

---

[1] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा, त्रिगन्धा, पृष्ठ 62
[2] त्रिगन्धा, डॉ. श्याम निर्मम – प्रथम फ्लैप
[3] मासिक 'लोकयक्ष' – डॉ. कल्पना शर्मा, मार्च 2005, पृ. 19

डॉ. शर्मा की ऐसी विविध मुक्तिकाओं के संबंध में डॉ. सुखदेव सिंह सेंगर लिखते हैं– ''जीवन के इस सफर में डॉ. शर्मा की मुक्तिकाएँ एक प्रण के साथ जन्मती हैं और अन्त में सारे समाज को राष्ट्रीयता से भर देती है–

हमारी क्रिकेट टीम
जब भी / जहाँ भी–
खेलती है हमारे पड़ौसी के साथ
क्रिकेट–मैच
तब पता नहीं
ऐसा क्यों हो जाता है कि
लगभग हम सभी उसके साथ
खेल उठते हैं क्रिकेट–मैच[1]

त्रिगन्धा में संकलित मुक्ताएँ मनुष्य को मनुष्य के रूप में देखने के लिये आकुल हैं, उनमें मनुष्य को मनुष्य के रूप में आचरण की प्रेरणा देने की ललक है। उनमें मनुष्य के झूठ, फरेब, कदाचरण के प्रति भी जहाँ–तहाँ, खींझ –झुंझलाहट देखने को मिलती है। आज के मनुष्य के मन में लालच और तृष्णा का आवेग देखकर आज का कवि दुःखी हो जाता है। 'आश्चर्य' शीर्षक की इस मुक्तिका इसी आशय को स्पष्ट करती है–

कंठ तक भरा है लवालव,
वही बेचैन है भूख से
और जो पेट भर पाता है मुश्किल से
लेता है डकारें
चैन से।[1]

[1] मासिक आउट पोस्ट – जून–जुलाई 2005, पृ. 43

इन मुक्तिकाओं में मानव मन की शान्त अर्थात तृप्ति, अतृप्ति, क्रोध, घृणा इत्यादि भाव–अनुभावों की अत्यन्त प्रभावशाली अभिव्यक्ति देखने को मिलती हैं जहाँ तक त्रिगन्धा में संकलित दोहों का प्रश्न है, इन दोहों में भी अध्यात्म, नैतिकता, तथा मानवीय मूल्यों को उज्जीवित करने के अदम्य ललक है। कुल 237 दोहे प्रस्तुत संग्रह में संकलित हैं। डॉ. श्याम निर्मम के अनुसार– ''जहाँ तक दोहों का प्रश्न है, इन दोहों में दुनिया – जहान की बातें समझाई हैं। 'आधार' 'सार' और 'विविध' के अन्तर्गत ये तमाम दोहे अपनी पूरी सिद्धत और सामर्थ्य के साथ अपनी भंगिमाओं में आपसे रूबरू होते हैं, अन्तिम पाँच दोहों में अपने स्वतंत्र सेनानी पिता श्री का स्मरण कर कवि ने अपने लेखन को गंगा जल में धोकर जैसे पवित्र करने का प्रयास किया है, इन दोहों में पांडित्य का कोई लेपन नहीं है, तथा भाव, विचार और अनुभव तीनों एक साथ मुखर होकर हमें झकझोरते हैं। 'आधार' के अन्तर्गत प्रस्तुत आध्यात्मिक चेतना के कुछ दोहे यहाँ दृष्टव्य हैं–

मैं–मेरा जब तक रहे, तब तक जीवन भार।
राम–बोध जब तक नहीं, हो न सके भव पार।।[2]

फिसलन ही फिसलन यहाँ, जगत सजीली हाट।
रपट न पड़ना रे पथिक, थाम राम की लाट।।[3]

डॉ. शर्मा के आलोच्य दोहों के संबंध में डॉ. कल्पना शर्मा ने लिखा है– ''आधार, सार, और विविध शीर्षकों के अन्तर्गत दिये गये आपके अनेक दोहे बहुत मर्मस्पर्शी हैं। दोहे जैसे छोटे छन्द में डॉ. शर्मा

---

[1] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा, त्रिगन्धा, पृ. 66
[2] वही, पृ. 66
[3] वही, पृ. 66

ने राम–रहीम की एकता सांस्कारिता, असारता, सात्विक चिन्तन, शुद्ध आचरण की सात्विक व्यंजना के साथ ही जीवन जगत के अनेक जटिल प्रश्नों के समाधान भी प्रस्तुत किये हैं। आपके कुछ दोहों में आज की दूषित राजनीति, चारित्रिक पतन, धर्म–क्षेत्र के पाखण्ड, अनाचार, अलगाववाद, पारस्परिक वैमनस्यता, भेदभाव तथा अन्यान्य दूषणों पर भी मार्मिक चोट की गयी है।''[1] डॉ. शर्मा का मानना है कि आचरण की शुद्धता के लिये धर्म को आधार बनाना चाहिए–

कमियाँ सब मे ही रहे, रहते सब में दोष।
बिना धर्म–आचार के, बन न सके निर्दोष।।[2]

कवि ने सामाजिक विषमता तथा सामाजिक छूत–अछूत की भावना पर जो निष्कर्ष दिया है, वे सभी आज के सन्दर्भ में बहुत मूल्यवान हैं। आप लिखते हैं–

अछूत वही जो धर्म से, रहे कर्म से दूर।
जन्मा जो कुल निम्न में, उसका नहीं कसूर।।

नीच–ऊँच में भेद का, नहीं जन्म आधार
कर्म–कसौटी ही कहे, नीच–ऊँच आचार।।[3]

एक अन्य दोहे में आज के मानव समाज में व्याप्त भेद–भाव की दृष्टि पर कवि ने प्रहार करते हुए लिखा है –

सूर्य भेद करता नहीं, पवन न जाने भेद।
हमने सबको बाँटकर, बोए भेद–विभेद।।[1]

---

[1] मासिक – लोकयज्ञ – डॉ. कल्पना शर्मा, पृ. 19
[2] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा, त्रिगन्धा, पृ. 73
[3] वही, पृ. 82

आज के ढोंगी, आडम्बरी, कथित साधुओं पर भी एक व्यंग्य देखें–

वस्त्र गेरुए पहनकर, आसन बैठा ढोंग।
दान–मान सब पा रहा, दे प्रसाद में लोंग।।[2]

समग्र रूप से कहा जा सकता है कि 'त्रिगन्धा' में संकलित मुक्तक, मुक्तिकाएँ और दोहे, अत्यन्त प्रभावी और झकझोर देने वाले हैं। डॉ. सुखदेव सिंह सेंगर ने उचित ही लिखा है– ''त्रिगन्धा संग्रह' प्रेरक और पठनीय है। समय की शिला पर लिखा गया यह संग्रह उपयोगी और सार्थक है।''[3]

ih;f"kdk ¼nkgk lxg 2006½ &

वर्तमान में जिस द्रुत गति से आध्यात्मिक और मानवीय मूल्यों का क्षरण हो रहा है, वह किसी से छिपा नहीं है। आज आदमी स्वार्थान्ध, मदान्ध, कामान्ध होकर नैतिक मर्यादाओं को बेहिचक कुचल रहा है। इसका ही दुष्परिणाम है चारों ओर अराजकता, अशांति, उपद्रव, हिंसा का ताण्डव नृत्य, लूट–पाट, आपा–धापी और इस कारण हमारी राष्ट्र प्रेम की भावना तक पंगु होती जा रही है। ऐसे विषम समय में जो साहित्य नैतिक एवं आध्यात्मिक उच्चादर्शों को समाज के समक्ष प्रस्तुत करता है। वह निश्चय ही स्वागत योग्य है। पीयूषिका के सरल, सहज दोहों में डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा ने जहाँ एक ओर भक्ति की अमृत वर्षा की है, वहीं अनेक दोहों के माध्यम से सामाजिक विद्रूपताओं के परिमार्जन का सात्विक मार्ग भी प्रशस्त है। डॉ. शर्मा स्वयं को भक्त न मानकर

---

[1] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा, त्रिगन्धा, पृ. 91
[2] मासिक, आउट–पोस्ट, पृ. 43
[3] मासिक – आउट पोस्ट, पृ. 42

भक्तों का अनुगामी मानते हैं, वे अन्तर्मन की बात में कहते है– ''सच मानें तो भक्त नहीं हूँ, भक्तों का अनुगामी अवश्य हूँ तथा स्वयं को उनका चरण सेवक ही मानता हूँ। पीयूषिका में संकलित भक्ति तथा नीतिपरक दोहे, आज के विषम समय में सचमुच बहुत मूल्यवान हैं। 'पद्मभूषण' सुकवि, चिन्तक, राष्ट्र संत स्वामी सत्यमित्रानन्द जी गिरि ने पीयूषिका के दोहों को सराहते हुए लिखा है– ''पीयूषिका के दोहे हृदयस्पर्शी, प्रेरक, भक्ति–प्रवाह में स्नान कराते हैं।''[1]

सात्विक हृदयी पाठकों को इनके अध्ययन से मानसिक शान्ति मिलेगी ऐसा विश्वास है।''[2] पीयूषिका के दोहों को, कवि ने मंगलाचरण, नाम– माहात्म्य, मंगलाचरण, प्रभु महिमा, भक्ति, चेतवावले, संसार, कर्मफल, तुलसी के राम, मन, सेवा, अज्ञान/ आसक्ति, दंभ, अहंकार, दुष्ट, भेद–भाव, रीति–नीति, सदाचरण इन पन्द्रह शीर्षक में विभक्त किया है। मंगलाचरण में कवि दृष्टि परम्परागत है, आपने यहाँ गणेश जी, माँ शारदा तथा गुरु वन्दना के तीन दोहे प्रस्तुत किये हैं। प्रभु महिमा के छियासठ दोहें वस्तु संग्रह में देखे जा सकते हैं। कुछ दोहे देखें–

राम नाम पाथेय ले, चल सीधी ही राह।
सीधे–सीधे यदि चले, राम करे परवाह।।[3]

नीति निपुण पाते दया, दे पापी को दण्ड।
उनके समक्ष टिके नही, रावण के उदण्ड।।[4]

गुण सागर श्री राम है, है उनसा ना अन्य।
वे जिस पर करदें दया, जीवन उसका धन्य।।[5]

---

[1] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा, पीयूषिका – अन्तर्मन की बात, पृ. 6
[2] वही, 'आशीर्वचन' से
[3] वही, पृ. 2
[4] वही, पृ. 2
[5] वही, पृ. 6,

प्रस्तुत दोहे में श्री राम की महिमा और उनके सर्वकल्याणकारी नाम तथा उनके ईश्वर रूप में स्तुति की गयी है। सभी दोहे राम के कृपा निधान स्वरूप को समर्पित हैं –

भले बुरे सब राम के, हैं वे कृपा–निधान।
शरण मिले सबको वही, उनका सरल विधान।।[1]

ऐसे दोहों के संबंध में प्रसिद्ध समीक्षक डॉ. स्वर्ण किरण ने 'नालन्दा दर्पण' में उचित ही लिखा है– 'पीयूषिका' हिंदी जगत में सुपरिचित बहुमुखी प्रतिभा से संपन्न कवि डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा के भक्ति–नीति परक दोहों का एक सुन्दर संग्रह है। नैतिक मर्यादाओं को कुचलने के कारण ही, आज चारों ओर अशान्ति, उपद्रव, हिंसा का ताण्डव नृत्य, लूट–पाट, आपा–धापी आदि देखने को मिल रहे हैं, भक्ति भावना, तुल्य प्रायः हैं, न ही राष्ट्र के प्रति सचेतता है। राष्ट्र प्रेम तो गायब है ही, ऐसे में कवि के दोहे उद्‌बोधन का काम करेंगे। विश्वास होता है। कवि कथन–

जहाँ दृष्टि जाये वहीं, दिखे राम ही राम।
उनके ही सब रूप हैं, सारे नाम–अनाम।।[2]

यहाँ ईसावास्योपनिषद के प्रथम मंत्र ''ईसावास्यमिन्द सर्व यक्तिंचित् जगत्यां जगत् का प्रभाव मालूम पड़ता है।''[3] नाम महात्मय के अन्तर्गत भी ऐसी ही श्रेष्ठ दोहे संकलित है, कुछ दोहें अवलोकनीय है –

मोह निशा से जागकर, जपलें हरि का नाम।
उनकी कृपा के बिना, बने न कोई काम।।[4]

---

[1] वही, पृ, 3
[2] वही, पृ. 3
[3] मासिक नालन्दा दर्पण, जुलाई 2006, पृ. 14
[4] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा, पीयूषिका, पृ. 11

आए दु:ख तब राम कह, दुख जाये तब राम।
रोम–रोम तन–मन खिले, लिये एक प्रभुनाम।।[1]

सरल सहज दोहे प्रसाद गुण से परिपूर्ण हैं इन दोहों में कहीं भी क्लिष्ठता नहीं है। 'भक्ति' शीर्षक के कुछ दोहे उदाहरणार्थ यहाँ प्रस्तुत हैं –

धूप छाँव सब सम लगे, उसको जो प्रभु लीन।
मगन मान, अपमान में, प्रभु–सागर की मीन।।[2]

राम की भक्ति को कवि ने भक्त शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास की तरह अत्यन्त सरल माना है। आप कहते हैं–

राम भक्त पथ अति सरल, सबके लिय समान।
अवरोध खड़े कर बीच में, हम बाँधे बन्धान।।[3]

मानव को चेताते हुए कवि ने कहा है–

जन्म मिला है हंस का, बन मत पापी काग।
बने तो काकभुसिण्ड बन, खेल राम रस फाग।।[4]

सांसारिक संबंधों को अन्य भक्ति कवियों के समान ही, असार माना है। 'संसार' शीर्षक के दिये गये दोहों में दुर्लभ मानव देह पाकर मनुष्य को संसार में रमने के बजाये प्रभु की भक्ति में लीन रहना चाहिए। अहंकार, दुर्बुद्धि से उसे बचना चाहिए, सांसारिक संबंध स्वार्थों पर

[1] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा, पीयूषिका, 11
[2] वही, पृ. 13
[3] वही, पृ. 15
[4] वही, पृ. 18

आधारित है, जबकि ईश्वर से जुड़ना आत्मिक शान्ति का आधार है। कवि कहता है –

आज जुड़ें–कल टूटते, सांसारिक संबंध।
प्रभु से मन यदि जुड़ गया, अमर रहे अनुबन्ध।।[1]

कवि ने संसार में जन्म आधारित ऊँच–नीच की भावना को कहीं भी मान्य नहीं किया है। अच्छे कर्म उच्च व्यक्ति के परिचायक हैं और निकृष्ट कर्म नीच व्यक्ति के सूचक हैं, कवि लिखता है–

नीच–ऊँच में भेद का, नहीं जन्म आधार।
कर्म–कसौटी ही कहे, नीच–ऊँच आधार।।[2]

अछूत वही जो धर्म से, रहे कर्म से दूर।
जन्मा जो कुल निम्न में, उसका नहीं कसूर।।[3]

तुलसी के राम शीर्षक में चार दोहो में कवि ने भक्त शिरोमणि महाकवि गोस्वामी तुलसी दास जी का महत्व स्वीकारते हुए स्पष्टतः स्वीकार किया है, यदि तुलसी राम का गुणगान नहीं करते, तो हम भारतवासी तथा संसार के अन्य लोग भी कदाचित् इसे न पहचानते। तुलसीदास जी ने ही श्री राम का गुणगान कर एक प्रकार से उन्हें अमर कर दिया है–

तुलसी यदि गाते नहीं, राम तुम्हारे गान।
पाते हम परिचय नहीं, राम रूप भगवान।।[4]

---

[1] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा, पीयूषिका, पृ. 19
[2] वही, पृ. 21
[3] वही, पृ. 21
[4] वही, पृ. 22

'मन' शीर्षक के अन्तर्गत भी कवि ने अन्य भक्तों के समान ही मन की मलीनता तथा चंचलता के प्रति संसारियों को चेताया है, आप लिखते हैं –

मन्दिर–मन्दिर भटक मत, मन का भवन बुहार।
मन निर्मल हो जाये जब, प्रभु को तभी पुकार।।[1]

कवि का मानना है कि– ''कामान्ध मन में राम का धाम नहीं हो सकता। 'यदि मन में है काम तो, रहे दूर ही राम' कवि कहता है कि ऐसे विकृत मन को हम भले ही गंगाजल में धो लें या अपने तन का सारा मैल भी दूर कर दें, हमारा मन जब तक मैला है तब तक प्रभु भक्ति का मार्ग हम पा नहीं सकते।''[2] 'सेवा' शीर्षक दोहों में कवि ने सच्चा मानव बनने के लिये सभी से दुःखियों की सेवा करने का आग्रह किया है। किसी को भी कष्ट न देने का उपदेश इन दोहों का मूलमंत्र है।

सब प्राणी है राम के, देना उन्हें न कष्ट।
कष्ट दिया यदि और को, हो जायेगा नष्ट।।[3]

''अज्ञान/ आसक्ति'' शीर्षक दोहों में भी सांसारिक मोह वासना इत्यादि से दूर रहने की प्रेरणा मिलती है। ''दंभ/ अहंकार'' शीर्षक दोहे दम्भियों, अहंकारियों को सावधान करते हैं। 'दुष्ट' शीर्षक दोहों में दुष्ट व्यक्तियों के दुर्गुणों का उल्लेख करते हुए कवि ने धिक्कारा है। 'भेद–भाव' शीर्षक दोहों में कवि ने कहा है कि हमारा व्यवहार भेद–भाव रहित होना चाहिए आप लिखते हैं–

---

[1] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा, पीयूषिका, पृ. 23
[2] वही, पृ. 23
[3] वही, पृ. 27

सूर्य भेद करता नहीं, पवन न जाने भेद।
हमने सबको बाँटकर, बोए भेद–विभेद।।[1]

सभी जानते हैं कि संसार के सभी जीव उस परमपिता परमात्मा की प्रतिछाया हैं, फिर भी हमने ऊँच–नीच जैसे भेद पता नहीं क्यों पाल रखे हैं।

'रीति–नीति/ सदाचरण' शीर्षक के अन्तर्गत भी कवि ने जो नीतिपरक दोहे प्रस्तुत किये हैं, उनमें भी मनुष्य से परिश्रमी तथा सदाचारी बने रहने का आग्रह किया गया है, कवि ने सभी से दंभ विहीन आचरण अपनाने का अनुरोध किया है, उसने संसारियों को चेताते हुए कहा है–

बहुत सो लिया जाग अब, देख निकट है काल।
अब भी यदि चेता नहीं, पड़ी रहेगी खाल।।[2]

कवि कहता है–

भावुकता में बहो मत, बने रहो गम्भीर।
स्थिर चित्त विपदा सहें, अनिष्ट हुए अधीर।।[3]

अन्तिम शीर्षक 'शेष–अशेष' के अन्तर्गत भी इसी प्रकार के नीतिपरक तथा प्रेरणाप्रद दोहे कवि ने प्रस्तुत किये है। वह कहता हैं–

यदि सज्जन हैं आप तो हानि न करे कुसंग।
तारों में दिखती चमक, अन्धकार के संग।।[4]

---

[1] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा, पीयूषिका, पृ. 34
[2] वही, पृ. 36
[3] वही, पृ. 36
[4] वही, पृ. 38

मन निर्मल जिसका उसे, मिलती कृपा अशेष
राम–चरण–छाया मिले, कष्ट न रहते शेष।[1]

एक अन्य दोहे में भक्ति के क्षेत्र में प्रदर्शन और दिखावा मिलने से कवि का मन दुःखी है। जहाँ देखो वहाँ लाउड–स्पीकर लगाकर कीर्तन किया जाता है, तो कहीं रामायण के अखण्ड पाठ में भी भीषण शोर सुनाई पड़ता है, यह सब दिखावा ही तो है। ईश्वर बहरा तो है नहीं जो उसे हम कान फोड़ू शोर करते हुए कीर्तन सुनाएँ–

ढोल नगाड़े पीट कर, संकीर्तन का शोर।
वह तो बहरा है नहीं, क्यों हल्ला घनघोर।।[2]

एक अन्य दोहे में कवि ने महादेव शंकर की परम्परागत दृष्टि से स्तुति की है–

बिन कारण होते द्रवित, शंकर भोले नाथ।
चरणों के रज तिलक से, प्राणी सदा सनाथ।।[3]

कवि स्पष्ट शब्दों में कहता है– ''हमारी जितनी सांसें हैं, वे सुनिश्चित हैं। इसलिये हम सभी को विवेक पूर्वक अच्छे कार्य ही करना चाहिए।''[4]

कवि ने पीयूषिका के सहज सरल दोहों की मूल संवेदना सहज भक्ति को ही माना है। 'अन्तर्मन' की बात में लिखा है–

''ऐसे सहज भक्तिरस की अभिव्यक्ति के लिये मैंने सरल–सुबोध –अभिधात्मक' शब्दावली का ही प्रयोग किया है। अपनी कविता को मैंने

---

[1] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा, पीयूषिका, पृ. 38
[2] वही, पृ. 43
[3] वही, पृ. 44
[4] वही, पृ. 44

कहीं भी कलात्मकता के कृत्रिम रंगों में सज्जित करने की चेष्टा नहीं की है।''[1]

कवि की प्रस्तुति स्वीकारोक्ति से स्पष्ट है कि पीयूषिका के दोहों में कहीं भी क्लिष्टत्व नहीं है। श्री एस.एम. गोयल ने पीयूषिका की समीक्षा करते हुए निष्कर्ष रूप में कहा है– ''अधिकांश दोहे रचनाकार की प्रभु महिमा हेतु समर्पित भावाभिव्यक्ति है और कुछ दोहों में सदा विचारों के प्रति प्रोत्साहित करने का प्रयास है।''[2] ''साहित्य परिक्रमा' के संपादक श्री मुरारी लाल गुप्त ने भी पीयूषिका की समीक्षा करते हुए लिखा है– ''एक से बढ़कर एक चिन्तन परक और नीति परक दोहे रूपी अमृत कण पीयूषिका में संग्रहीत हैं।''[3] डॉ. चन्द्र मोहन मजेजी ने भी पीयूषिका के दोहे को पठनीय काव्य कृति माना है, उन्होंने लिखा है कि मूलतः राम, रामायण और तुलसी ही कवि के आदर्श हैं।''[4] डॉ. रेखा वशिष्ठ ने भी पीयूषिका के दोहों की प्रशंसा करते हुए लिखा है– ''अपने अनुभव की पूँजी को रचनाकार जब भक्ति रस में डुबोकर लेखनी चलाता है, तब जिन मोतियों की सृष्टि होती है वह डॉ. कृष्णमुरारी की पीयूषिका के दाहो बनते हैं। सहज अभिव्यक्ति की कला के माहिर डॉ. शर्मा गूढ़ गम्भीर बात को दो पंक्तियों के दोहों में कहकर अपने सही कवि होने की सार्थकता सिद्ध करते हैं। जीवन मूल्यों से जुड़े इन दोहों पर चढ़ा आध्यात्मिकता का रंग गहरा है।''[5] सुप्रसिद्ध कवि, लेखक एवं समीक्षक श्री नलनीकान्त पीयूषिका के संबंध में इस प्रकार अपना अभिमत प्रकट करते हैं– ''डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा के दोहे कसौटी पर अवश्य ही खरे

---

[1] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा, पीयूषिका, पृ. 7
[2] मासिक अध्यात्मक अमृत, सन् 2006, पृ. 43
[3] दैनिक स्वदेश – अभिनव, पृ. 02, रविवार दि. 02 अप्रैल सन् 2006
[4] दैनिक नव भारत, ग्वालियर, सोमवार दि. 03 अप्रैल 2006
[5] दैनिक नई दुनिया, साहित्य, पृ. 7, दिनांक 08 मई 2006

उतरते हैं, पर इनमें विचारों, उपचारों, उपदेशों का बहुत ही बाहुल्य है। दोहे असाधारण तो हैं, साधारण होते तो सीधे पाठकों के हृदय में घर बना लेते। भक्ति और नीति का विषय अभिनन्दनीय तो है, किन्तु सर्वसाधारण के लिये संवेदनशील नहीं हो पाए हैं। मुरारी जी कवि और भक्त दोनों हैं। उनका भक्त रूप, कवि रूप से अधिक प्रखर एवं प्रमुख है। भक्ति मार्ग की घिसी–पिटी उक्तियों को अक्सर दोहराया गया है। कभी–कभी नव्य सृजन भी झलक उठता है–

कली–कली खिल–खिल कहै, मत इतराये अंध।
कौन जाने किस पल हों, आँखें तेरी बन्द।''।[1]

tUetkr fo"kik;h Bgjs ¼2012½ &

'जन्मजात विषपायी ठहरे' डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा का सन् 2012 में प्रकाशित काव्य संग्रह है, प्रस्तुत संग्रह कवि की कुल 58 कविताएँ संग्रहीत हैं, जिनमें छन्दबद्ध कविताओं के साथ भी छन्द मुक्त छोटी–बड़ी कविताओं के अतिरिक्त कुछ गीत और कुछ हिंदी गजलें भी संकलित हैं। कवि ने इन कविताओं को 'मन से मन का सीधा संबाद' कहा है। आप लिखते हैं– ''मैं व्यवसाई कवि नहीं हूँ।'' जब जैसी भावनाएँ, विचार, अनुभूतियाँ घनीभूत होकर मुझे लिखने के लिये प्रेरित करती हैं, वैसा ही जब–तब मैं लिख लेता हूँ। प्रयत्न पूर्वक मैं कुछ नहीं लिखता।''[2] कवि सहज कविता का पोषक –पक्षधर है, आप लिखते हैं– ''मेरा मानना है कि कविता को सहज ही होना चाहिए। मस्तिष्क खुरच–खुरच कर लिखी जाने वाली कविता चमत्कृत को कर सकती है पर सहृदय के मन को छू नहीं सकती। मेरी इन सहज कविताओं का

[1] मासिक कविता श्री अडाल, पष्चिम बंगाल, सम्पादक नलनीकान्त, अप्रैल 2006
[2] जन्मजात विषपायी ठहरे, मेरे ये कविताएँ पृ. 5

प्रेष्य सहज है और प्रेषण साधन भी सहज ही हैं, देश और आदमी ही मेरी समस्त चिन्ताओं के केन्द्र में सदैव से ही रहे हैं। मेरी प्रायः सभी कविताएँ इन्हीं के आस–पास घूमती हैं। विगत लगभग पाँच दशकों में आम आदमी तथा राष्ट्र से संबद्ध तमाम मीठे–कड़वे, अनुभव, उतार–चढ़ाव, हर्ष–विषाद, आँसू–उमंग और ऐसा ही सब कुछ इन कविताओं के रूप में प्रगट हुआ है।''[1]

आलोच्य संग्रह की प्रथम कविता 'शिल्पी हूँ' कविता कवि के मानस का दर्पण ही है। प्रस्तुत रचना में कवि की मान्यताओं, आदर्शों, विश्वासो, कल्पनाओं इत्यादि का स्पष्ट दिग्दर्शन हुआ है, कवि ने स्वयं से सभी को बड़ा मान्य किया है। और कहा है कि वह सभी के कांटों को चुन लेना चाहता है– सभी का मार्ग अकंटक हो, ऐसी कामना करता हूँ–

मैं छोटा हूँ, सभी बड़े मुझसे,
पर दाता हूँ, माँगा किस से ?
अनुचित को, पचा नहीं पाता,
ऋणी उसका नेह मिला जिससे।
काँटे मेरे फूल सभी के,
नवाजी हूँ, ऐसी नवाज का,
मैं शिल्पी हूँ, नव समाज का'[2]

असहाय और विवश लोगों की पीड़ा कवि महसूसता है– पीड़ित, सर्वहाराओं के आँसू पौंछने को वह हमेशा तत्पर रहता है।''[3]

---

[1] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा, जनमजात विषपायी ठहरे, पृ. 5
[2] वही, पृ. 7
[3] वही, पृ. 8

प्रेम वसा मेरी भाषा में,
शिवं रमा मेरी गाथा में,
सहज जात, सरलता रुचती है,
आशा थित मेरी, आशा में।[1]

उसे समाज में व्याप्त छद्म शिष्टता, दंभ, अहंकार, संग्रह, वृत्ति से बहुत चिड़ है–

छद्म शिष्टता से चिढ़ मुझको,
दंभ तिक्तता से चिढ़ मुझको,
बहुरूपियापन वरेण्य नहीं,
संग्रही रिक्तता से चिढ़ मुझको।
मैं हूँ शंकर हलाहलपायी,
श्रम ही रत्न मेरे ताज का,
मैं शिल्पी हूँ नव समाज का।[2]

संग्रह की कविताओं के संबंध में डॉ. अवधेश कुमार चन्दसौलिया लिखते हैं – ''डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा के काव्य में कथ्य और शिल्प का सुन्दर तादात्म्य और समन्वय उपस्थित हुआ है, भाषा सहज, सरल और कथ्य के अनुरूप और शैली में प्रवाह है। प्राध्यापक होते हुए भी ये शब्द क्रीड़ा में विश्वास नहीं करते, वरन, रोजमर्रा के प्रचलित शब्दों को सतर्कता और विवेक सम्मत ढंग से प्रयुक्त कर कथ्य को सहज संप्रेषणीय बनाते हैं, उनकी संवेदनाओं में गत्यात्मकता का भाव है, इसलिये वे सहृदय को आसानी से प्रभावित करने में सक्षम हैं।''[3]

---

[1] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा, जनमजात विषपायी ठहरे, वही, पृ. 9
[2] वही, पृ. 9
[3] दैनिक सांध्य समाचार ग्वालियर, 25 नवम्बर, 2012

''तृप्ति
फूलों की गन्ध है भीनी–भीनी
मकरन्द है भीना सलौना
जिस पर विमुग्ध
तितली कोई इठलाती–थिरकती है
तृप्ति
तिजोरी में भरे
स्वर्ण–सिक्कों की खनक नहीं है
सुरा–चषक
पायल की छनक नहीं है
वह तो
शिशु की किलकारी है।
नेह–रंगों की मादक पिचकारी है।''[1]

एक अन्य छन्दयुक्त कविता 'कर्म गीता गुनगुनाओंगे तो सुनूँगा' संग्रह की एक श्रेष्ठ रचना है, जिसमें कवि ने राष्ट्र निर्माण में जुटे रहने की प्रतिबद्धता को साकार रूप दिया है, उसमें समरसता का सन्देश है। समता सौहार्द की अनुगूँज है –

मैं लगा हूँ आज
बिखरी माला के मनके–
पिरोने में
और उस धुँधली पड़ी तस्वीर को
फिर से सँजोने में
मेरी प्रतिज्ञा है

[1] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा, जन्मजात विषपायी ठहरे, पृ. 11

मन्दिर की हर हिलती ईंट को
फिर से जमाऊँगा
मैं जुटा हूँ आज
आँगन को एक सा कर दूँ
जहाँ–तहाँ पड़ी दरारें भर दूँ।''[1]

'आदमी में जंगल' शीर्षक रचना भी संग्रह की छन्द मुक्त कविताओं में से एक श्रेष्ठ रचना है, प्रस्तुत रचना में आज के आदमी के काँटेदार चरित्र इसकी स्वार्थवृत्ति दूसरों की आँखों में धूल झोंकने की आदत तथा ऐसी ही कलुष वृत्तियो का भावमय उल्लेख किया है, कवि लिखता है–

अपने बाहर–भीतर
उसने टाँक रखे हैं
कागजी फूल,
जिन पर
हवाओं का रूख भांप कर
छिड़क लेता है
मौसमी सैण्ट।''[2]

'रुद्ध क्यों तेरी बोली ? शीर्षक कविता भी छन्द मुक्त रचना है, जिसमें कवि आज के आदमी को द्वेष, बैर, अहंकार, हिंसा इत्यादि बुराईयों से दूर रहने का आग्रह करता है, बह आदमी से प्रश्न करता है–

[1] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा, जन्मजात विषपायी ठहरे, पृ. 15
[2] वही, पृ. 19

सोच तो
क्या कभी मिली है तुझे दुआ–
किसी भूखे की
क्या कभी थामी है बाँह–
किसी निरीह की
क्या कभी उठाया है किसी गिरे को
किसी अन्धे की लाठी बना है क्या कभी
किसी भटके शिशु को
क्या कभी मिलाया है माँ से उसकी?'[1]

'जगाएँ आदमी को', 'उत्तराधिकारी हो प्रताप के', 'रेखाचित्र बन गया आदमी', 'जवाब दो', 'पूरी कहानी', 'विनाश ताण्डव', 'सांसारिकता', 'दीपावली'– तीन चित्र, 'मन हुरिहारा हो तो होली है', 'हरिद्वार में गंगा', 'विस्तार मै का', 'म–कार बनाम मक्कार', 'सबका नमन', 'अनाथालय में तीन बच्चे', 'सुधि', 'भिखारी की आत्मकथा', 'पूर्ण विराम', 'जिन्दगी यानी एडजस्टमेन्ट', 'जन्मदिन उनका', 'आम बात', 'धरती तो जानी नहीं' तथा 'निराला के प्रति' इत्यादि प्रस्तुत संग्रह की छन्द मुक्त सहज कविताएँ हैं, प्रायः सभी में क्षयी वातावरण और मूल्यों के हरास, कवि की चिंतातुर वाणी मुखर हुई है। डॉ. कामायनी ने 'जन्मजात विषपायी ठहरे' शीर्षक से प्रस्तुत संग्रह की समीक्षा करते हुए लिखा है– ''राग और आग के बिना जीवन का कोई अर्थ नहीं होता, डॉ. शर्मा की कविता में राग है समाज के प्रति आग है विद्रूपताओं और विकृतियों की तरफ। आस्था, अस्तित्व और अस्मिता की साक्षी है, ये कविताएँ। सत्य को शिव और सुन्दर से सुसज्जित करना ही कवि का

[1] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा, जन्मजात विषपायी ठहरे, पृ. 23

उद्देश्य है। डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा की कविताएँ देश, काल, समाज तथा आम आदमी की बात करती हैं। इसी से उन्हें सामाजिक, कवियों में शामिल किया जा सकता है, उनकी कविता समय की कविता है– उनकी कविता सबकी कविता है। यहाँ केन्द्र में आम आदमी है, मन का मन से संवाद है। आदमी से जुड़े सहज भाव जमीन से जुड़ी अनुभूतियाँ, ललकारती सी विचारधारा, मूल्यों के रक्षा की चिन्ता, कविता का विवेक है, चिन्तन कविता की आत्मा है, जड़ता को तोड़ने का प्रयास है। जीवित सामाजिक सरोकार है, दर्द और आक्रोश भी है।''[1]

आलोच्य संग्रह में मन दुःखता है, उम्र भले छोटी मिले, 'जन्मजात विषपायी ठहरे', 'क्यों अस्त है आदमी', 'चीखें बहुत', 'जगती से जीवन लिपट रहा है', 'यौं ही', 'पाप से डरो', 'छिपाए हैं छुरी', 'सूर्य भी लाल है', 'चाँदनी बन बिखर जायें', 'सब पता है तुझे', 'हर प्रश्न का जवाब बन जाये', 'दीवाली मनाली है', 'आग है तो वह जलाएगी ही', 'टुकुर–टुकुर देखें भगवान', 'अब न रहा कोई अनमोल', 'निर्णायक बन बैठा कौओं का समाज', 'हर पंक्षी है अधीर', 'आज कैसा हो गया आदमी', 'काले हैं आचार में', 'यहाँ सब चलता है', 'गाँधी को बिलखना है जरूरी', 'मातृभूमि पर न चढ़ाए जब तक', 'देश के लिये जिये' तथा 'बेशर्म परत गला रे', इत्यादि हिंदी गजलें देश और समाज के प्रति कवि की सामाजिक, राष्ट्रीय चेतना को अभिव्यक्ति देती हैं। इन रचनाओं के संबंध में प्रो. डॉ. प्रमिला मजेजी लिखती हैं– ''चालाकी छल, कपट, मक्कारी के प्रति कवि का आक्रोश निरन्तर बना हुआ है, लेकिन कवि जीवन की इन दुःखद स्थितियों को अप्रिय नहीं मानता। कवि के भीतर का जीवन दर्शन मानकर ही चलता है कि ये सब तो हमारे जीवन के

[1] दैनिक आचरण, ग्वालियर, 18 नवम्बर 2012

अभिन्न साथी हैं। ये स्थितियाँ जीवन संघर्ष के लिये प्रेरित करती हैं। इन्हीं स्थितियों के विराधे में अभिनव संकल्प और दृढ़ता जन्म लेती है।... ..... कवि की सामाजिक, राष्ट्रीय चेतना असंदिग्ध है ही। उनका उत्कट राष्ट्र प्रेम और राष्ट्र के प्रति कर्तव्य का उद्घोष 'देश के लिये जिये' एवं 'मात्रभूमि पर न चढ़ाए जब तक' जैसी कविताओं में स्पष्ट सुनाई देता है। 'पथरीला आदमी', 'कंटीला आदमी', 'लोभ रथी', 'रोटियों का सैण्ट', 'भूखे ज्वालामुखियों का लावा', 'तितलियों की जगह ले रहे साँप' जैसी अभिव्यक्तियों में नवीनता अपने सहज स्वाभाविक रूप में स्वतः सिद्ध सार्थकता के साथ परिलक्षित होती हैं जगत का कोहराम और कवि का स्वाभिमान शीत युद्ध एवं 'जन्मजात विषपायी ठहरे' पंक्तियों में दृष्टव है।''[1] प्रस्तुत संग्रह में मात्र दो उत्कृष्ट गीत भी संकलित हैं।

बिखर रही रजत, निखर रही, रात–चाँदनी रात, सुकोमल अनुभूतियों का गीत है, इसके विपरीत 'शीत युद्ध' शीर्षक विशाक्त वातावरण को कुरेदने का प्रयास किया है। दैनिक 'नई दुनिया' इन्दौर ने अपने साप्ताहिक 'तरंग' में कृति की समीक्षा करते हुए लिखा है– ''कवि की चिन्ता के केन्द्र में 'आदमी' और 'देश' सदैव बने चले आए हैं। श्री कृष्णमुरारी शर्मा कहते हैं– ''विगत पाँच दशकों में आम आदमी तथा राष्ट्र से संबंध, तमाम मीठे, कड़वे अनुभव, उतार–चढ़ाव, हर्ष,–विषाद, आँसू–उमंग इन कविताओं में प्रगट हुआ है।''[2] सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. रामनाथ त्रिपाठी (दिल्ली) ने इन कविताओं के संबंध में लिखा है– ''ये कविताएँ प्रेरक हैं। कई स्थलों पर लगा है कि आप मेरी अनुभूति को स्वर दे रहे हैं।''[3] ऐसे ही एक व्यक्तिगत पत्र में पद्मभूषण स्वामी

---

[1] त्रैमासिक लोक यज्ञ, अप्रैल–मई–जून, 2013, पृ. 27
[2] दैनिक नई दुनिया, इन्दौर, 'तरंग', 21 अक्टूबर 2012
[3] डॉ. शर्मा को लिखित व्यक्तिगत पत्र, दि. 07. सितम्बर 2012

सत्यमित्रानन्द गिरि ने लिखा है– ''शिल्पी हूँ'' शीर्षक कविता मानव को आश्वासन देती है कि सदैव निरभिमान रहकर संक्रमण काल में नये समाज निर्माण में सतत् प्रत्यनशील रहना है। मनुष्य और मनुष्यता के प्रतिकूल आचरण करता है, तो सात्विक मन दुःखी होता है। यह स्वाभाविक है– 'मन दुःखता है' कविता यही सन्देश देती है'' 'उम्र भले छोटी मिले' कविता प्रेरणा देती है कि जननी, जन्मभूमि से नहीं बड़ा कुछ, उत्कर्ष, को चोटी मिले, आनन्द है, आत्मोत्कर्ष को चोटी पर पहुँचाने के लिये परमात्मा से प्रार्थना करते रहना चाहिए– यही आधार है और अधिकार भी।''[1]

'k"k&v'k"k ¼vi:dkf'kr dk0; l:xg½ &

शेष–अशेष प्रो. कृष्णमुरारी शर्मा का अप्रकाशित काव्य संग्रह है, जिसमें आपके विगत लगभग पाँच वर्षों में रचित श्रेष्ठ मुक्तक, विविध भावों, विचारों पर केन्द्रित दोहे, कुछ हिंदी गजलें तथा कुछ छन्दमुक्त रचनायेँ, संकलित हैं, प्रस्तुत संग्रह की पाण्डुलिपि पूर्णतः व्यवस्थित नहीं है। डॉ. शर्मा की एक डायरी में अप्रकाशित दोहे उपलब्ध हैं, एक अन्य डायरी में आपके मुक्तक लिखित हैं तथा दो–तीन अन्य डायरियों में आपकी अप्रकाशित रचना प्राप्त होती है, डॉ. शर्मा ने यद्यपि शेष–अशेष की भूमिका तो एक डायरी में लिख रखी है। किन्तु प्रस्तुत संग्रह के प्रकाशन की उचित व्यवस्था न हो सकने के कारण अभी पाण्डुलिपि को व्यवस्थित रूप नहीं दिया जा सका है। संग्रह की भूमिका में डॉ. शर्मा लिखते हैं– ''उत्तरवय में रचित दोहे, मुक्तक, कुछ कविताएँ मैंने शेष–अशेष संग्रह में प्रकाशनार्थ अलग–अलग डायरियों में लिख रखे हैं। कहीं से प्रकाशन की कोई उचित व्यवस्था नहीं हो सकी है। इसलिये

[1] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा को लिखित व्यक्तिगत पत्र, दि. 16, 2012

ऐसा प्रतीत होता है कि मेरी ये रचनायेँ कदाचित प्रकाशित संग्रह का रूप नहीं ले सकेंगी। बार्धक्यजन्य क्षीणता तथा मन में कोई उमंग भी शेष न रहने के कारण अब नया सृजन भी हो नहीं रहा।''[1]

यहाँ कवि के अप्रकाशित दोहों, मुक्तकों तथा रचनाओं का क्रमशः संक्षिप्त समीक्षात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया जा रहा है। डॉ. शर्मा हिंदी खड़ी बोली के वरिष्ठ दोहाकार हैं, आपके कई दोहा संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। शेष–अशेष में भी संकलित दोहे भी प्रायः उन्हीं समस्त भाव भूमियों पर ही रचित हैं। देश और समाज में व्याप्त दिशा हीनता, नैतिक मूल्यों में गिरावट, जीवन के आदर्श मूल्यों में निरन्तर होता ह्यास, बेईमानी, भृष्टाचार, लूट–खसोट, मिलावटखोरी, धोखा, द्वेष, फूट, अलगाव, कर्तव्य विमुखता, देश प्रेम का अभाव, इत्यादि के अतिरिक्त प्रदूषित राजनीति तथा उसके भयावह दृष्परिणामों के संग्रह में डॉ. शर्मा ने अनेक दोहे यहीं लिखे हैं, आपके कुछ दोहे आध्यात्मिक, ईश चिन्तन परक भी हैं, दोहों की भाषा सहज सरल है। उनमें कहीं भी क्लिष्टता अथवा दुरुहता का बोझीलापन नहीं है। कुछ दोहे देखिए–

जीवन जीना है कठिन, बड़ा कपट आचार।
अमृत कह कर दे जहर, ऐसा है संसार।।[2]

अपने ही अब छल करें और की क्या बात।
वध कर दें धन के लिये, कौन बन्धु या तात्।।[3]

एक अन्य प्रेरक दोहा भी देखें–

---

[1] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा, शेष–अशेष, (अप्रकाशित), भूमिका से
[2] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा, शेष–अशेष (अप्रकाशित) काव्य संग्रह से
[3] वही

गंगा से पावन बनों, सागर से गम्भीर।
कोयल बन गाते रहो, सबके मन की पीर।।[1]

इसी क्रम में प्रस्तुत दोहा भी अवलोकनीय है–

वीरप्रताप से बनो, बनो शिवा तलवार।
बनो आजाद, भगत से, बनो सिंह अवतार।।[2]

आपने नैतिक मूल्यों की भी जहाँ तहाँ अपने दोहों में वकालत की है, आप लिखते हैं–

नैतिक बल जिसमे नहीं, भले रहे बलवान।
उसे न कोई मान दे, और न दे अधिमान।।

मानव की लोभवृत्ति पर प्रहार करते हुए आप लिखते हैं –

जीवन बगियाँ सूखती, लगते लोभ ब्यार।
धर्म–कर्म से सींच कर, कर उसका उद्धार।।[3]

मानव को अहंकार, अकड़, दुरभिमान का परित्याग करने के लिये कवि कहता है–

मानव हो पत्थर नहीं, भरी अकड़–अभिमान।
धूप पचा जीवन जियो, लिखकर कमल समान।।[4]

मानव को अपने सहज रूप में रहने की सहज प्रेरणा आपने अपने अनेक दोहों में दी है। आप मानते हैं कि आज का मनुष्य चेहरे पर चेहरे चढ़ाए हुए है तथा छल–कपट का जीवन जी रहा है। आज सच्चे मानव को पहचानना बड़ा कठिन हो गया है–

---

[1] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा, शेष–अशेष (अप्रकाशित) काव्य संग्रह से
[2] वही
[3] वही
[4] वही

पहचानें कैसे किसे, कितना किसका पाप।
कैंचुल ओढ़े आदमी, है विषधर का बाप।।[1]

परोपदेशक तथा मिथ्याचारी सब जगह देखने को मिलते हैं, दूसरों को उपदेश देना और खुद आचरण न करना यही आज जीवन का मूल प्रयोजन बन गया है। कवि कर्म को जीवन में महत्व देता है, एक श्रेष्ठ दोहे में आपने लिखा है– कर्मों की स्याही से ही जीवन का अखबार छपता है–

जन्म–मरण के बीच है, दिवस मास तिथि बार।
कर्मों की मसि से छपे, जीवन का अखबार।।[2]

जो जीवन में कष्टों की तपन सहता है, वही कुंदन सी चमक पा सकता है–

जो तपता पाता वही, कुंदन सी चमकार।
धूप तपे पर ही मिले, पावस की जलधार।।

प्रकृति चित्रण परक दोहे भी डॉ शर्मा ने बहुत लिखे हैं, ग्रीष्म ऋतु के आप और चुभती धूप से संबंधित धूप दोहे दिखेंगे–

सघन सजीली बल्लरी, कोमल–कोमल फूल।
कड़ी धूप में सूखकर, चाट रहे सब धूल।।[3]

लतिकाएँ मुर्झा रही, विटप हुई बदरंग।
धूप चुनौती दे रही, लेकर लू को संग।।[4]

---

[1] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा, शेष–अशेष (अप्रकाशित) काव्य संग्रह से
[2] वही
[3] वही
[4] वही

वर्षा, शीत, शरद और बसन्त ऋतु के चित्रण में भी कवि का मन खूब रमा है, शीत के प्रकोप का उल्लेख निम्न दोहे में देखिए–

सिंहरन, ठिठुरन दे रही, चुभन भरी यह ठण्ड।
पानी तक पिबता नहीं, विधि का कैसा दण्ड।।[1]

डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा ने भृष्टाचार को खाओवाद नाम दिया है, आपका मानना है कि आज देश और समाज के कण–कण में खाओवाद पूरी तरह से रच बस गया है। आप लिखते है। कि बिना कुछ किये ही खाओवादी लोग धनवान होने के लिये अत्यन्त भृष्ट तरीके अपना रहे हैं, जिससे भारत जननी के सम्मान को बहुत ठेस पहुँच रही है, कवि दुःखी मन से कहता है–

खाओवादी बढ़ रहे, भृष्टों की भरमार।
भारत जननी है दुःखी, करे कौन उद्धार।।[2]

डॉ. शर्मा के ऐसे ही विषयों पर लिखित व्यंग्यात्मक दोहे भीअचूक हैं, आप लिखते हैं –

राम तुम्हारे देश में, मचा अजब अन्धेर।
रबड़ी गधे चर रहे, उनके हाथ सुमेर।।[3]

राम तुम्हें नकार कर, फूँक रहे जो शंख।
बजे हवा से और की, कोरे डापोल शंख।।[4]

---

[1] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा, शेष–अशेष (अप्रकाशित) काव्य संग्रह से
[2] वही
[3] वही
[4] वही

आज समाज में झूठ बोलने वाले दुराचारी, कदाचारी इतने बढ़ गये हैं कि सदाचरण करने वालों को कोई महत्व नहीं देता निरीह जन दुःखी है–

निरीह सच बोलो भले, आज न उसका अर्थ।
ठेठ झूठ भी सच बने, कह दे जिसे समर्थ।।

माओवाद और खाओवाद ने देश को चौपट कर दिया है–

माओवादी साँप हैं, खाओवादी नाग।
चप्पे–चप्पे में लगी, आज विषैली आग।।[1]

कुछ अन्य दोहे में कवि ने दो टूक शब्दों में खाओवाद की निन्दा करते हुए लिखा है–

गाँव नगर सरकार में, पसरा खाओवाद।
फल देता श्रम के बिना खाओवादी खाद।[2]

माओ, नक्सल वाद या जाति–भतीजावाद।
घातक इतना कुछ नहीं, जितना खाओवाद।।[3]

खाओवाद जैसी विकृतियों पर कवि ने अनेक स्थलों पर सीधे–सीधे तीक्ष्ण प्रहार किये हैं, ऐसा ही एक व्यंग्य और देखें–

बकरी को चारा नहीं, चरे मलाई साँड़।
अनगिनत हैं साँग अब, भाँति–भाँति के भाँड़।।[4]

---

[1] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा, शेष–अशेष (अप्रकाशित) काव्य संग्रह से
[2] वही
[3] वही
[4] वही

ऐसे पैने दोहों के अतिरिक्त जल की महिमा के दोहे भी बहुत अच्छे बन पड़े हैं, कुछ दोहे देखिए–

कोयल की कलिका कली, मधुर पपीहा तान।
जड़ चेतन सब गा रहे, जल के ही गुणगान।।[1]
जल ले सागर से उठें, गाएँ मेघ मल्हार।
धरा वधु नर्तन करे, रोम–रोम श्रृंगार।।[2]

ऐसे ही मन को भाने वाले आपके शब्द महिमा के दोहे भी पठनीय हैं। उदाहरणार्थ दो दोहे देखें–

आँधी रहती शब्दों में, उसमें रहती आग।
मरहम घावों पर बने, यदि उसमें अनुराग।।[3]

शब्दों में दुर्जन प्रकट, शब्दों में ही संत।
'अमीय हलाहल मद भरे' महिमा शब्द अनन्त।।[4]

e|äd&

चार पंक्तियों की एक छोटी सी पूर्ण रचना को मुक्तक कह सकते हैं, मुक्तकों को रूबाई तथा चतुष्पदी भी कहा जाता है, मुक्तक का अर्थ या आशय जानने के लिये पूर्वा पर संबंध जानने की आवश्यकता नहीं पड़ती। भाव–विचार की प्रभावशाली अभिव्यक्ति के कारण मुक्तकों को प्रभावशाली रचना के रूप में मान्यता प्राप्त है। दोहे भी मुक्तकों की श्रेणी में आते हैं। शेष–अशेष में संकलित मुक्तकों का यहाँ सम्यक

[1] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा, शेष–अशेष (अप्रकाशित)
[2] वही
[3] वही
[4] वही

अध्ययन करने का प्रयास किया जा रहा है। देशभक्ति पूर्ण दो मुक्तक यहाँ प्रस्तुत है–

देश पर यहाँ अभिमान किया जाता है
बलिदानों का सम्मान किया जाता है।
बुजदिली यहाँ के खून में है ही नहीं,
शत्रु तक को अभय दान दिया जाता है।[1]
देश ही है सबसे महान जिसके लिये,
है ईमान ही भगवान उसके लिये।
प्राणों पर संकट मण्डराये कितने भी,
विकराल भी हैं, वरदान उसके लिये।[2]

इसी प्रकार का एक अन्य मुक्तक भी देखें–

श्रम और ऐक्य से देश का उत्थान होता है,
आतंक–अलगाव से तो देश वीरान होता है,
धन की भी चाह करे उतनी कि काम न रुके कोई,
मनुष्य तो केवल मनुष्यता से ही धनवान होता है।[3]

आत्मा परिचय का एक मुक्तक भी देखिए–

अखबार हूँ, जो रोज लिखा जाता है
दर्पण हूँ जो यथार्थ दिखा जाता है।
आँसू, फूल, आग– सब लिखती है कलम,
विचार हूँ जो जीना सिखा जाता है।[4]

---

[1] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा, शेष–अशेष मुक्तक खण्ड से
[2] वही
[3] वही
[4] वही

डॉ. शर्मा ने हताश–निराश लोगों के लिये अनेक प्रेरक मुक्तक लिखे हैं–

चल पड़ा है तो बीच में रूकना नहीं,
लक्ष्य से भटकें तीर सा चुकना नहीं।
पहले स्वयं को जाँच ले अच्छी तरह,
कभी वैशाखी थामने झुकना नहीं।[1]

एक अन्य मुक्तक भी अवलोकनीय है–

ऊपरी तना सींचने से कुछ होगा नहीं,
लेटे–बैठे सोचने से कुछ होगा नहीं।
नीयत लक्ष्य छूने चलना पड़ेगा शक्तिभर,
ऊँगली पर कोश गिनने से कुछ होगा नहीं।[2]

'शेष–अशेष' में व्यंग्यात्मक मुक्तक भी बहुत है चाटुकारों पर प्रहार करते हएु कवि लिखता है–

भीड़ है सर्वत्र रागदरबारी गायकों की,
अपनी पालकी में हुजूरों के चायकों की।
चरण चुम्बकों की लम्बी कतारे हर जगह,
रोक देती है, राहें सुयोग्य लायकों की।[3]

महँगाई तथा मुनाफा खोरी पर कवि ने सीधे–सीधे तीक्ष्ण प्रहार किये हैं, आप लिखते हैं –

महँगाई सर्पणी सी फुफकारती,

---

[1] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा, शेष–अशेष मुक्तक खण्ड से
[2] वही
[3] वही

सपेरे उतारते मंगल आरती।
गरीब बेचारा मर रहा असमय,
कुर्सी आश्वासनों से पुचकारती।[1]

कवि ने आज के मानव को बहुत कमजोर मानते हुए स्वीकारा है कि आज का आदमी कर्तव्य विमुख है। अवसरवादी है और बेईमान भी। क्षोभ भरे शब्दों में कवि लिखता है –

जो जहाँ पर है, वह वहीं पर चोर है,
सरासर करे गलती पर मुँह जोर है।
ईमानदारी मजाक बनकर रह गयी,
आदमी जीवित लाश बहुत कमजोर है।[2]

कवि ने जीवन में ईमानदारी तथा कर्तव्य निष्ठा अनिवार्यता को सर्वत्र स्वीकार किया है। ऐसे अनेक मुक्तक हैं, जिनमें कवि ने ईमानदारी का महत्व स्पष्टतः स्वीकार किया है–

ईमानदारी में चमक और ही होती है,
गुणी–कलावंत में खनक और ही होती हैं
बुराई तो बुराई है वह छुप नहीं सकती,
उसमें बू और भनक और ही होती है।[3]

आपके मुक्तक सीधे मन को छूते हैं। उनमें सरलता–तरलता है। जहाँ–तहाँ प्रयुक्त मुहावरों में उन्हें और भी प्रभावशाली बना दिया है, निम्नलिखित मुक्तक देखें–

ऊपर उठने में बहुत समय लगता है,

---

[1] वही
[2] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा, शेष–अशेष मुक्तक खण्ड से
[3] वही

नीचे गिरने में कम से कम लगता है।
नाम पाने प्राण तक होमने पड़ते हैं,
पर बदनाम होने में क्या लगता है।[1]

सदाचरण तथा धर्म में आस्था तथा विश्वास को जीवन के लिये अनिवार्य माना है। धर्म को परिभाषित करते हुए कवि लिखता है–

धर्म और कुछ नहीं, शुद्ध आचरण है,
जीवन का मर्म है, मन जागरण है।
किसी को सताए बिना रहे हिल–मिल
धर्म जीवन का पावन व्याकरण है।[2]

कवि ने वेदना और पीड़ा को मनुष्य जीवन से कभी पृथक् करके नहीं देखा, कवि ने सर्वत्र वेदना के क्षणों का स्वागत ही किया है–

दग्ध पीड़ा की आग ने किसको जलाया नहीं है,
वेदना ने भीतर–बाहर किसको गलाया नहीं है,
आँधी में बिखरे तिनके जोड़ लें पंक्षी की तरह,
आदमी है कौन, जिसे दर्द ने रुलाया नहीं है?[3]

कवि ने वर्तमान दूषित राजनीति, कथित नेताओं के दुश्चरित्र बेईमानी, लूट–खसोट आदि पर भी अनेक तीक्ष्ण प्रहारक मुक्तक लिखे हैं, ऐसे मुक्तकों ने कवि का रोष, क्षोब, स्पश्टतयाः देखा जा सकता है, तथापि सर्वत्र, संयत और मर्यादित भाषा का ही प्रयोग किया गया है, इस दृष्टि से शेष–अशेष के मुक्तक विशेष रूप से मूल्यवान हैं।

---

[1] वही
[2] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा, शेष–अशेष, मुक्तक खण्ड से
[3] वही

dfork,j &

काव्य संग्रह शेष–अशेष में संकलित जो कविताएँ हैं, उनके भाव, विचार, कथ्य, सत्य, अभिव्यक्ति की भंगिमाएँ सभी कुछ लगभग 'जन्मजात विषपायी ठहरे' तथा अन्य काव्य संग्रहों में संकलित कविताओं जैसी ही है। यहाँ प्रस्तुत काव्य संग्रह की कविताओं का समीक्षात्मक आंकलन करने का प्रयास किया जा रहा है।

प्रस्तुत संग्रह में जो छन्द मुक्त कविताएँ संकलित हैं, उनमें 'सड़क किनारे का पेड़', 'ज्वलंत प्रश्न', 'गौमाता सहज है' और इनमें भावों तथा विचारों की अभिव्यक्ति भी एक दम सीधी, सपाट है।

'ज्वलंत प्रश्न' शीर्षक रचना में कवि ने वर्तमान जाति आधारित आरक्षण की नीति से स्पष्ट शब्दों में असहमति प्रकट की है। कवि ने स्वीकार किया है कि शताब्दियों पहले हमारे किन्हीं पूर्वजों का शोषण, उत्पीड़न, अनादर किया होगा किन्तु आज स्वतंत्रता प्राप्ति के सात दशकों बाद वैसी स्थिति कहीं भी कतई नहीं है। जब सभी देशवासियों की संततियों को आज पढ़ने–बढ़ने के समान अवसर प्राप्त हैं, तब ऐसे आरक्षण से समाज में भेद–भाव ही उत्पन्न होगा तथा उच्च वर्ग के प्रतिभाशाली बालकों का जीवन ही बर्वाद हो जायेगा।

सभी है जब समान
सभी को पढ़ने–बढ़ने के अवसर हैं समान
तब क्यों
तबके कथित पीड़ितों की संतान को मिला है
आज संरक्षण विशेष
कथित शोषितों की प्रतिभावान संतानों के सारे प्रगति मार्ग

हर ओर से
क्यों अवरुद्ध कर दिये गये हैं आज
क्या अपराध है, इस पीढ़ी का ?[1]

'पहले भीतर देखें' शीर्षक रचना में कवि ने सभी से आग्रह किया है, बाहर की साफ–सफाई की अपेक्षा अन्तर्मन की शुद्धता ही मूल्यवान है। कवि कहता है–

तन उजला करने से,
होगा क्या,
पहले अन्तर्ज्योति जाग्रत करें
तब ललकारें
बाहरी अन्धेरों को[2]

'शुभ दीपावली' शीर्षक रचना में डॉ. शर्मा ने दिखावटी दीपावली मनाने की अपेक्षा असहायों, निरुपायों की सहायता करेन को अधिक मूल्यवान माना है। आप कहते हैं–

चले वहाँ / जहाँ असहाय किलकारियाँ
रूदन, अश्रु, सिसकारियाँ
उन्हें मा सा दुलार दें
पिता के प्यार सी फुहार दें,
वहाँ चलें / जहाँ निरुपाय सी,
खदवदा रही है भूख
कर सकें तो / उसके लिये करें कुछ।[3]

---

[1] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा – शेष–अशेष (कविता खण्ड से)
[2] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा – शेष–अशेष (कविता खण्ड से)
[3] वही

''सड़क किनारे का पेड़' शीर्षक कविता में कवि का सूक्ष्म पर्यवेक्षण–निरीक्षण देखते ही बनता है। कुछ पंक्तियाँ दृष्ट्व्य हैं –

सड़क किनारे खड़े–खड़े,
मैंने देखा है, भूखों–प्यासों को,
भूले–भटकों को भी,
देखे हैं मैंने अच्छे भले मानुष,
चोर, उचक्के, लुटेरे भी देखे हैं,
निरप्रेक्ष्य भाव से देखता रहता हूँ सबको,
भेद–विभेद अर्थहीन है मेरे निकट,
ऐसी दृष्टि तो मनुष्य की ही होती है।[1]

डॉ. उपेन्द्र विश्वास ने अपने शोध प्रबन्ध में 'ग्वालियर के साहित्यकार डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा को सहज कविता का पुरोधा कहा है– ''सचमुच ऐसी कविताएँ उनके सरल सोच और अभिव्यक्ति की सहजता का ही प्रमाण हैं।''[2]

प्रस्तुत संग्रह में जो हिंदी गजलें संकलित हैं उनमें मुख्यतः व्यंग्य का स्वर ही प्रबल है। आज के मिथ्याचारी आदमी पर व्यंग्य प्रहार करते हुए आप लिखते हैं –

आदमी तो बोना सा ही हो गया है,
जबकि कुकुरमुत्ता हवाई हो गया है।
करामाती गणित–घुमाऊ फॉरमूले,
आज जीरो ही हवाई हो गया है।[3]

---

[1] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा – शेष–अशेष (कविता खण्ड से)
[2] डॉ. उपेन्द्र विश्वास, ग्वालियर की हिन्दी काव्य परम्परा और विकास, पृष्ठ 68
[3] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा – शेष–अशेष (कविता खण्ड से)

एक अन्य गजल में भी आपने ऐसी ही भावनाएँ व्यक्त की हैं, आप लिखते हैं–

न्यूनतम को अधिकतम दिखाना चाहते हैं,
करके तोले भर मन भर गिनाना चाहते हैं।[1]

एक अन्य गजल में आपने तन–मन की स्वच्छता के साथ ही वैचारिक शुद्धता का भी आग्रह किया है। इस प्रेरक गजल में आप लिखते हैं –

बेशर्म कचरा आस–पास बिखरा बहुत है,
हर स्वप्न को स्वच्छ सतह दीजिये।
असफलताओं की पोट ढोए नहीं,
गत के साथ उन्हें भी तह कीजिये।[2]

डॉ. शर्मा की व्यंग्यात्मक गजलें हर छोटी बड़ी विद्रूपता पर तीक्ष्ण प्रहार करती हैं। कोरे भाषणों की चट्नी चाटनें वाले नेताओं पर प्रहार करते हुए आप लिखते हैं –

अफलातूनी बातें सुनते बहुत हो गया,
रोज कोई कहानी बुनते बहुत हो गया।
महँगाई दुर्दिन मुँह फाड़ रही अजगर सा,
अच्छे दिनों की बात तकते बहुत हो गया।
भीतर बाहर विषधर खड़े हुए फन ताने,
मधुर सुरीली महुअर बजते बहुत हो गया।[3]

---

[1] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा – शेष–अशेष (कविता खण्ड से)
[2] वही
[3] वही

इसी प्रकार की एक अन्य गजल में आज के कथित मठाधीशों पर कवि तीक्ष्ण प्रहार करते हुए लिखता है–

आकण्ठ भरा है जो वह भीतर से खाली,
बाहर चमचमाती चमक अन्दर से काली।
मैं तू या वह आज सभी बिकाऊ बन गये,
आदमी असहाय, तिजारत छल फरेब वाली।[1]

ऐसी आडम्बरपूर्ण, खोखली, दिखावटी परिस्थितियों में कवि सभी से गम्भीरता पूर्वक मनुष्य जीवन को महत्व देने का आग्रह करता है। बाणी का संयम, अहंकार, त्याग तथा निष्ठावान, कर्तव्यपरायणता से ही जिन्दगी को नये आयाम दिये जा सकते हैं।'' अन्तरपट खोलिये हुजूर शीर्षक गजल में कवि ने ऐसा ही आग्रह किया है–

जिन्दगी छोटी है पर कीमती,
इतनी हल्की न तोलिये हुजूर।
अहंकार का पहाड़ न बनाए,
बन्द अन्तरपट खोलिये हुजूर।
नये आयाम दें जिन्दगी को,
गढ़े मुर्दे न खखोलिये हुजूर।[2]

प्रस्तुत संग्रह में इस प्रकार की, इसी लहजे की और भी कुछ गजलें हैं जो वैचारिक दृष्टि से तथा अभिव्यंजना की कौशल की दृष्टि से, शिल्प तथा कथ्य की दृष्टि से अत्यन्त संपन्न मानी जा सकती हैं।

¼2½ ukVd %

---

[1] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा – शेष–अशेष (कविता खण्ड से)
[2] वही

vkneh dh ryk'k ¼,dkdh lxg 2003½ &

डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा के दस एकांकियों का संकलन 'आदमी की तलाश' सन् 2003 में प्रकाशित हुआ। डॉ. शर्मा ने संग्रह की भूमिका में लिखा है कि प्रायः ये सभी एकांकी मंचन को विशेष रूप से ध्यान में रखकर लिखे गये हैं। डॉ. शर्मा जब विद्यार्थी थे, तब आपकी नाटकों में भी एक अभिनेता के रूप में विशेष भूमिका रहा करती थी, विद्यार्थी जीवन में आपने यह अनुभव किया कि नाटकों में स्त्री पात्र की भूमिका के निर्वाह के लिये छात्राएँ तैयार नहीं होतीं और तब छात्र कलाकारों को ही नारी पात्रों की भूमिका का निर्वाह करना पड़ता था, इसी बड़ी कठिनाई को ध्यान में रखकर डॉ. शर्मा ने प्रयास किया है कि जहाँ तक संभव हो किसी नाटक में स्त्री पात्र की आवश्यकता ही न पड़े और यदि, किसी एकांकी में उसकी अनिवार्यता बाध्यकारी ही हो तो ऐसे किसी स्त्री पात्र को, उसमें स्थान मिले इसका अभिनय करने में किसी छात्रा को कोई हिचक न हो, इसी विचार दृष्टि से आपने प्रस्तुत एकांकियों में आवश्यकता पड़ने पर माँ अथवा बहन के आदर्श स्वरूप को ही स्थान दिया है। प्रस्तुत संग्रह में निमंत्रण, पुनर्दीक्षा, गोद, विध्वन्स और निर्माण, आदमी की तलाश, कोहरा, टूटते घेरे, पक्का इरादा, काली छाया तथा नई आँखें शीर्षक दस एकांकी संकलित हैं। इन एकांकियों के संबंध में डॉ. चन्द्रमोहन मजेजी लिखते हैं– ''नाटककार की स्पष्ट मान्यता है कि मानव शरीर मात्र धारण करने से ही हम मानव नहीं हो जाते, मानव बनने के लिये मनुष्यता की अनिवार्य आवश्यकता है, जिसका आज सर्वत्र ह्रास देखने को मिलता है, डॉ. शर्मा के ये सभी नाटक उच्च मानवीय मूल्यों की पुर्नस्थापना के लिये व्यग्र दिखाई पड़ते हैं। सदवृत्तियों का विकास कैसे हो ? यही लेखक की सबसे बड़ी चिन्ता

है ? मानवीय मूल्यों से प्रतिबद्ध ये सभी एकांकी उद्देश्य पूर्ण हैं। और इनमें उच्चादर्शों की प्रेरण देने की क्षमता भी है।''[1]

प्रतिष्ठित रंगकर्मी एवं समीक्षक प्रो. प्रकाश दीक्षित प्रस्तुत एकांकी संग्रह के संबंध में लिखते हैं– ''डॉ. शर्मा के दस एकांकी इस संकलन में प्रस्तुत है और उन्होंने अपनी लेखकीय प्रस्तावना में इन्हें लिखे जाने की स्थितियाँ दर्शाई हैं। इससे इन रचनाओं के व्यवहारिक सन्दर्भों का पता चलता है यानि कि इन्हें मंचन की दृष्टि से ही लिखा गया है यों तो नाटक लेखन ही कठिन है, क्योंकि उसकी दृश्यात्मकता पुर्नरचना में उसके वाचिक प्रभाव और संप्रेषण के सूक्ष्मस्तरों का निर्वाह करना होता है, और लेखक को संवाद के द्वितीय ही नहीं, तृतीय पुरुष के भी अनुभव और संवेदनीयता में गुजरना होता है। कालावधि की संक्षिप्तता के कारण एकांकी लेखन में घटना, कार्यकलाप, पात्रों की सीमा होती है, और उसी के भीतर वांछित प्रभाव की सृष्टि लेखक की व्यवस्था होती है– यह चुनौती और अधिक समग्र हो जाती हैं। कृष्णमुरारी जी के ये एकांकी वस्तु और संरचना के इन सभी आग्रहों को सफलता पूर्वक पूरा करते हैं। शिल्प की दृष्टि से उनकी नोक, फलक व्यवहारिक अनुभव से दुरुस्त हुई है। उनकी कथा वस्तु जीवन से चुनी गयी है, और उनकी मूल्य प्रतिबद्धता की पृष्ठभूमि 'आदमी की तलाश' विस्तार में फैली हुई है, जो सामाजिकता की एक आनुषंगिक प्रेरण के तौर पर उद्देश्य लेखिकीय कर्म की स्वाभाविक पहचान है।''[2] प्रस्तुत संग्रह के एकांकियों का समीक्षात्मक अनुशीलन यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा।

---

[1] दैनिक सांध्य समाचार, ग्वालियर दि. 22 जनवरी 2014
[2] 'आदमी की तलाश', फ्लेप 1 व 2

'निमंत्रण' प्रस्तुत संग्रह का प्रथम एकांकी है, निमंत्रण में एकांकी कार ने देश के युवाओं में देश प्रेम की भावना को उज्जीवित करने का प्रयास किया है। राष्ट्र में युवा पीढ़ी को देश के लिये अपना सर्वस्व न्यौछावर करने की प्रेरणा देने वाला प्रस्तुत एकांकी ओज और पराक्रम से ओतप्रोत है, निमंत्रण में कुल सात पात्र है, जिनमें अजय की माँ, तथा सुशीला अजय की बहन मात्र दो स्त्री पात्र हैं, तीन दृश्यों में कथानक का ताना–बाना बुना गया है, अजय के विवाह की तैयारियाँ चल रही हैं, जिनमें अजय के पड़ौसी बसीर चाचा बड़–चढ़ कर सहयोग कर रहे हैं और तैयारियाँ अन्तिम चरण में हैं, तभी अचानक लैफ्टिनेन्ट अजय शर्मा को आवाज लगाकर तारवाला आकर तार सौंपता है, अजय के हाथों में तार देखकर माँ पूछती है– ''क्यों बेटा कैसा तार है, कहाँ से आया है ? अच्छा है तो न ? (सभी लोग अजय की मुख की और देखते है।) अजय एक क्षण निःशब्द रहकर उत्तर देता है– हाँ माँ अच्छा ही है। ठीक समय पर ही आ गया।'' यर्थात आर्मी हेडक्वार्टर से अजय को तत्काल उपस्थिति होने की सूचना का तार है। अजय की माँ को जब यह सब पता चलता है, तब अजय उसे सांत्वना देते हुए कहता है– ''माँ समझने की कोशिश करो। हमारी कश्मीर की पवित्र धरती पर दुश्मनों ने हमला बोल दिया है। मुझे एकदम वही पहुँचने का आदेश हुआ है।

यह संवाद ही नाटक का प्राण है, प्रस्तुत एकांकी में बशीर चाचा तथा जाफरी जैसे पात्र साम्प्रदायिक एकता एवं राष्ट्र भक्ति का उदाहरण पेश करते हैं, प्रस्तुत एकांकी मूलतः छत्रपति शिवाजी के वीर सेनानी नाना जी से प्रेरित होकर लिखा गया है, उन्होंने भी शिवाजी की विजय के लिये अपने सुपुत्र का विवाह स्थगित कर दिया था, डॉ. उपेन्द्र विश्वास ने प्रस्तुत एकांकी के संबंध में ठीक ही लिखा है– ''एकांकी

कार ने अपने संग्रह के प्रथम एकांकी 'निमंत्रण' में देश प्रेम की भावना को प्रगट करते हुए नवयुवकों में राष्ट्रीयता के भाव जाग्रत करने का सफल प्रयास किया है।''[1]

प्रसिद्ध विचारक एवं पत्रकार श्री प्रदीप नाहटा ने आदमी की तलाश के समस्त एकांकियों की अपने पत्र 'शुभ विचार' के दिनांक 26 अप्रैल 2004 से दिनांक 09 मई 2004 के अंक में लिखा है– ''कृतिकार की स्पष्ट मान्यता है कि मानव शरीर मात्र धारण करने से ही हम मानव नहीं हो जाते। मानव बनने के लिये मनुष्यता की अनिवार्य आवश्यकता है, जिसका आज सर्वत्र ह्रास देखने को मिलता है, सद्विचारों का विकास कैसे हो यही लेखक की सबसे बड़ी चिन्ता है, मानवीय मूल्यों से प्रतिबद्ध ये सभी एकांकी उद्देश्यपूर्ण है और इनमें उच्चादर्शों की प्रेरणा देने की भी क्षमता है।''[2] श्री नाहटा आगे लिखते हैं, समीक्ष्य एकांकियों में 'निमंत्रण' अजय की माँ अपनी समस्त खुशियों का देश प्रेम पर न्यौछावर कर देती है। 'पुनर्दीक्षा' के स्वामी जी आदर्शों की साक्षात प्रतिमा है। ''वे चाहते हैं कि व्यक्ति को बड़े से बड़े प्रलोभन से ऊपर उठकर ऊर्ध्वगमन ही करना चाहिए। 'गोद' में छोटी जात का गरीब वंशी ईमानदारी की मिशाल प्रस्तुत करता है।

'विध्वंस और निर्माण' में युवा पीढ़ी को सही दिशा देने वाली माँ है। 'आदमी की तलाश में' युवा वर्ग का भटकाव पीत पत्रकारिता, दिखावटी एवं स्वार्थ परायण नेतागिरी, शिक्षकों की कर्तव्य विमुखता तथा ऐसे ही अन्य वर्गों के व्यक्तियों की दुर्बलताओ ंपर कटाक्ष करते हुए एकांकीकार को एक श्रमिक में आज भी मानवता के दर्शन हो जाते हैं।

---

[1] दैनिक स्वदेश ग्वालियर, दि. 29 फरवरी 2004
[2] पाक्षिक शुभ विचार, उज्जैन, दि. 09 मई 2004 से अप्रैल 2004

एक निर्धन, अशिक्षित, मजदूर के रूप में उसे 'आदमी' मिल जाता है, जो लालच और हराम की कमाई से ऊपर उठा हुआ है। 'कोहरा' के डॉ. प्रफुल्ल की समस्या हर उस प्रोफेसर की समस्या है, जिसकी पत्नि शंकालू है। 'टूटते घेरे' में पैसे वालों की हृदय हीनता पर प्रहार किया गया है। 'पक्का इरादा' में पं. दयानन्द की सही मार्गदर्शन अशिक्षा के अंधकार को दूर करने के लिये प्रेरक है। नई आँखों में मानवीय मूल्यों में आस्था रखरने वाली प्रियंवदा है, जो अन्ध विश्वासों और कुरीतियों से मिलकर जीतती है, 'आदमी की तलाश में' प्रायः हर एकांकी में कोई न कोई पात्र 'आदमी की लाश' यात्रा का पड़ाव है, इन्हीं के माध्यम से नाटककार ने अपनी मूल्य प्रतिबद्धता को मूर्त रूप दिया है।''[1]

'आदमी की तलाश' एकांकियों के संवादों की भाषा, सरल भावानुकूल एवं प्रसंगानुकूल है, मंचन की दृष्टि से प्रस्तुत संग्रह के प्रायः सभी एकांकी सफल कहे जा सकते है, रंगमंच की कसौटी पर ये एकांकी खरे उतरते हैं, इनमें से कुछ एकांकियों का कुछ स्थानों पर सफल मंचन भी हो सका है, नाट्य कला मर्मज्ञ एवं प्रतिष्ठित समीक्षक प्रस्तुत संग्रह की समीक्षा करते हुए लिखते हैं– ''नाट्य मंचन में प्रकाश और ध्वनि का भी विशेष महत्व है। 'आदमी की तलाश' में देशकाल वातावरण, संस्कृति, मनःस्थिति, परिस्थिति के अनुसार ध्वनि और प्रकाश के अभिकल्पन के लिये निर्देशक को एकांकीकार ने स्वतंत्रता दे दी है और यह लेखक ने उचित ही किया है। शर्मा जी रंगमंच से छात्र जीवन से ही जुड़े रहने के कारण जानते हैं कि ध्वनि और प्रकाश अभिकल्पन की समक्ष निर्देशक में अधिक होती है, इसलिये इसमें उन्होंने हस्तक्षेप नहीं किया है। 'आदमी की तलाश' में एकांकी अभिनय और प्रदर्शन के लिये सम्यक् क्षमता रखते

[1] पाक्षिक शुभ विचार, उज्जैन दि. 09 मई 2004 से, 04 अप्रैल 2004

हैं, इसमें किसी प्रकार का सन्देह नहीं है। अंत में कह सकते हैं कि इस एकांकी संग्रह में वस्तु और अभिनय का मणिकांचन योग है, इसलिये ये पठनीय और दर्शनीय विशेषताएँ रखते हैं।''[1]

njkxk lkgc ¼ukVd] 2005½ &

'दरोगा साहब' डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा का पूर्ण कालिक नाटक है, जिसमें आज के कर्तव्य विमुख पुलिस दरोगा (पुलिस इंस्पेक्टर) का यथार्थ चरित्रांकन किया गया है, प्रस्तुत नाटक में एक पुलिस थाने में पदस्थ एक इस्पेक्टर की भृष्ट कार्य प्रणाली को उजागर करने का प्रयास किया है। लगभग ढाई दिन के सीमित समय में प्रस्तुत नाटक का लधु कथानक प्रायः पुलिस के एक ही थाने से संबद्ध रहता है। मंच पर बहुत कम घटित होकर अन्यत्र घटित घटनाओं की सूचनाओं के माध्यम से ही कथा वस्तु उत्कर्ष बिन्दु तक पहुँचती है। नाटक के प्रथम चार अंकों में एक ही पुलिस थाने के दृश्य है और अन्तिम पाँचवे अंक में नेताजी की बैठक (ड्राइंग रुम) का दृश्य है, यथा कथानक की चरम परणति होती है। इसी अंक में भृष्ट पुलिस इंस्पेक्टर को निलम्बन के आदेश के साथ ही विभागीय जाँच के आदेश प्राप्त होते हैं। इसी बिन्दु पर पहुँचकर नाटक समाप्त हो जाता है, यह छोटा कथानक सीधे–सीधे पाँच अंकों में विभक्त है, प्रथक् से छोटे–छोटे दृश्यों के न रहने से कथा प्रवाह कहीं टूट नहीं पाता। प्रस्तुत नाटक में पात्रों की भी संख्या सीमित हे, नाटक का मुख्य पात्र पुलिस इंस्पेक्टर है, जो भृष्टाचार में विशारद है इसका सहयोगी एस.आई. सिंह उसके विपरीत एक गम्भीर कर्तव्यनिष्ठ पुलिसकर्मी है। नाटक में सी.एस.पी. तथा एस.पी. दो अदृश्य आदर्श पात्र है। ठा. गुन्दे सिंह समाज सेवा का मुखौटा चढ़ाए भृष्ट नेताओं का

[1] मासिक साहित्य सागर, भोपाल, मई 2004, पृ. 33

प्रतिनिधित्व करता है नाटक में अन्य जो पात्र हैं वे भी नाटक के मुख्य पात्र दरोगा की चारित्रिक विशेषताओं को प्रगट करने वाले हैं। प्रस्तुत नाटक में नाटककार ने नेता, पत्रकार, दरोगा के साथ युवती, सकीला, ट्रक ड्रायवर मुनीम इत्यादि चरित्रों को यथार्थ रूप से उनकी योग्यता के साथ प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत नाटक के संबंध में नाट्य कला मर्मज्ञ प्रतिष्ठित समीक्षक डॉ. लक्ष्मण सहाय लिखते हैं– 'दरोगा' साहब की वस्तु जितनी कल प्रासंगिक थी, उतनी ही आज भी है और उतनी ही या उससे अधिक कल भी रहेगी। जो घटनाएँ नाटक के सामान्य पात्र अभिनेताओं के साथ घटित हुई है, वैसी ही तथा उससे भिन्न प्रकार की घटनाएँ आम आदमी के जीवन में घटित हो रही हैं और होती रहेंगी, इसलिये इस नाटक की आवश्यकता अधिक है। नाटकीय रंचना ने वस्तु को कलात्मक बना दिया है।''[1]

प्रस्तुत नाटक के संवाद संक्षिप्त, प्रभावशाली तथा उद्‌देश्य को संयुक्त ढंग से प्रस्तुत करने वाले हैं, नाटक की समीक्षा करते हुए प्रतिष्ठित विद्वान डॉ. स्वर्ण किरण लिखते हैं– 'पुलिस की संवेदन शून्यता, भृष्टाचारिता, कर्तव्यच्योतता नाटक का उपजीव्य है। 'जनसेवा सबसे बड़ी पूजा है', 'ईमानदारी सबसे बड़ा धर्म है' तख्ती लटकाने वाले पुलिस थाना में ईमानदार नवनियुक्त एस.आई. सिंह साहब थाना प्रभारी द्वारा हिकारत की नजर से देखे जाते हैं। व्यवसायी निर्मल को फंसाने वाली चालबाज युवती, शराबी म्यूजिक की दुकान चलाने वाले कल्लूमल, रिटायर्ड प्रो. शर्मा के लड़के जिसे नाहक गुण्डा समझकर फंसाया जाता है, पत्रकार सक्सेना, मुन्ना राजा सटोरिया पर व्यर्थ छापामारी, बैंक कर्मचारी, सकीला के घर चोरी, व्यापारी के मुनीम जिसका इकतालीस

[1] दैनिक 'छपते–छपते' कोलकाता, रविवार दि. 04 दिसम्बर 2005

हजार लुटवाकर थाना प्रभारी द्वारा बन्दर बांट और लीपा–पोती, ठा. गुन्दे सिंह (आई.एफ./ इन्टर फैल) आदि के सहारे, थाना प्रभारी दरोगा साहब की गिरावट को लेखक ने रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है, नाटक मंचीय है और लेखक ने अन्त में थाना प्रभारी का निलम्बन दिखाकर उनके साथ सहानुभूति ही दिखलाई है, ऐसे थाना प्रभारी का डिसमिसल उपयुक्त 'काव्योचित' न्याय होता है। लेखक की साधना और प्रस्तुति के सामने नतमस्तक होना पड़ता है।''[1]

प्रस्तुत नाटक के संवादों को डॉ. लक्ष्मण सहाय ने अत्यन्त सार्थक माना है आप लिखते हैं– ''संवाद नियोजन नाटककार शर्मा जी ने पात्र की सोच, वातावरण, सामाजिक विकराल समस्या के अनुकूल ही किया है, दरोगा साहब के पात्र सिंह, थाना मुन्शी, निर्मल कुमार, युवती कल्लूमल, मुनीम आदि के संवाद संक्षिप्त और प्रसंगानुकूल हैं तथा परिस्थिति–मनःस्थिति के अनुरुप भी है, किन्तु दरोगा के अधिकांश संवाद लम्बे हैं। संभवतः नाटककार शर्मा जी ने सोच समझकर ही लम्बे संवादों की संरचना की होगी, पर इन संवादों में से कुछ एक संवादों को छोटा तथा और पैना किया जा सकता था।''[2]

प्रस्तुत नाटक की समीक्षा डॉ. इकबाल अहमद मंसूरी (शास्त्री) ने मासिक 'भाग्य दर्पण' में विस्तृत रूप से प्रस्तुत की है। नाटक की स्वद्धेय बताते हुए आपने उसे एक सफल नाट्य कृति माना है। आप लिखते हैं– ''दरोगा साहब नाटक के माध्यम से नाटककार ने आधुनिक युग के भृष्ट पुलिस प्रशासन का यथार्थ रूप और सफेदपोस समाज सेवक नेता के साथ–साथ पथभृष्ट पत्रकार की भूमिका को समाज के

---

[1] साप्ताहिक 'प्रसन्न राघव' दि. 08 से 21 अप्रैल 2006 पटना (बिहार)
[2] मासिक लोकयज्ञ (बीड़) महाराष्ट्र, मार्च 2006, पृ. 14

समक्ष बड़ी ही मार्मिकता के साथ प्रस्तुत किया है। इस नाटक में लेखक ने यह स्पष्ट कर दिया है कि लोकतंत्र में पुलिस की क्या भूमिका है तथा भृष्ट नेताओं का किस प्रकार संरक्षण पुलिस एवं अपराधियों को प्राप्त है। इस नाटक के माध्यम से लेखक ने पुलिस की कार्यशैली का बारीकी के साथ उल्लेख करते हुए यह सिद्ध कर दिया है कि पुलिस जनता से धन उगाई करने हेतु किस तरह रस्सी का साँप बनाती है। गुण्डों, बदमाशों, अवैध कारोबारियों को किस तरह सह देती है और सज्जनों के साथ किस तरह अभद्र व्यवहार करती है यह सारा रहस्य इस नाटक के माध्यम से खोला गया है, यह पुस्तक युवा वर्ग को एक नई दिशा देगी तथा पुलिस प्रशासन के गाल पर गहरा तमाचा है।''[1]

हिंदी के वरिष्ठ कथाकार विष्णु प्रभाकर जी ने भी प्रस्तुत नाटक की प्रशंसा की है। आपने एक व्यक्तिगत पत्र में नाटक की रचना के लिये डॉ. शर्मा को लिखा था– ''आज की स्थिति का अच्छा खाका खींचा है आपने। मंच पर भी यह नाटक सफल होगा।''[2]

urkth ¼ukVd] 2007½ &

'नेताजी' ने डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा का दूसरा पूर्ण कालिक नाटक है, प्रस्तुत नाटक में डॉ. शर्मा ने आज की व्यवसाय का रूप ले चुकी दूषित राजनीति तथा पथभृष्ट नेताओं का यथार्थ प्रस्तुत करती हैं। समीक्ष्य नाटक में राजनेताओं के कलुषित गठजोड़, तिकड़मबाजी, जोड़–तोड़, रिश्वतखोरी, चरित्रहीनता, निम्न हथकण्डे तथा अन्यान्य दुष्वृत्तियों पर सीधा–साधा प्रहार करता है। नाटक के आरम्भ में 'दो शब्द' अन्तर्गत नाटककार ने अपना एक दोहा उद्घृत किया है, जो

---

[1] मासिक 'भाग्यदर्पण', खजुरिया, जिला खीरी (उ.प्र.), अप्रैल 2006 पृ. 26
[2] श्री विष्णु प्रभाकर (दिल्ली) दि. 12 दिसम्बर 2005 का पत्र

नाटक के प्रयोजन तथा संपूर्ण परिदृश्य को स्पष्ट रूप रेखांकित कर देता है, दोहा प्रस्तुत है–

बेरहमी से चर रहे, नेता सारा देश।
परिश्रमी भूखा मर रहा, कहीं न चिंता लेश।।

इसी क्रम में अपने इस आशय को निम्न पक्तियों में बिल्कुल स्पष्ट कर दिया है– ''सभी जानते हैं कि आज की राजनीति एक अत्यन्त लाभदायी व्यवसाय का रूप ले चुकी है। बिना पूँजी निवेश के, बिना उच्च शिक्षा प्राप्त किये और बिना मूल्य प्रतिबद्धता के जो व्यवसाय अत्यन्त सफलता पूर्वक तथा अत्यन्त सरलता से किया जा सके, आज उस व्यवसाय का नाम ही राजनीति है। यही एक ऐसा धन्धा है, जिससे जुड़ने पर लोग अनुपातहीन एवं संपत्ति अर्जित करने के साथ ही समाज में विशेष सम्मान भी पाते हैं। समाज ने उनका दबदबा भी रहता है, वे स्वयं सारे सुख भोगते हैं और उनकी संतानें भी गुलछर्रे उड़ाती हैं, जबकि परिश्रम पूर्वक पूरी ईमानदारी एवं निष्ठा से कार्य करने वाला आज दो वक्त की रोटी कठिनाई से जुटा पाता है, उच्च शिक्षित तथा चरित्रवान व्यक्तियों को समाज में आज कोई नहीं पूछता । बस यही पीड़ा प्रस्तुत नाटक की रचना की मूल्य प्रेरणा है।''[1]

नेताजी नाटक में आज के एक ऐसे ही व्यवसायी राजनेता का यथार्थपरक चरित्रांकन किया गया है। नाटककार ने स्पष्ट लिखा है, कि नाटक के सभी पात्र काल्पनिक है तथा नाटक में चित्रित घटनाएँ एवं सूचनाएँ, वास्तविक हैं, पर उन्हें किसी व्यक्ति विशेष से जोड़कर प्रस्तुत नहीं किया गया है, नाटक का मुख्य पात्र नेता है। मंच पर जो कुछ घटित होता है, वह सब कुछ नेता के चरित्र को उजागर करने के लिये

[1] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा, नेताजी – दो शब्द, पृ. 07

ही होता है, नाटक में पात्र संख्या सीमित है और मंच पर भी एक समय में प्रायः दो, तीन पात्रों से अधिक को उपस्थित होने की आवश्यकता नहीं पड़ती। प्रस्तुत नाटक का कथानक सीधे–सीधे पाँच अंकों में विभक्त है। बीच में छोटे–छोटे दृश्यों की योजना न होने से मुख्य तथा सरलता से उत्कर्ष की ओर बढ़ती रहती है। नाटक का संपूर्ण आयोजन नेताजी की बैठक तक ही सीमित है। अतः इस नाटक का बिना बार–बार सैट बदले सरलता से मंचन किया जा सकता है। नाटक के संवाद भी संक्षिप्त, सरल है, प्रसंग एवं पात्रानुकूल भी है। प्रस्तुत नाटक की समीक्षा करते हुये, प्रसिद्ध नाट्य समीक्षक डॉ. लक्ष्मण सहाय लिखते हैं– ''नाटककार ने 'नेताजी' का विस्तृत वस्तु–विन्यास पाँच अंकों में आधिकारिक तथा पताका–प्रकरी–रूप में किया है, जो आज के आम आदमी की राजनैतिक शोषण से उत्पन्न पीड़ा एवं तजन्य विकलांगता को जीवन्त वाणी देने में पूर्ण सफल है, यद्यपि 'नेताजी' में 'अंधेर नगरी', 'भारत दुर्दशा', या 'अन्धों का हाथी' जैसा हास्य–विनोद नहीं है, तथापि इसमें जो व्यंग्य है वो बहुत तीक्ष्ण हैं, आज ऐसे शल्य क्रियात्मक व्यंग्यों की ही आवश्यकता है। वर्तमान में नाट्य मंचन के लिये रंगमंच पर अनेक दृश्यों का विधान किया जाने लगा है, अनेक दृश्य बन्धु आज के नाटकों में देखे जाते हैं, 'नेताजी' ऐसे प्रयोगों से अछूता है, यहाँ नाटककार ने पाश्चात्य नाट्य सिद्धान्तों का निर्वाह सफलता पूर्वक किया है, 'नेताजी' में एक देश, एक काल और एक वातावरण – यानी संकलनत्रय का सफल प्रयोग हुआ है।''[1]

नेताजी नाटक की कथावस्तु तथा पात्रों आदि का सूत्रशैली में विश्लेषण करते हुए सुप्रतिष्ठित समीक्षक डॉ. स्वर्ण किरण लिखते हैं–

[1] 'साहित्य परिक्रमा' अक्टूबर से दिसम्बर 2007, पृ. 56

''यहाँ नेताजी के चरित्र का उद्‌घाटन, लेखक का लक्ष्य है। पूरा नाटक नेताजी की बैठक में संपन्न होता है, पात्रों की भीड़ नहीं है। एक साथ दो–तीन ही पात्र दिखलाई पड़ते हैं, प्रथम अंक में 'नेताजी' के पी.ए., मुन्शी बाबू से एक पत्रकार फोन पर समय लेते है। और फिर 'नेताजी' से साक्षात्कार लेते हैं– पता चलता है कि नेताजी दो बार मैट्रिक में फैल हो चुके हैं, दूसरे अंक में 'नव भू–चाल' पत्र के संपादक 'नेताजी' से बात–चीत करते हैं, नेताजी द्वारा तबादले में सहायता मिल सकती है, इसका पता उन्हें चलता है, तीसरे अंक में नेताजी, दरोगा जी के काम के लिये दो लाख, चढ़ावा माँगते हैं। सुल्तान सिंह अपने युवा पुत्र के साथ आए हैं– छोटी–मोटी नौकरी के लिये। साठ हजार की रकम दे चुके हैं, 'युवा लोक' के दो संघटक शिकायत लेकर पहुँचते हैं। निराश्रित महिला आश्रम के व्यवस्थापक रामदयालू दो निराश्रित कन्याओं के विवाह के अवसर पर 'नेताजी' से कन्यादान करवाना चाहते हैं, चौथे अंक में नाकेवाली ठेका शराब की दुकान से मुनीम जी का फोन है कि रंगदार कल्लू गुण्डागर्दी करता है। श्यामा से नेताजी ने शादी नहीं की है, पर वह अब रखैल के रूप में रहने को तैयार नहीं है। शेखर और आयकर अधिकारी गुप्ता आते हैं। 'नेताजी' के गोरख धन्धों की जाँच के लिये। पाँचवे अंक में 'नेताजी' अपने यहाँ पड़े छापे की खबर अखबार में पढ़कर झुंझला जाते हैं। 'धरालोक' पत्र के प्रतिनिधि आते हैं, इसी अंक में 'नेताजी' के लॉकर में दो करोड़ नकद पए गये हैं। दरोगा जी 'नेताजी' के अय्याश लड़के की शिकायत लेकर आते हैं। दो कॉल गर्ल के साथ साहब जादे ने जाम छलकाए हैं। सेठ बालकिशन के लड़के की वहीं रात में मृत्यु हो गयी। सी.एस.पी. खुद जाँच कर रहे हैं। नेता अपने

लड़के को हिरासत में देखने के लिये जाने को तैयार होता है और यहीं नाटक समाप्त हो जाता है।

वस्तुतः नाटक सफलता पूर्वक नेताजी के कारनामों का पर्दाफाश करता है, लेखक का रोचक ढंग से सारे ब्यौरे को रखना उसकी कुशलता का द्योतक है।''[1]

'नेताजी' नाटक के संवाद प्रभावशाली हैं, अयोध्या संवाद के संपादक श्री शरद जी ने नाटक के संवदों की प्रशंसा करते हुए लिखा है– 'नेताजी' के संवाद चुश्त–दुरुस्त, भाव विभोर प्रयोजन और पात्रों, परिस्थितियों के अनुकूल हैं, अधिकतर संवाद द्वन्द्वात्मक हैं। द्वन्द्वात्मकता नाटक का प्राणतत्व है। 'नेताजी' में संवादों द्वारा द्वन्द्व एक ओर पात्रों को उद्वेलित करता है और दूसरी ओर कथा को गति तथा जीवन्तता प्रदान करता है। साथ ही प्रेक्षक को अभिभूत भी करता है।''[2]

मासिक 'लोकयज्ञ' के संपादक डॉ. सोनवड़े राजेन्द्र (अध्यक्ष) ने भी 'नेताजी' नाटक की भूरि–भूरि प्रशंसा की है। आपने लिखा है– '''नेताजी' की भाषा सहज, विषय एवं पात्र, भाव तथा रंगानुकूल हैं, भाषा व्यंजक हैं तथा उसमें संप्रेषणीयता भी है। पात्रों के नैसर्गिक तथा आडम्बरयुक्त भावों–विचारों को व्यक्त करने की उसमें क्षमता है। व्यंग्य को अधिक धारदार बनाने तथा यथार्थ को मूर्तरूप देने वाली भाषा का ही नाटक में प्रयोग हुआ है।''[3]

प्रस्तुत नाटक को एक पूर्ण सफल नाट्य कृति बतलाते हुए डॉ. इकबाल अहमद मंसूरी ने लिखा है– ''आज की पठनशील, भृष्ट,

---

[1] 'साप्ताहिक प्रसन्न राघव', पटना (बिहार), पृ. 04
[2] अ'योध्या संवाद' – शेषांश, पृष्ठ, 07, दि. 30 अगस्त 2007 से 05 सितम्बर 2007
[3] मासिक 'लोकयज्ञ' – हिन्दी दिवस विशेषांक, सितम्बर–अक्टूबर, 2007, पृ. 22

स्वार्थी तथा षड्यंत्रकारी राजनीति तथा राजनेताओं का 'नेताजी' एक सजीव दर्पण हैं। यह सही है कि पुलिस आज के पेशेवर नेताओं के चरित्र को आधार बनाकर अनेक साहित्यकारों ने अनेक विधाओं में अब तक बहुत कुछ लिखा है, फिर भी इनके संबंध में जितना भी लिखा जाये, उतना थोड़ा ही है। इस दृष्टि से डॉ. शर्मा का यह प्रयास अत्यन्त सार्थक माना जायेगा।।''[1] प्रस्तुत नाटक का उत्तर प्रदेश के उरई तथा राजस्थान के जयपुर आदि कुछ स्थानों पर सफलता पूर्वक मंचन भी हो चुका।

'नेताजी' नाटक में लेखक ने किसी व्यक्ति विशेष को चिन्हित न करते हुए जो कटाक्ष किये हैं, वे आज की राजनीति के प्रचलित भृष्ट रूप को ही उजागर करने वाले हैं। नाटक के सभी पात्र अपने संवादों, अपने क्रियाकलापों, अपने हाव–भावों, संकेतों इत्यादि के माध्यम से आज की राजनीति के भृष्ट रूप को ही सामने लाते है, प्रस्तुत नाटक का पहला अंक इस दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है इस अंक में हिंदी 'टुडे न्यूज' का प्रतिनिधि 'नेताजी' ने स्वतंत्रता दिवस विशेषांक के लिये साक्षात्कार लेने उपस्थित होता है, पत्रकार ने पहले से समय ले रखा है और वह उपस्थित होते ही सामान्य औपचारिकताएँ पूर्ण करने के बाद 'नेताजी' से उनके व्यक्तिगत जीवन की जानकारी साथ ही उनके स्वतंत्रता संग्राम सेनानी होने की असलियत उगलवा लेता है और उनके सार्वजनिक जीवन के अन्य प्रमुख पक्षों को कुरेदकर नेता से सारी बातें कहलवा लेता है। इस इन्टरव्यू में नेता के दो बार हाईस्कूल परीक्षा में फेल होने, नकली स्वतंत्रता संग्राम सेनानी होने, स्वार्थपूर्ण न होने पर अलग से लोक संग्रह पार्टी बनाने, जातिवादी होने, केवल कुर्सी पाने की चिंता करने

[1] हिन्दी मासिक 'भाग्य दर्पण', भानपुरी, खजुरिया जिला लखीमपुर खीरी (उ.प्र.) अक्टूबर 2007, पृ. 23

इत्यादि के रहस्य खुलवा लेता है। 'पत्रकार' नेता से वर्तमान में प्रचलित आरक्षण नीति से संबंधित भी उनसे यथार्थ उगलवा लेता है। एक प्रश्न के उत्तर में नेता का आरक्षण के संबंध में यह स्वीकारोक्ति बड़े महत्व की है– ''मेरे विचार से केवल राजनीतिक लाभ के लिये ही इस नीति को अंतहीन महारक्षण का रूप दिया जा रहा है। जो देश के लिये घातक है।''[1] एक अन्य संवाद में भी नेता के मुख से जो बात कहलवाई गयी है वह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। नेता कहता है– ''वाल्मीक, कबीर, रैदास इत्यादि में प्रतिभा नहीं, तो क्या था ? महात्मा फुले, बाबा साहब अम्बेडकर आदि को कोई आरक्षण तो मिला नहीं था। वे सब आज अपनी प्रतिभा के कारण ही तो हमारे पूज्य हैं पर ये आरक्षण तो हमारी प्रतिभाओं को खिलने ही नहीं देता और दूसरी ओर इसके कारण देश की अनेक प्रतिभाओं के साथ अन्याय हो रहा है। यह सरासर अन्याय है। इस अन्याय की कीमत पर मैं इस नीति को समर्थन नहीं दे सकता।''[2]

इस प्रकार के अर्थपूर्ण संवाद नाटक के प्राण हैं। प्रतिष्ठित साहित्यकार एवं समीक्षक डॉ. परशुराम शुक्ल (बिरही) 'नेताजी' नाटक के संवादों की प्रशंसा करते हुए लिखते हैं– ''नाटक के संवाद सुगठित, स्वाभाविक और संप्रेशण–समर्थ हैं संवादों की भाषा में 'भोजपुरी' और बुन्देली का प्रश्न संयोजन है। इस सर्वथा अभिनेय नाटक को 'दरोगा साहब' पूरक कहा जा सकता है। ऐसा लगता है कि दोनों नाटक एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।''[3]

'नेताजी' नाटक के संबंध में अनेक वरिष्ठ साहित्यकारों ने भी ऐसे प्रशंसात्मक पत्र नाटककार को लिखकर नाटक के संबंध में अपनी

---

[1] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा, 'नेताजी', पृ. 24
[2] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा, 'नेताजी', पृ. 24
[3] नाटककार को लिखित, दिनांक 15.08.2017 का व्यक्तिगत–पत्र

प्रतिक्रिया दी है, ऐसे विद्वानों में डॉ. रामनाथ त्रिपाठी, डॉ. प्रतीक मिश्र, आचार्य भगवद दुबे, प्रो. स्वर्ण किरण, डॉ. कृष्ण चन्द्र वर्मा, डॉ. दयाशंकर शर्मा, डॉ. मालती शर्मा, प्रो. क्रान्ति, बालकवि बैरागी, डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय, 'विजय', डॉ. सीता किशोर खरे, हरिवष्णु अवस्थी, सैवाल सत्यार्थी, गिरि मोहन गुरु, डॉ. आर.वी. भण्डारकर, कृष्ण कुमार अष्ठाना, इत्यादि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। अनेक स्थानीय तथा देश के अन्य स्थानों के समाचार–पत्रों में भी प्रस्तुत नाटक के संबंध में अनेक विद्वानों द्वारा लिखित समीक्षाएँ प्रकाशित की हैं।

vkt dk Jo.k dqekj ¼ukVd 2009½ &

वर्तमान सामाजिक परिदृश्य में आज की अपने माता–पिता के प्रति दुर्व्यवहार करने वाली बिगडैल संतानों के पतनोनमुखी चरित्र, आचरण हीनता, सनातन मानवीय मूल्यों में अनास्था, कर्तव्यविमुखता, दुर्व्यसनों में लिप्तता, बेईमानी जैसी अनेक विद्रूपताएँ देखकर नाटककार डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा के हृदय में जो प्रतिक्रिया हुई है, उसी का परिणाम है, आज का श्रवण कुमार नाटक, नाटककार ने प्रस्तुत नाटक के आरम्भ में दो शब्द के अन्तर्गत नाटक की पृष्ठभूमि बतलाते हुए लिखा है– ''माता–पिता के अपूर्व आज्ञापालक का अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत करने वाले मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम जिस देश में हुए हों, जो देश एक आदर्श मातृ–पितृ भक्त के रूप में श्रवण कुमार को कभी भूल नहीं सकता, उसी देश में आज किसी वृद्ध माता–पिता को किसी वृद्धाश्रम में या कहीं अन्यत्र आश्रय लेना पड़े या उनके मन में ऐसा विचार ही उत्पन्न हो तो इसे देश का दुर्भाग्य ही कहा जायेगा। आज ऐसे अनेक माता–पिता हैं, जिन्हें अपने जीवन के अन्तिम पड़ाव पर पहुँचकर दो रोटिया भी सम्मान पूर्वक नहीं मिलती। उनके सपूतों द्वारा उन्हें शारीरिक–मानसिक यातनाएँ

दी जाती हैं। मानसिक क्लेश के अतिरिक्त उनका सारा कुछ छीन लिया जाता है। सुख–शान्ति से वंचित ऐसे अनेक माता–पिता दर–दर की ठोकरे खाते फिरते हैं।''[1]

आज का श्रवण कुमार नाटक इसी मूल संवेदना का अत्यन्त प्रभावशाली निदर्शन हैं, प्रस्तुत नाटक में तीन अंक और मात्र छः दृश्य हैं, कथावस्तु एक दम सीधी सपाट हैं, नाटक में कुल आठ–पात्र है, संपूर्ण नाटक में मुख्यतः श्रवण कुमार और उसकी पत्नि मोहिनी के चरित्रांकन द्वारा आज की मूल्य भृष्ट, कृतघ्न, कदाचारी, युवा पीढ़ी के द्वारा वृद्धजनों के प्रति विशेषतः माता–पिता के प्रति अनुत्तरदायी रवैऐ और उसके दृष्परिणामों को समाज के सम्मुख प्रस्तुत करने का ही प्रयास नाटककार द्वारा किया गया है। यही नाटक की मूल संवेदना है, यही नाटक की प्रेरणा है, यही नाटक का अभिप्रेत है और यहीं नाटक का संपूर्ण प्रयोजन हैं। वरिष्ठ साहित्यकार एवं प्रतिष्ठित समीक्षक डॉ. पूनम चन्द्र तिवारी ने प्रस्तुत नाटक की विस्तृत समीक्षा करते हुए लिखा है– ''आज का 'श्रवण कुमार' पढ़कर भारत के अतीत कालीन श्रवण कुमार की याद आती है, जो अपने बूढ़े और अन्धे माता–पिता को काँवर में बैठाकर स्वयं ही काँवर को काँधा देकर महीनों कच्ची, कटीली राहों पर चलकर उन्हें तीर्थों में स्नान कराने ले जाता था, परम पितृभक्त और निष्पृह सपूत माता का वह श्रवण और आज का यह श्रवण कुमार, प्रतीत होता है कि सांस्कृतिक पतन की काली छाया का प्रतिबिम्ब है। यह नाटक।''[2] डॉ. तिवारी आगे लिखते हैं – ''यह नाटक परिवार और गृहस्थ जीवन की इकाईयों की टूटन की आवाज है। माँ–बाप के प्रेम,

[1] आज का श्रवण कुमार – दो शब्द, पृ. 05
[2] दैनिक आचरण, साहित्य परिशिष्ट, दि. 16 अगस्त 2009

त्याग और बच्चों के प्रति उनके उत्सर्ग को नकारने की नई पीढ़ी की विद्रोही झलक है। भारतीय परिवार परम्परा के बिखरने का खुलासा है।''[1]

नाटक में प्रो. गुप्ता का पुत्र श्रवण कुमार और उसकी पत्नि मोहिनी संपूर्ण कथानक की धुरी है। श्रवण कुमार अपने पिता की अवज्ञा करता है, उन्हें अपमानित करता है, उनकी प्रतिष्ठा की आड़ में जगह–जगह चार सौ बीसी करता है, शराब पीता है, जुआ खेलता है, लोगों को अपने प्रतिष्ठित पिता सेवानिवृत्त प्रो. गुप्ता की आड़ में ठगी का शिकार बनाता है और ऐसे ही दुराचरण से अपने माता–पिता की प्रतिष्ठा को धूल में मिलाता है, पिता उसे समझाते है। माता भी उसे समझाने का प्रयास करती है, पर वह उनकी समझाइश को नकारते हुए उन्हे अपमानित करता है। उसकी पत्नि मोहिनी भी उसके ऐसे सभी काले कारनामों में उसको भरपूर सहयोग देती है तथा उसे ऐसे कार्यों की प्रेरणा भी देती है, श्रवण की माँ शारदा दुःखी होकर भी उसके अपराधों को क्षमा करती जाती हैं उसमें संवाद करते हुए प्रो. गुप्ता अग्रलिखित दोहा उद्घृत करते हैं –

नीयत समय पर खींचते, प्राणों को यम दूत।
तिल–तिल करके नित्य ही, लेता प्राण कपूत।।[2]

ऐसे ही उद्गार दोनों दुःखी माता–पिता आपस में बाते करते हुए नाटक में जहाँ–तहाँ व्यक्त करते हुए दिखलाई पड़ते हैं। शारदा का भाई राधेलाल भी अपने भान्जे को समझाने का और सही मार्ग पर लाने के लिये समझाइश देता है, किन्तु न श्रवण सुधरता है

---

[1] वही,
[2] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा, आज का श्रवण कुमार, पृष्ठ 19

और न उसकी पत्नि मोहिनी ही सुधरने के लिये तैयार है। ऐसे ही ..... .ऊहा पाहे मय कष्ट पूर्ण वातावरण में प्रो. गुप्ता तथा श्रवण की माँ शारदा अपने जीवन के दिन काट रहे हैं। नाटक के चरमोत्कर्ष पर पहुँचकर एक धोखाधड़ी के प्रकरण में पुलिस दरोगा श्रवण कुमार को चार सौ बीसी के आरोप में पकड़कर अपने साथ ले जाता है, यहीं नाटक का अन्त हो जाता है।

आलोच्य नाटक समस्या प्रधान नाटक है, संयुक्त परिवार तथा भारतीय समाज के सामाजिक मूल्यों की वर्तमान में त्रासद परिणति प्रस्तुत नाटक का मूलाधार है, इस संक्षिप्त किन्तु महत्वपूर्ण कथानक में जीवन के इसी विषाप्त पहलू पर केन्द्रित इस नाटक की रचना की है। डॉ. सत्यकेतु सांकृत्य, प्रस्तुत नाटक को वर्तमान सामाजिक संबंधों की सशक्त अभिव्यक्ति मानते हैं, नाटक की समीक्षा करते हुए आपने लिखा है– ''यह प्रसिद्ध नाटककार डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा की एक महत्वपूर्ण नाट्य कृति है। उत्तर आधुनिकवाद के इस काल में जहाँ भू–मण्डलीयकरण से आक्रान्त बाजारवाद के तहत अर्थ ही सब कुछ होता जा रहा है, भारतीय परिवेश में भी एक ही परिवार के सदस्यों, विशेषकर पिता–पुत्र के बीच पनपते अजीबों–गरीब पारिवारिक संबंधों की यह सशक्त अभिव्यक्ति है।

यह नाटक मध्य वित्तीय परिवार की एक ऐसी त्रासदी है, जिसमें घुटन है, बेचैनी है, दर्द है, पिता की वेदना है, ऐसे पिता की पीड़ा है जो बार–बार अपने नालायक बेटे से अपमानित होता है। यह हमारे सुसंस्कृत समाज की ऐसी समस्या है, जो शायद उसके पहले कभी गोचर नहीं हुई थी।....पिता–पुत्र के बीच उत्पन्न ऐसी खाई के मूल में आज की पीढ़ी के ऐसो–आराम प्रिय चरित्र और अन्यान्य दुर्गुणों को

ही बीज रूप में देखा जाता है, आज ऐसे उपेक्षित तिरस्कृत वृद्धजनों की इस गम्भीर समस्या की ओर देश और समाज का ध्यान आकृष्ट करने के लिये ही 'आज का श्रवण कुमार' नाटक की रचना की गयी है।''[1]

आज का श्रवण कुमार नाटक के संवाद बहुत गम्भीर हैं और एक पारिवारिक बिखराव को पूरी आकुलता के साथ व्यक्त करने में सक्षम है, संवादों में अद्‌भुत प्रखरता है, संक्षिप्तता है, क्षिप्रता है और कथानक को फलागम की ओर अग्रसर करने की सामर्थ्य भी है। नाटक के संवादों की प्रशंसा करते हुए डॉ. प्रमिला मजेजी लिखती हैं– ''नाटक के द्वितीय अंक– विशेष रूप से दृश्यों के संवादों की गम्भीरता नाटक को वैचारिकता की ओर उन्मुख करती है। नाटक में पारिवारिक बिखराव की अशोभनीयता के बीच से पारिवारिक नातों में सुरक्षित आत्मीयता, अपनत्व, रागात्मकता, और दायित्व बोध के भावों का अहसास राधेलाल जैसे पात्र दिलाते हैं। अलग रहते हुए भी संयुक्त परिवार की परम्परा और आवश्यकता के निर्वहन का पथ प्रस्तुत करते है। ऐसे पात्र। प्रस्तुत नाटक पढ़ने पर निम्नलिखित कुछ संवाद स्वतः मन पर अंकित हो जाते हैं, एवं कृति का मूल्यवान होने का प्रमाण सामने रखते हैं–

1– साहित्य में राष्ट्रीयता और मानवता के आदर्श ही सर्वोपरि ही रहने चाहिए।

2– वास्तव में राष्ट्रीय चरित्र का ह्रास समस्याओं की जड़ है। देश प्रेम, नैतिकता, भारतीय संस्कृत के उच्चादेश, जब तक ये सारे मूल्य हमारी बुनियादी शिक्षा में समाविष्ट नहीं हो जाते, तब तक राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण असंभव है।[2]

---

[1] दैनिक स्वदेश, ग्वालियर, दि. 31 जुलाई 2009

[2] त्रैमासिक लोकयज्ञ वीड (महाराष्ट्र) जुलाई से सितम्बर, 2010, पृ. 22

3– अखबार तो सेवा का पर्याय होना चाहिए, व्यवसाय का नहीं।[1]

4– औरों को कर्तव्यबोध कराने वालों के कर्तव्य भी असामान्य होते हैं। .....इसलिये उनकी जिम्मेदारियाँ सामान्य लोगों की अपेक्षा कम होती है।[2]

''आज का श्रवण कुमार' नाटक जीवन स्तर को उठाने के लिये जो सूत्र वाक्य देता है, उनकी तार्किकता उन्हें अधिक प्रभावात्मक बना देती है, अधिकार की अपेक्षा कर्तव्य और दायित्व की प्रेरणा देना भी नाटक का मूल प्रयोजन है।''[3]

हिंदी सेवी समाचार के संपादक वरिष्ठ साहित्यकार, अखिल विनय ने भी प्रस्तुत नाटक की प्रशंसा करते हुए लिखा है– ''पितृभक्ति के लिये जहाँश्रवण का नाम श्रद्धा के साथ लिया जाता है, वहीं आज वृद्ध माता–पिता की दुर्गति दृष्टिगोचर है, प्रस्तुत नाटक के तीन अंकों और मात्र छः दृश्यों में अपने सुन्दर चित्रांकन किया हैं।''[4]

पात्र एवं चरित्र–चित्रण की दृष्टि विशेषताएँ व्यंजित करने में पूरी तरह सफल रहते हैं। इन्हीं के बीच ''आज का श्रवण कुमार'' हैं, जो वर्तमान समाज में अमर्यादित आचरण के लिये अपने चारित्रिक दुर्गुणों को पूरी तरह प्रकट कर देता है, डॉ. पूनम चन्द्र तिवारी के शब्दों में आज का श्रवण कुमार परिवार के लिये शाप है, कलंक हैं। माता–पिता का शोषण करने वाला एक असांस्कृतिक एवं अनैतिक पात्र है।''[5]

---

[1] वही, पृ. 22
[2] वही, पृ. 22
[3] त्रैमासिक लोकयज्ञ वहीड (महाराष्ट्र) जुलाई से सितम्बर, 2010, पृ. 22
[4] हिन्दी सेवी समाचार, बोरीवली, (मुम्बई) दि. 01 अक्टूबर 2009
[5] दैनिक आचरण, साहित्य परिशिष्ट, दि. 16 अगस्त 2009

प्रस्तुत नाटक के माध्यम से नाटककार ने दिशाहीन भटकाव में जी रहे आज के युवाओं को इस नाटक के माध्यम से एक अनुकरणीय सन्देश दिया है। ''नाटक में श्रवण व मोहिनी के पथ–भृष्ट चरित्र का चित्रांकन सफलता पूर्वक किया गया है और किस प्रकार उनके गलत रवैए के कारण माता–पिता उनसे त्रस्त, परेशानी के शिकार होते हैं, इसका सजीव चित्रण, इस नाटक की विशेषता कही जायेगी। समीक्षक पत्रकार श्री गोवर्धन नाथ मेहता लिखते हैं– ''भारतीय संस्कृति में मातृ देवो भवः, पितृ देवा भवः कहकर माता–पिता को भगवान का दर्जा दिया गया है। युवा पीढ़ी भगवान राम, श्रवण कुमार, भगत पुण्डरीक के आदर्शों को अपने समक्ष रखे इसी में उसका परम कल्याण है। डॉ. शर्मा ने दिशाहीन भटकाव में जी रहे युवाओं को यही प्रकाशमय सन्देश इस नाटक के माध्यम से दिया है।''[1] श्री वृन्दावन त्रिपाठी रत्नेश (साहित्यकार एवं पत्रकार) अपने मासिक 'सुपर इण्डिया' में इस नाटक के संबंध में जो संक्षिप्त टिप्पणी देते हैं, वह भी अवलोकनीय है– ''आज बुजुर्ग माता–पिता एवं उनके आधुनिक परिवेश में पले–बढ़े बहू–बेटे के बीच वैचारिक असमानता बढ़ती जा रही है, न जाने कितने बुजुर्ग अपने ही घर से उपेक्षित दूर वृद्धाश्रम में रहने को मजबूर हैं। आज के ऐसे कलयुगी श्रवण कुमारों को आधार मानकर लिखा गया यह नाटक अपने आप में बेजोड़ है। लेखक का श्रम सराहनीय है।''[2]

नाट्य शिल्प की दृष्टि से भी प्रस्तुत नाटक उत्कृष्ट कहा जा सकता है ''नाटक का कथानक संक्षिप्त है, सीधा–सादा है तथा उसके प्रवाह में कहीं व्यवधान नहीं आता, नाटक की भाषा भी सरल है,

---

[1] साप्ताहिक निर्दलीय, भोपाल दि. 06 से 12 दिसम्बर 2009, पृ. 8
[2] मासिक 'सुपर इण्डिया' परियावां, प्रतापढ़ (उ.प्र.) अगस्त 2009, पृ. 2

तथा अपना आशय स्पष्ट करने में समर्थ है। 'अध्यात्म अमृत' के संपादक श्री कृष्ण चन्द्र टवानी ने भी अपने दीपावली विशेषांक, दिसंबर 2010 में प्रस्तुत नाटक की विस्तृत समीक्षा लिखते हुये, प्रस्तुत नाटक को श्रेष्ठ कृति माना है।''[1]

मंचन की दृष्टि से भी प्रस्तुत नाटक एक सफल नाट्य कृति है। बिना किसी विशेष ताम–झाम के प्रस्तुत नाटक का लगभग घण्टे–डेढ़ घण्टे में सफलता पूर्वक मंचन हो सकता है। प्रख्यात साहित्यकार एवं नाट्यकर्मी श्री शैवाल सत्यार्थी का इस संबंध में अभिमत प्रस्तुत है– ''उपेन्द्रनाथ अश्क के नाटकों की भाँति सफल मंचीय नाटक की सभी विशेषताएँ इसमें हैं, आज के घर–घर की यह कहानी सचमुच कलेजा हिला देने वाली है।''[2]

'आज का श्रवण कुमार' नाटक अनेक हिंदी सेवी विद्वानों द्वारा बहुत प्रशंसित हुआ है। प्रस्तुत नाटक की सराहना वरिष्ठ कथाकार डॉ. राम सिंह यादव, डॉ. त्रिभुवन नाथ शुक्ल, डॉ. कृष्ण चन्द्र वर्मा, पंडित गिरि मोहन गुरु, डॉ. ओंकार नाथ चतुर्वेदी, बाल कवि बैरागी, चन्द्रसेन विराट, डॉ. पी.सी. गोयल, डॉ. कृष्ण चन्द्र गोस्वामी, डॉ. स्वर्ण किरण, शत्रुघ्न प्रसाद, डॉ. परशुराम शुक्ल 'विरही', आचार्य भगवद दुबे, डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय, रामू भैया, डॉ. गार्गी शरण मिश्र मराल, डॉ. कृष्ण गोपाल मिश्र इत्यादि जैसे अनेक वरिष्ठ साहित्यकारों ने 'आज का श्रवण कुमार' नाटक के संबंध में नाटककार को व्यक्तिगत पत्र लिखकर प्रस्तुत नाटक को एक श्रेष्ठ नाटक कृति मान्य किया है। भाषा शैली,

---

[1] शोध समवेत, उज्जैन अक्टॅबर–दिसम्बर, 2009, पृ. 114
[2] नाटककार को लिखित, 20 अकटूबर 2009 के पत्र से

संवाद, उद्देश्य तथा रचना शिल्प की दृष्टि से एक श्रेष्ठ नाट्य कृति मान्य किया हैं

ohjkxuk jkuh nxkorh ¼ukVd] 2013½&

'वीरांगना रानी दुर्गावती' एक ऐतिहासिक नाटक है, नाटक के प्रायः सभी पात्र, घटनाएँ, स्थान आदि इतिहास संगत हैं, नाटक का क्लेवर यद्यपि छोटा है तथापि उसका उद्देश्य बहुत बड़ा है। नाटककार डॉ. शर्मा 1962 से 1965–66 तक जबलपुर में पदस्थ रहे हैं। वहाँ आपको वीरांगना दुर्गावती की समाधि पर पहुँचकर नमन करने के कई अवसर प्राप्त हुए थे। आपके मन में तभी से वीरांगना रानी दुर्गावती को अपनी किसी कृति के माध्यम से अपने श्रद्धा–सुमन अर्पित करने की भावना जाग्रत हुई, आपने वीरांगना दुर्गावती के प्रजावत्सलता, शासन निपुण्य, न्यायप्रियता, वीरता, पराक्रम, निर्भयता, धर्मप्रियता, रणकौशल, गुणी एवं विद्वानों के प्रति सम्मान भाव असहायों, निर्धनों, वृद्धो ंकी सहायता की भावना इत्यादि गुणों से अभिभूत होकर प्रस्तुत ऐतिहासिक नाटक का सृजन किया है। अप्रतिम देश प्रेम, शौर्य, साहस, पराक्रम, राष्ट्रीयता जैसे वीरांगना के अनेक आदर्श गुण हमारे देश के नव–निहालों, युवाओं, तथा देश वासियों को सदेव प्रेरणा और प्रकाश देते रहेंगे, रानी दुर्गावती के ऐसे ही प्रमुख गुणों को इस लघु कलेवरीय नाटक के माध्यम से सभी के समक्ष सजीव रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। नाटककार ने ऐतिहासिक सत्य को किसी भी प्रकार से कल्पना के रंगों से रंगकर धूमिल करने का प्रयास नहीं किया है। नाटककार नाटक के आरम्भ में दो शब्द के अन्तर्गत स्पष्ट शब्दों में लिखा है– ''नाटक का कथानक बुनने में कल्पना तत्व का यतिकिंचित प्रयोग हुआ है, किन्तु इससे इतिहास को आघात नहीं पहुँचने दिया गया है। प्रस्तुत नाटक की रचना में वृन्दावन

लाल वर्मा के उपन्यास 'रानी दुर्गावती' के अतिरिक्त गया प्रसाद सुल्लरे कृत गढ़ मण्डला के गौण राजा, व्यवहार राजेन्द्र सिंह त्रिपुरी का इतिहास, नगर निगम, जबलपुर द्वारा रानी दुर्गावती के चतुर्थ शताब्दी समारोह के अवसर पर प्रकाशित 'रानी दुर्गावती' आदि ग्रन्थों तथा जनश्रुतियों एवं लोक साहित्य इत्यादि की भी सहायता ली गयी है, जिससे वर्णित तथ्य इतिहास–विरुद्ध न जा सके।''[1]

नाटक का संक्षिप्त कथानक 'रानी दुर्गावती' के आस–पास ही पूरी तरह परिक्रमा देता है। दुर्गावती 'राठ' की राजकुमारी हैं, राठ के चन्देल राजा सालिवाहन की पुत्री हैं, उनकी माता की विशेष प्रिय संतान हैं। नाटक में किशोरी उनकी प्रिय सहेली है। दुर्गावती को बचपन से ही अस्त्र–शस्त्र का प्रशिक्षण मिला है। वह अनित्य सुन्दरी है, बलवती है तथा बुद्धिमती भी है। उनका सर संधान अचूक है, वह जब जंगल में मृगया के लिये गयीं तब एक खूंखार बाघ से उनका सामना हो गया उन्होंने अपने अचूक तीर से उसे घायल तो कर दिया, किन्तु वह घायल बाघ अत्यन्त हिंसक होकर एकदम उनकी ओर झपटा, तभी देवयोग से गढ़मण्डला के राजकुमार दलपति शाह भी अपने कुछ सैनिकों के साथ वहाँ पहुँच गये और उन्होंने उस उग्र सिंह को काल का कबल बनाकर यमलोक पहुँचा दिया। दुर्गावती ने अत्यन्त भावुक हृदय से दलपति शाह को अपना हृदय सौंप दिया। यद्यपि महारानी के माता–पिता उनके लिये सुयोग्य वर की खोज कर रहे थे, तथापि दलपति शाह के प्रति दुर्गावती का संर्पण एक आकस्मिक घटना के रूप में सामने आ जाता है और इस तरह वीरांगना रानी दुर्गावती गौंड़ राजवंश की महारानी बन जाती हैं। रानी दुर्गावती के पिता उनके इस प्रकार स्वयं पति के वरण से अप्रसन्न

[1] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा, वीरांगना रानी दुर्गावती, दो शब्द, पृ. 3

हैं, किन्तु वे कुछ कर नहीं सके दलपति शाह और दुर्गावती के विवाह के कथानक में सूच्य सामग्री के रूप में प्रस्तुत किया गया है, दुर्योग से दलपति शाह का असमय निधन हो जाता है, उनका इकलौता पुत्र वीरनारायण अल्प व्यस्क है, इसलिये गढ़मण्डला के अनुभवी दीवान अधार सिंह के सहयेाग से संपूर्ण राज–काज दुर्गावती ही संभालने लगती हैं। उधर साम्राज्यवादी मुगल सम्राट राज्य विस्तार की नीति के अन्तर्गत गढ़ मण्डल के राज्य को भी हड़पना चाहता है। वह रानी दुर्गावती के पास मुगल साम्राज्य की अधीनता स्वीकार करने के लिये सन्देश भेजता है, किन्तु महारानी दुर्गावती उसे ठुकरा देती है तब अकबर अपने दीवान मुजफ्फर खाँ, सूबेदार कमाल खाँ, सय्यद आसफ खाँ, इत्यादि को गढ़ मण्डला पर आक्रमण के लिये आदेशित करता है। वीरांगना दुर्गावती और उनके वीर सैनिक मुजफ्फर खाँ के साथ आई अकबर की आक्रमणकारी सेना से वीरता पूर्वक मुकाबला करते हैं। अनेक स्थलों पर दुर्गावती और उसके महावीर सैनिक अकबर की सेना को पीछे धकेल देते हैं, किन्तु अन्ततः उस बड़ी सेना के समक्ष अकबर की तोपवाहिनी सेना के सामने गढ़ मण्डल के थोड़े से सैनिक कमजोर पड़ने लगते हैं। जैसे–तैसे महारानी अपने पुत्र वीरनारायण को वहाँ से लेकर निकलकर चौरागढ़ भेज देती है इस बीच युद्धरत महारानी की आँख मे एक तीर लगता है, वे पहले से ही घायल हैं, इस मोर्च के समीप ही नरनयी नाले में असमय बाढ़ आ जाती है और बच निकलने के सारे मार्ग बन्द हो जाते हैं। महारानी बुरी तरह से घायल हैं। इस जर–जर अवस्था में ही वे अपने अत्यन्त विश्वस्त सहयोगी मंत्री अधार सिंह से कहती हैं– ''अधार सिंह जी – मेरे पास अब समय बहुत कम है। गौड़वाना के सम्मान और मेरी इज्जत की रक्षा के लिये अपनी

तलवार से मुझे वीरगति प्रदान कर दें।.....।''[1] रानी दुर्गावती जीवित या मृत किसी भी अवस्था में शत्रु के हाथों में नहीं लगना चाहती इसलिये वे अपने मंत्री को आदेशित करती हैं कि इसी बारह स्थल पर मेरे शव को घास–फूंस में रखकर भस्म कर दें, तब शत्रु को यहाँ पर राख की ढेरी ही मिलेगी, लेकिन अधार सिंह इस पाप कर्म के लिये तैयार नहीं होते, दुर्गावती उनसे फिर कहती है– ''मैं स्वतंत्र गौंड़वाना में ही स्वतंत्रता पूर्वक अन्तिम श्वास लेना चाहती हूँ, स्वदेश के लिये (कराह) ही यह दुर्गा अब तक जीवित रहीं। पर अब.....।'' तभी विद्रूप्त गति से अपनी कटार निकालकर वह अपने वक्ष में घौंप लेती है। और ''जय स्वदेश, जय मातृभूमि'' कहकर वहीं लुढ़क जाती हैं। इस प्रकार यहीं नाटक का पटाक्षेप हो जाता है।''[2]

नाटक के कथानक को चार अंकों में विभक्त किया गया है। कथानक में कोई ऐसा जटिल दृश्य नहीं है, जिसके मंचन में कोई विशेष कठिनाई उपस्थित हो, केवल दुर्गावती द्वारा अपने हाथ से स्वयं के वक्ष में कटार घौंपे जाने का अन्तिम दृश्य ही एक ऐसा दृश्य है, जिसकी प्रस्तुति में थोड़ी सावधानी की आवश्यकता है। कथानक को सीधे–सीधे कथा सूत्रों के अनुरूप चार अंकों में बांट दिया गया है। जिनमें अलग से दृश्य संयोजन नहीं है। एक प्रकार से नाटककार द्वारा किया गया यह अभिनय प्रयोग ही है।

प्रस्तुत नाटक के पात्रों का चरित्र चित्रण स्वाभाविक ढंग से हुआ है। नाटक के संवाद कहीं भी लम्बे नहीं हैं, सरल, सुबोध भाषा का प्रयोग हुआ है। एक–दो संवाद काव्यमय भी हैं, जो नाटक को और भी

---

[1] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा, वीरांगना रानी दुर्गावती, पृ. 31
[2] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा, वीरांगना रानी दुर्गावती, पृ. 32

प्रभावशाली बना देते हैं, महारानी दुर्गावती युद्ध से अपने पुत्र को अलग रहने के लिये जब कहती हैं, तब वह वीरता पूर्वक कहता है– ''यही तो समय है, आपके दूध का और अपनी धरती माँ के ऋण को चुकाने का। मैं जब छोटा था, तब आपने एक कविता सुनाई थी–

सबके लिये जिये जो वह जीवन है,
सबके लिये मरे जो वह जीवन है।
साँस–साँस अर्पित जिसकी देश को,
भले जिये पल–दो पल वह जीवन है।

तभी से जीवन का अर्थ हमारी समझ में बस यहीं है कि जननी और जन्म भूमि से बड़ा कुछ भी नहीं है। हम भी शत्रु से युद्ध अवश्य करेंगे।''[1]

ऐसे संवाद नाटक की रचना के उद्देश्य को पूरी तरह स्पष्ट कर देते हैं। प्रस्तुत नाटक में रानी दुर्गावती के कुशल प्रशासन में उनके प्रजा हितैशी होने के साथ ही सामाजिक समरसता तथा साम्प्रदायिक एकता के भी दर्शन होते हैं, जो आज की परिस्थितियों में सभी के लिये वरैण्य है।

साहित्यकार श्री हरिविष्णु अवस्थी प्रस्तुत नाटक के संबंध में लिखते हैं– ''ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि को दृष्टि मे रखते हुए सीमित पात्रों के माध्यम से राजकुमारी दुर्गावती के प्रकृति प्रेम, दयालुता, वीरता एवं गौंड़ नरेश दलपति शाह से प्रेम का वर्णन करते हुए उनके हरण, विवाह एवं राज्य संचालिका के रूप में राज्य की समस्त गतिविधियों का कुशलता पूर्वक संचालन जैसा वर्णन जिस कुशलता के साथ कलाकार

[1] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा, वीरांगना रानी दुर्गावती, पृ. 26

ने किया है वह प्रशंसनीय है। बाद के दृश्यों में अकबर के दरबार, उसके ध्येय, युद्ध नीति तथा राज्य विस्तार संबंधी विषयों की झांकी की प्रस्तुति में भी डॉ. शर्मा पूर्ण रूपेण सफल रहे हैं। अन्त में अकबर की सेना से दुर्गावती के युद्ध और बलिदान के दृश्य नाटक को पढ़ने अथवा देखने वालों को भावुकता के सागर में डुबोकर रख देते हैं। लगभग एक घण्टे का प्रस्तुतिकरण और नाटक की सधी हुई पठकथा पाठकों को प्रभावित करने में पूर्णतः सक्षम है।[1]

आलोच्य नाटक राष्ट्रीयता की भावना से ओत–प्रोत है, देश भक्ति के सन्देश को जन–जन तक पहुँचाना ही नाटककार का उद्‌देश्य है। नाटककार वीरांगना रानी दुर्गावती की गौरव गाथा को जन–मन तक प्रभावशाली ढंग से पहुँचाने का कार्य करता है। ''नाटककार के राष्ट्रीयता से परिपूर्ण मानवीय दृष्टिकोण को सिधौरगढ़ के किले के सभाकक्ष में उचित गरिमामय स्थान मिला है, महारानी दुर्गावती और महाराज दलपति शाह के संवादों से आदर्श शासन व्यवस्था का जो प्रारूप बनता है, वह हर स्तर पर प्रशासक के सही अर्थ का उद्‌घाटन अत्यन्त सरलता और सहजता से करता है।''[2]

वीरांगना रानी दुर्गावती निश्चय ही एक प्रेरणा प्रसंग नाटक हैं साहित्य मण्डल, श्रीनाथ द्वारा (राजस्थान) के तत्कालीन अध्यक्ष वरिष्ठ साहित्यकार श्री भगवती प्रसाद देवपुरा प्रस्तुत नाटक का मूल्यांकन करते हुए लिखते हैं– ''पूरा नाटक एक ही बैठक में पढ़ गया। आपने इस नाटिका में महारानी के महान चरित्र को एक वीरांगना के रूप में चित्रित कर हम सबके लिये एक आदर्श प्रस्तुत किया है। अकबर मुबारक खाँ,

---

[1] दैनिक स्वदेश, सतना, दि. 02 सितम्बर 2013

[2] 'षुभतारिका', उज्जैन, अप्रैल 2014 – स्व. श्री उर्मि कृष्ण, पृ. 15

आसफ खाँ, आदि की धूर्तता का कच्चा चिट्ठा भी इसमें है, यह नाटिका निश्चय ही एक अच्छे नाटक के रूप में प्रतिष्ठा अर्जित करेंगी।''[1]

नाटकों के संवादों में देश, काल तथा पात्रानुकूल, भाषा के प्रयोग की अनिवार्यता नाटक तथा नाटकों के संवादों को स्वाभाविक बनाती है। ऐसे संवादों का पाठकों तथा प्रेक्षकों के मन में विशेष प्रभाव देखने को मिलता है। इस दृष्टि से वीरांगना रानी दुर्गावती के संवाद पूर्णतः प्रभावशाली बन पड़े हैं। शिल्प की दृष्टि से जहाँ संवादों में चुश्ती एवं कसावट देखने को मिलती है वहीं वे पात्रानुकूल तथा देशानुकूल भी हैं। इस दृष्टि से प्रस्तुत नाटक में पात्रों के दो वर्ग दिखलाई पड़ते हैं। पहले वर्ग में वीरांगना दुर्गावती के सहयोगी पात्र हैं, जिनके संवादों में सहज सरल हिंदी की खड़ी बोली का रूप देखा जा सकता है। जबकि अकबर के पक्ष के पात्रों में उर्दू बहुल हिन्दुस्तानी का रूप देखने को मिलता है। अग्रलिखित संवाद देखें–

अकबर– ''अरे उस वाज बहादुर को कई बार हमारे लोगों ने समझाया कि हमारा सूबेदार बनना कबूल कर लेता, तो जिन्दगी भर मौज उड़ाता। अगर वह अब भी सिर झुकाकर हमारे दरबार में हाजिर हो जाये तो माँ बदौलत उसे मुआफ कर देंगे।''[2]

आलीजाह, मुगलिया, हुजूरे आली, जहाँपना, हुजूर, तकदीर हुक्म जैसे अनेक शब्दों का प्रयेाग अकबर पक्षीय पात्रों के संवादों में देखने को मिलता है।

---

[1] नाटककार को लिखित, दि. 23 अगस्त 2013 का व्यक्तिगत पत्र
[2] वीरांगना दुर्गावती, पृ. 20

ऐसे पात्रानुकूल संवादों के नाटक को इसी आधार पर एक श्रेष्ठ नाटक कहा है।[1] इसी क्रम में त्रैमासिक 'साहित्य परिक्रमा' की संपादक प्रो. क्रान्ति ने लिखा है– ''आपका हार्दिक अभिनन्दन कि आपने अपने इस नाटक में भारतीय इतिहास के एक स्वर्णिम पृष्ठ को छुआ और उसके साथ संपूर्ण न्याय किया। अंक एक के बाद, जहाँ अंक दो को आरम्भ किया है वहाँ बहुत अच्छा लगा। मंचन की दृष्टि से भी यह बहुत अच्छा प्रयोग है। पुस्तक मैंने एक ही बैठक में पढ़ ली। भाषा, भाव संवाद सभी पक्षों से आपका यह नाटक एक प्रशंसनीय कृति है।''[2]

छत्तीसगढ़ी राजभाषा आयोग के अध्यक्ष वरिष्ठ साहित्यकार श्री दानेष्वर शर्मा ने भी डॉ. शर्मा को लिखित एक ऐतिहासिक नाटक के रुचिकर लेखन के लिये बधाई दी है। 'अध्यात्म अमृत' के संपादक श्री कृष्ण चन्द्र टवाणी ने अपनी प्रशंसात्मक टिप्पणी में लिखा है– ''वीरांगना रानी दुर्गावती नाटक का सृजन कर आपने एक ऐतिहासिक कथा का मंचन योग्य बनाकर नाट्य प्रेमियों को एक अनुपम उपहार दिया है। वास्तव में नाटक की भाषा बहुत सरल तथा संवाद भी छोटे–छोटे हैं। रानी दुर्गावती का विषम परिस्थितियों में हिम्मत न हारना बहुत प्रेरक है। आपका यह उद्‌गार –

कठिन राह दुर्गम जटिल, काँटों की भरमार।
हिम्मत जो हारे नहीं, पहुँच सके उस पार।।

सभी की हिम्मत बँधाने वाला है। बालकों व युवाओं के लिये नाटक बहुत ही उपयोगी है।''[3]

---

[1] नाटककार को लिखित, 15 सितम्बर 2013 का पत्र
[2] नाटककार को लिखित, 25 अगस्त 2013 के पत्र से
[3] नाटककार को लिखित 27 अगस्त 2013 के पत्र से

ज्ञातव्य है कि वीरांगना रानी दुर्गावती नाटक का चन्द्रपुर (महाराष्ट्र) की सुप्रसिद्ध लेखिका डॉ. बानो सरताज ने 'बहादुर रानी दुर्गावती' शीर्षक से उर्दू भाषा में अनुवाद किया है, जो उनके नाट्य संकलन 'घर वापसी का तवील सफर' में अन्य कुछ नाटककारों के कुछ नाटकों के साथ प्रकाशित हुआ है।[1]

ik- vPNyky ¼vidkf'kr ukVd½&

डॉ. शर्मा का प्रस्तुत नाटक अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ है। यह भी एक व्यंग्य नाटक है। 'नाम बड़े और दर्शन थोरे' वाली कहावत को यह नाटक चरितार्थ करता है। डॉ. शर्मा ने जीवन का बहुमूल्य लम्बा समय एक प्राध्यापक के रूप में व्यतीत किया है, एक लम्बी समयावधि तक आप अनेक महाविद्यालयों में प्रोफेसर रहे हैं। उक्त कालावधि में आपके संपर्क में कर्तव्यनिष्ठ और कर्तव्यविमुख, ईमानदार और बेईमान, भृष्ट और पतित, उत्कृष्ट और निकृष्ट, चरित्रवान और चरित्रहीन सभी प्रकार के शिक्षक, प्राध्यापकों के साथ आपने कार्य किया है। डॉ. शर्मा भी नियमनिष्ठ, स्वाभिमानी, प्राध्यापक के रूप में पहचाने जाते रहे हैं। जो गलत है उसे आपने गलत ही कहा है और जो श्रेष्ठ है उसे हमेशा श्रेष्ठ ही माना है, अनुचित को आपने कभी स्वीकार नहीं किया। इस दृष्टि से प्रो. अच्छेलाल में आपने एक अत्यन्त भृष्ट, पतित, प्राध्यापक के क्रियाकलापों को उजागर करते हुए शिक्षा जगत में प्रदूषण फैलाने वाले लोगों से सभी को सावधान किया है, यहाँ प्रो. अच्छेलाल नाम प्रतीकात्मक है, कथानक प्रो. अच्छेलाल के नाम में ही केवल अच्छाई है, उसका आचरण तथा चरत्रि अच्छे के नितान्त प्रतिकूल है। सारे निम्नतम

[1] घर वापसी का तवील सफर, डॉ. बानो सरताज, वर्ष 2014, मॉर्उन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृ. 280 से 299

हथकण्डे वह जानता है, भले लोगों को आतंकित करना, सच्चे लोगों को लांछित करना उसका मुख्य कार्य है। शिष्यों, और शिष्याओं से अनुचित संबंध रखना, अनुचित कार्य कराना उसका स्वभाव है, राजनेताओं को पटाकर रखना, इसके लिये अनुचित साधन अपनाना और व्यक्तिगत लाभ के लिये किसी भी हद तक गिरना उसके चरित्र की प्रमुख विशेषता है। शिक्षा जगत में ऐसे कलंकित लोगों को कोई महत्व नहीं मिलना चाहिए, यही दर्शाना प्रस्तुत नाटक की मूल संवेदना है।

¼l½ leh{kk@ thouh ,oa fucU/k rFkk dgkfu;k & e'xu;uh ,d v/;;u ¼1967½ &

मृगनयनी एक अध्ययन पर लिखित प्रस्तुत समीक्षा कृति मूलतः विद्यार्थियों के उपयोगार्थ लिखी गयी थी। डॉ. वृन्दावन लाल वर्मा कृत का ऐतिहासिक उपन्यास 'मृगनयनी' बी.ए. द्वितीय वर्ष के लिये पाठ्यक्रम में जब स्वीकृत होकर आया, तब छात्रों के अध्ययनार्थ कोई छोटी सहायक पुस्तक उपलब्ध नहीं थी। 'मृगनयनी' पर बड़ी–बड़ी समीक्षा, क्रतियाँ ही उपलब्ध थीं उनका मूल्य भी अधिक था। यही सोचकर सहयोगी मित्रों का आग्रह मानकर छात्रों के हितार्थ इस लघु पुस्तक का डॉ. शर्मा ने सृजन किया। पुस्तक प्रकाशन गृह, भिण्ड द्वारा इसे 1976 में प्रकाशित किया गया और तब इसका मूल्य मात्र 1/– रुपया रखा गया, जिससे विद्यार्थियो ंको इसे खरीदने में किसी प्रकार की कठिनाई नहीं हुई।

प्रस्तुत कृति का साहित्यिक समीक्षा की कसौटी पर बहुत मूल्य न हो तथापि जिस उद्देश्य को लेकर यह लिखी गयी थी, उस उद्देश्य को यह पुस्तक निश्चय ही पूर्ण करती है। लेखक ने प्रस्तुत

पुस्तक में 'मृगनयनी' उपन्यास का सर्वप्रथम संक्षिप्त कथा सार प्रस्तुत किया है, उसके बाद औपन्यासिक तत्वों की दृष्टि से 'मृगनयनी' उपन्यास का संक्षेप में मूल्यांकन किया गया है। इसी क्रम में मृगनयनी उपन्यास की ऐतिहासिकता का विवेचन प्रस्तुत है, उसके पश्चात् 'मृगनयनी' उपन्यास के आधार पर उपन्यास में वर्णित तत्कालीन परिस्थितियाँ संक्षेप में बतलाई गयी हैं, देश, काल तथा परिस्थितियों के निरुपण के पश्चात् प्रमुख पुरुष पात्रों तथा प्रमुख स्त्री पात्रों का चरित्र–चित्रण विवेचित है। छात्रों के हित की दृष्टि से अन्य कुछ पात्रों के चरित्र संबंधी संकेत पुस्तक में प्रस्तुत किये गये हैं, पुस्तक के अन्तिम पृष्ठों में उपन्यास में प्रयुक्त 166 मुहावरों तथा कहावतों के अर्थ प्रस्तुत करते हुए उन मुहावरों तथा लोकोक्तियों का वाक्यों में प्रयोग भी प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक की भाषा शैली के संबंध में भी यही कहा जा सकता है कि लेखक ने छात्र हित को ध्यान में रखकर ही अत्यन्त, सहज, सरल तथा बोधगम्य भाषा का ही प्रयोग किया गया है। छोटे–छोटे सहज वाक्य तथा प्रभावपूर्ण भाषा पुस्तक को उपयोगी बनाते हैं। जैसा कि कहा गया है कि पुस्तक सर्वथा छात्रों के हितार्थ ही लिखी गयी है, किन्तु इसमें समीक्षा के भी सभी गुण विद्यमान हैं।

fgnh O;X; d 'kh"k i#"k i- gfj'kdj 'kek ¼2005½ &

पं. हरिशंकर शर्मा कविरत्न राष्ट्रभाषा हिंदी के उन्नायक तथा हिंदी साहित्य की अभिवृद्धि में बहुमूल्य योगदान देने वाले हिंदी के द्विवेदी युग के अन्तिम चरण के एक महान साहित्यकार थे। स्वयं को 'कलम का जादूगर' कहने वाले पद्मश्री पंडित हरिशंकर शर्मा, डॉ.

कृष्णमुरारी शर्मा के अनुसार 'कलम कुबेर' थे। डॉ. शर्मा लिखते हैं– ''अपनी नवोन्मवेशशालिनीमेधा और बहुमुखी प्रतिभा से उन्होंने जीवन पर्यन्त निष्काम योगी की भांति साहित्य साधना की, निर्लिप्त साधक की भांति पत्रकारिता की तथा निःस्वार्थ सेवक की भाँति समाज एवं देश की सेवा की वे सच्चे अर्थों में आत्म विश्वासी, मसिजीवी साहित्यकार थे, उन्होंने अपनी बहुमूल्य कृतियों से हिंदी साहित्य भण्डार को संपन्न बनाने के साथ ही हिंदी को अपने पैरों पर खड़े होने की सामर्थ्य प्रदान करने में योगदान दिया है।''[1]

प्रस्तुत कृति में प्रथम खण्ड में स्वर्गीय पंडित जी का जीवन वृत्तांत संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है, उनका जन्म तथा जन्म स्थान, वंश परिचय, पंडित जी का बाल्यकाल और शिक्षा–दीक्षा, विवाह और सन्ततियाँ, जीविकोपार्जन और जीवन संघर्ष, साहित्य गुरु आचार्य पद्मसिंह शर्मा तथा अन्य साहित्यिक मित्र, विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं से संबंध, उपाधियाँ और सम्मान आदि, सामाजिक नेता 'शुद्धि आन्दोलन', राजनीतिक जीवन और कारागार यात्रा प्रकृति एवं स्वभाव, धार्मिक एवं सांस्कृतिक मान्यताएँ, साहित्यिक मान्यताएँ तथा जीवन' के अन्तिम दिन और महाप्रयाण जैसे महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर युक्ति–युक्त प्रकाश डाला गया है। यह संपूर्ण जीवन वृत्तांत जीवनी लेखन–कला का एक श्रेष्ठ उदाहरण है। प्रस्तुत जीवनी खण्ड की भाषा कही भी दुर्बोध नहीं हो सकी है। लेखक ने अत्यन्त सरल एवं सहज भाषा का ही प्रयोग सर्वत्र किया है।

प्रस्तुत कृति का द्वितीय खण्ड 'व्यंग्यकार पंडित जी' हिंदी की व्यंग्य विद्या की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इस खण्ड के आरम्भ में

[1] हिन्दी व्यंग्य के शीर्ष पुरुष, स्व. पं. हरिशंकर शर्मा, निवेदन से

हिंदी की व्यंग्य परम्परा का सविस्तार उल्लेख करते हुए डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा ने व्यंग्यकार पंडित हरिशंकर शर्मा के राजनीतिक व्यंग्य, सामाजिक व्यंग्य तथा धर्मपरक व्यंग्यों का सम्यक् समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। पंडित हरिशंकर शर्मा ने साहित्य एवं साहित्यकारों से संबंधित व्यंग्य भी हिंदी साहित्य जगत को भेंट किये थे। ऐसे साहित्यिक व्यंग्यों का भी डॉ. शर्मा ने प्रस्तुत कृति में मूल्यांकन किया है।

पंडित हरिशंकर शर्मा की व्यंग्यात्मक कृतियों को केन्द्र में रखकर लिखित प्रस्तुत कृति का हिंदी जगत के अनेक वरिष्ठ साहित्यकारों ने ह्रदय से स्वागत किया ऐसे साहित्यकारों में सुप्रसिद्ध कथाकार श्री विष्णु प्रभाकर का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है, आपने 5 अगस्त सन् 2005 में प्रो. शर्मा को लिखित एक पत्र में लिखा था– ''सचमुच आपने इस पुस्तक की रचना करके बहुत ही पुनीत कार्य किया है, इसे पंडित जी का साहित्यिक श्राद्ध कह सकते हैं।''[1]

ऐसे अत्यन्त विद्वानों में डॉ. कृष्ण चन्द्र वर्मा, डॉ. दयाशंकर शर्मा, डॉ. परसुराम शुक्ल बिरही, इत्यादि विद्वानों के नाम उल्लेखनीय है। प्रस्तुत कृति की विस्तृत समीक्षा करते हुए प्रसिद्ध साहित्यकार प्रो. शत्रुघ्न दुबे लिखते हैं– ''राष्ट्रीयता के पवित्र एवं दीप्त भाव को बनाए रखने तथा जन–जन तक पहुँचाने का कार्य साहित्यकारों ने किया ऐसे ही महान साहित्यकारों में से एक थे स्वर्गीय पंडित हरिशंकर शर्मा। वे सच्चे अर्थों में कलम के सच्चे सिपाही थे, वे हिंदी साहित्य के द्विवेदी युग तथा वर्तमान युग को जोड़ने वाले एक ऐसे सेतु हैं, जिन्होंने हिंदी तथा भारत–भारती की अविस्मरणीय सेवा की है। वे कवि थे, निबन्धकार थे, कथाकार थे, प्रसन्नकार थे और थे आदर्श पत्रकार, डॉ. कृष्णमुरारी

[1] डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा को लिखित पत्र., दि. 5 अगस्त 2005

शर्मा ने पंडित जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का समीक्षात्मक करते हुए आपके व्यंग्य साहित्य को अत्यन्त उच्च स्तरीय माना है, डॉ. शर्मा की आलोच्य कृति में किसी सत्य और तथ्य की युक्तियुक्त समीक्षा प्रस्तुत की है। आज जब पुरानी पीढ़ी के ऐसे श्रेष्ठ रचनाकारों की घोर उपेक्षा हो रही है, तब डॉ. कृष्णमुरारी द्वारा उस पीढ़ी के एक श्रेष्ठ व्यंग्यकार समग्र व्यंग्य साहित्य की श्रेष्ठता को हिंदी जगत के समक्ष प्रस्तुत किया जाना निश्चय ही प्रशंसनीय है आज के व्यंग्यकारों के लिये यह कृति दीपाधार प्रस्तुत करती है।''[1] प्रो. दुबे आगे लिखते हैं– ''डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा मूलतः कवि हैं, इस कारण आपकी समीक्षाओं में भी काव्यात्मकता जहाँ–तहाँ दृष्टिगत होती है, भाषा सरल एवं सहज तथा बोधगम्य है।''[2]

fucU/kuh % ¼v i:dkf'kr fucU/k l:xg½ &

डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा मूलतः कवि हैं और छः नाट्य कृतियों के रचयिता होने के कारण वर्तमान काल के एक नाटककार के रूप में भी पहचाने जाते हैं। तथापि आपने जब–तब कुछ विषयों पर कुछ निबन्ध भी लिखे हैं, जिनमें से कुछ विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित भी हुए हैं। ऐसे निबन्धों में से चयनित लगभग बीस निबन्धों का संकलन 'निबन्धनी' अब तक प्रकाशित नहीं हो सका है। लेखक ने आत्म निवेदन के अन्तर्गत स्पष्ट शब्दों में स्वीकार किया है कि वह निबन्धकार नहीं है, फिर भी आवश्यकतानुसार कुछ निबन्ध लिख गये हैं, इन्हें एक स्थान पर सुरक्षित करने की दृष्टि से ही निबन्धनी संग्रह में संकलित किया गया है। इन निबन्धों में तुलसी का स्लिील श्रृंगार वर्णन, पदम् भूषण स्वामी सत्यमित्रानन्द गिरि की काव्य दृष्टि, 'रासो के शशिवृता विवाह' प्रसंग

[1] मासिक 'लोकयज्ञ' सितम्बर 2005, वीड (महाराष्ट्र) पृ. 19
[2] वही, पृ. 19

का काव्य सौन्दर्य हिंदी साहित्य का पूर्व, मध्यकाल, साहित्य और वर्तमान चुनौतियाँ, बाल साहित्य और नैतिक चेतना, साहित्य में आस्था का प्रश्न रस सिद्धि कवि पद्माकर संवाद– नाटक के प्राण, बहुत कुछ सीखा है, इनसे, साहित्य में प्रेष्णीयता का प्रश्न, कालजयी कथा, शिल्पी मुंशी प्रेमचन्द्र, काव्य में राष्ट्रीयता के ओजस्वी स्वर, भृष्टाचार : प्रजातंत्र के लिये सबसे खतरनाक नासूर, हिंदी – सभी की हिंदी, श्रृंगार काल के इकलौते राष्ट्रवादी कवि भूषण, आदर्श जीवन की आदर्श पाठशाला 'मानस' 'बरवैय रामायण', काव्य सौष्ठव, राष्ट्र कवि मैथलीशरण गुप्त की राष्ट्रवादी दृष्टि, मेरे पिता श्री पंडित रामलाल इत्यादि निबन्ध प्रस्तुत संग्रह में संकलित है।

निबन्धों में जिस भाषा शैली के दर्शन होते हैं, उसमें सम्प्रेष्णीयता है, स्पष्टता है, प्रवाहमयी सहज भाषा का सौन्दर्य है। संवाद, नाटक के प्राण शीर्षक निबन्ध की अग्रलिखित कुछ पक्तियाँ इस दृष्टि से अवलोकनीय हैं –

''गीत यदि गेय नहीं है, तो सामान्यतः उसे गीत नहीं माना जाता इसी प्रकार जो नाटक अभिनेय नहीं होता, उसे भी श्रेष्ठ नाटक नहीं माना जाता। अभिनेयता के माध्यम हैं, नाटक के जनसमुदाय तक पहुँचने में ही उसकी सार्थकता है और यह संप्रेषणीयता उसमें सजीव–श्रेष्ठ संवादों से ही आती है। अतः कह सकते हैं कि संवाद ही नाटक के प्राण होते हैं और श्रेष्ठ संवाद प्राणवान शब्दों के साचों में ढाले जाते हैं। ऐसे संवादों में अद्भुत संजीवनी होती है।''[1]

[1] भारतीय नाट्य रंग – प्रकाशक – अखिल भारतीय साहित्य परिषद न्याय, पृ. 149

डॉ. शर्मा के उपयुक्त प्रायः सभी निबन्ध देश और प्रदेश की अनेक प्रतिष्ठित पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। ऐसी पत्र–पत्रिकाओं में तुलसी दल, मध्य प्रदेश, सन्देश योजना, साहित्य परिक्रमा, इंगित, संकल्प रथ, संवाद, संवाद सृजन, साक्षात्कार, दैनिक भाकर, आचरण, इत्यादि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

og jkr ½ ¼vidkf'kr dgkuh lxg½ &

लेखक ने अब तक कुल तीन कहानियाँ (1) वह रात, (2) भैया यह क्या ? (3) भाई साहब, शीर्षकों से केवल तीन कहानियाँ तथा 'विभ्रम' शीर्षक से कुल इक्कीस, लधु कथाएँ लिखी हैं ये सभी रचनायेँ साठ के दशक की हैं। उसके बाद आपने कोई कहानी या लधु कथा नहीं लिखी। इन कहानियों में कहानीकार ने समाज में बढ़ते अमर्यादित आचरण, चरित्रहीनता नैतिकता के क्षरण इत्यादि सामाजिक विद्रूपताओं पर प्रहार करने का साहस भी सामाजिक सौहार्द के पोषण का प्रयास किया है।

'वह रात' कहानी में लेखक ने अत्यन्त भावुक हृदय से एक ऐसे कथानक को चुना है, जो एक यथार्थ घटना तथा दृश्य पर आधारित है। कहानीकार के सन् 1959 में अपने एक सहपाठी के अनुज के विवाह के अवसर पर बारात में जाना पड़ा था, बारात एक गाँव में गयी थी, उन दिनों जिस बारात के साथ कोई नर्तकी जाती थी, उसे बहुत प्रतिष्ठित माना जाता था, इस बारात के साथ भी एक नर्तकी गयी थी और जब उस नर्तकी ने एक अश्लील फूहड़ लोक गीत पर अपना वक्ष उभार–उभार कर नाचना आरम्भ किया तब बाराती और ग्रामीण दर्शक तो आनन्दित हो रहे थे, किन्तु कथाकार के हृदय में एक ऐसी

प्रतिक्रिया हो रही थी, जिसके कारण उसकी वह रात अविस्मरणीय बन गयी। उस नर्तन कार्यक्रम में नर्तकी का पिता सारंगी बजा रहा था और बड़ा भाई तबले पर थाप दे रहा था, पिता और भाई उस नृत्य के साक्षी थे। जब नृत्य का आनन्द ले रहे एक रसिक ने झूमते हुए कहा– 'अरे रमजानी! तेरी लोण्डिया तो गजब ढा रही है।'' इस वाक्य ने कहानीकार के हृदय में भूचाल उत्पन्न कर दिया और वह वहाँ से उठ आया, रात भर वह यह सोचता रहा कि इस भारत में क्या कोई पिता अपनी पुत्री को इस तरह दर्शकों के समक्ष अमर्यादित रूप में प्रस्तुत कर सकता है। बस यही इस कहानी की मूल संवेदना है। कहानी अत्यनत मर्मस्मर्शी है और इसमें कुछ संवाद भी प्रयुक्त हुए हैं जो कहानी को नाटकीय सजीवता प्रदान करते हैं।

दूसरी कहानी 'भैया यह क्या' में कहानीकार ने एक ऐसे भाई के विश्वासघात को उजागर किया है जो विधर्मी तो है ही साथ ही चरित्रभृष्ट भी है। वह जिस युवती को बहन मानता है जिससे राखी बंधवाता रहा हे, उसी के साथ जबरन मुँह काला करता है। यह पतन की चरम सीमा है। इसके विपरीत 'भाई साहब' शीर्षक कहानी में एक धर्म भाई अपनी एक मान्य बहन को हर संकट में जैसा सहारा देता है वह वर्तमान समाज में दुर्लभ है। तीनों कहानियाँ प्रेरक है, उद्‌देश्य प्रदान है तथा प्रभावशाली है। 'विभ्रम' शीर्षक लघु कथाओं में कथाकार ने कुछ ऐसे दृष्टांत प्रस्तुत किये हैं, जिनमें भृम की स्थिति निर्मित हो जाती है। ये छोटी–छोटी कहानियाँ शिल्प की दृष्टि से साधारण है, किन्तु पाठक को चमत्कृत तो करती रही है।

————————————